शर्मा शार्डवेयर
SHARMA HARDWARE
Sharma Gali, SJ Road
Athgaon, Guwahati-01
98648-02947

E-Paper : www.goodluckpublications.com, • www.vbslive.in

हिंदी दैनिक

गुवाहाटी, नई दिल्ली, शिमला और जम्मू से एकसाथ प्रकाशित

विकसित भारत समाचार

राष्ट्र निर्माण में प्रयत्नशील

वर्ष : 11 | अंक : 86 | गुवाहाटी | शुक्रवार, 25 अक्तूबर, 2024 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 8 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/56526

सड़क सुरक्षा में सुधार करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता : गडकरी पेज 2

विधानसभा उपचुनाव में सत्ता के चरम संघर्ष से विपक्ष का चरित्र उजागर : भाजपा पेज 3

कांग्रेस भ्रष्टाचार की जननी पार्टी है : भजनलाल शर्मा पेज 5

विश्वजीत मोरे ने ग्रीको रोमन स्पर्धा में जीता कांस्य, अंजली फाइनल में पेज 7

न्याय की देवी के आंखों से पट्टी हटाने पर बार असोसिएशन ने जताया विरोध, कहा-

यह तो एकतरफा फैसला है...

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट बार असोसिएशन ने सुप्रीम कोर्ट में न्याय की देवी और कोर्ट के प्रतीक चिह्न में *एकतरफा बदलाव* किए जाने पर आपत्ति जताई है। एससीबीए के अध्यक्ष कपिल सिब्बल की अध्यक्षता में कार्यकारी समिति ने सीजेआई डी. वाई. चंद्रचूड़ के नेतृत्व में शीर्ष अदालत प्रशासन की तरफ से किए गए *एकतरफा* बदलावों पर नाराजगी जाहिर की है। एससीबीए ने प्रस्तावित संग्रहालय का भी विरोध किया है और लाइब्रेरी और कैफे की मांग की है। बार ऐंड बेंच की रिपोर्ट के मुताबिक, सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन ने 22 अक्तूबर को पारित अपने प्रस्ताव में कहा कि सुप्रीम कोर्ट बार असोसिएशन की कार्यकारी समिति ने देखा है कि हाल ही में सुप्रीम कोर्ट की तरफ से एकतरफा रूप से कुछ आमूलचूल बदलाव किए गए हैं जैसे इसके प्रतीक चिह्न को बदलना, बार के साथ परामर्श के बिना न्याय की देवी की प्रतिमा को बदलना। हम न्याय के प्रशासन में समान हितधारक हैं, लेकिन जब इन परिवर्तनों का प्रस्ताव रखा गया था, तो उन्हें कभी भी हमारे ध्यान में नहीं लाया गया था। हम इन बदलावों के पीछे के औचित्य से पूरी तरह अनजान हैं। बार बॉडी ने कहा कि वह इन बदलावों के पीछे के तर्क को लेकर *अनजान* है। पिछले महीने की शुरुआत में, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने नई दिल्ली में जिला न्यायपालिका के दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में सुप्रीम कोर्ट के नए ध्वज और प्रतीक चिन्ह का अनावरण किया था। नए ध्वज में भारत की कानूनी और सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं: अशोक चक्र, सुप्रीम कोर्ट की इमारत और भारत का संविधान। सुप्रीम कोर्ट का नया झंडा नीले रंग का है। प्रतीक चिन्ह पर *भारत का सर्वोच्च न्यायालय* और *यतो धर्मस्ततो जयः* (देवनागरी लिपि में) अंकित है। सीजेआई चंद्रचूड़ ने सुप्रीम कोर्ट परिसर में *न्याय की देवी* की प्रतिमा का -शेष पृष्ठ दो पर

असम का कुम्हार समुदाय दो सौ साल पुरानी परंपरा को बचाने के लिए कर रहा है संघर्ष

नई दिल्ली/गुवाहाटी। दिवाली के नजदीक आते ही, जोरहाट जिले के निमाटी भितोर कोकिला कुमार गांव में कुम्हार समुदाय अपनी 200 साल पुरानी मिट्टी के बर्तन बनाने की परंपरा को जीवित रखने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है। सदियों पुराना यह शिल्प लंबे समय से गांव के लगभग 120 परिवारों की आजीविका का मुख्य साधन रहा है, लेकिन अब उन्हें बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। गांव की निवासी मिताली कलिता ने बताया कि समुदाय मिट्टी के बर्तन बनाने के काम में एक साथ काम करता है, जिसमें महिलाएं पारंपरिक रूप से मिट्टी के बर्तन बनाती हैं जबकि पुरुष मिट्टी इकट्ठा करने, मिट्टी के बर्तनों को जलाकर आकार देने और तैयार उत्पादों को बाजार में ले जाने का काम संभालते हैं। उन्होंने बताया कि गांव 150-200 सालों से इस परंपरा को -शेष पृष्ठ दो पर

दिपावली महोत्सव शुरू, भारतीय उत्पाद खरीदने की अपील

नई दिल्ली (हि.स.)। राजधानी दिल्ली सहित देशभर में अहोई अष्टमी पूजन से 10 दिवसीय दिवाली महोत्सव की शुरुआत गुरुवार से गई। अधिकांश बाजारों में उत्सव का माहौल देखा जा रहा है। भारतीय उत्पादों की भारी मांग के साथ दुकानदार भी बेहद उत्साहित हैं। व्यापारी इन 10 दिनों में ज्यादा -शेष पृष्ठ दो पर

जब तक जिंदा हूं आरक्षण और संविधान पर कोई आंच नहीं आने दूंगा : चिराग

चतरा (हि.स.)। चतरा विधानसभा से लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) उम्मीदवार जनार्दन पासवान की नामांकन सभा में गुरुवार को राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने कहा कि मैं अपने पिता स्वर्गीय रामविलास पासवान के संघर्षों की कसम खाकर कहता हूं कि जब तक चिराग पासवान जिंदा है तब तक आरक्षण और संविधान पर कोई आंच नहीं आएगी। हेमंत सरकार पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि जेएमएम कांग्रेस की सरकार ने झारखंड को खतरे में डाल दिया है। चिराग पासवान ने आरोप लगाते हुए कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की सरकार राज्य के गरीबों का पैसा लूटकर अपने घरों में भरने का काम कर -शेष पृष्ठ दो पर

ग्रामीण विकास मंत्रालय ने नगालैंड एवं मेघालय में सड़कें और पुल बनाने की मंजूरी दी

नई दिल्ली (हि.स.)। ग्रामीण विकास मंत्रालय ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में ग्रामीण संपर्क को मजबूत करने के उद्देश्य से नागालैंड में 55.89 किलोमीटर लंबी सड़क मंजूर की है, जिस पर 54.75 करोड़ रुपए का अनुमानित निवेश होगा। राज्य में 489.70 करोड़ रुपए के अनुमानित निवेश के साथ 506.69 किलोमीटर लंबी 40 अन्य सड़कें पहले ही मंजूर की जा चुकी हैं। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तीसरे चरण के तहत यह मंजूरी दी -शेष पृष्ठ दो पर

हिमंत विश्व शर्मा का बड़ा बयान, कहा-

असम में बांग्लादेश से आए मुस्लिमों की संख्या 20 प्रतिशत से बढ़कर 45 प्रतिशत हो गई

रांची/गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने एक बार फिर बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों और जनसंख्या असंतुलन को लेकर बड़ा बयान दिया है। झारखंड में एक चुनावी जनसभा के दौरान उन्होंने बताया कि कैसे घुसपैठियों ने असम की जनसंख्या को परिवर्तित कर दिया है। असम में मुसलमानों की आबादी लगभग दोगुनी हो चुकी है। हिमंत ने कहा कि कांग्रेस और झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) चाहती हैं झारखंड का भी यही हाल हो। मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि असम में मुसलमानों की संख्या 20 प्रतिशत भी नहीं थी। आज इनकी जनसंख्या 45 प्रतिशत है। ये असम का मुसलमान नहीं है, ये बांग्लादेश से आए मुस्लिम हैं। बांग्लादेश से आकर -शेष पृष्ठ दो पर

door graph
Premium Quality Hinges
S.S. Traders
Suppliers in : All kinds of Door Fittings Modular Kitchen & Accessories, etc.
D. Neog Path, Near Dona Planet ABC, G.S. Road, Guwahati - 05
97079-99344

सुप्रभात
भाग्य पुरुषार्थी के पीछे चलता है।
- आचार्य चाणक्य

दलितों का अनादर करती है कांग्रेस : मुख्यमंत्री हिमंत

रांची। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने गुरुवार को कांग्रेस पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि वह दलितों का अनादर करती है और उनके साथ तीसरे दर्जे के नागरिक जैसा व्यवहार करती है। शर्मा ने हाल में सामने आए एक वीडियो के संबंध में यह टिप्पणी की है, जिसमें प्रियंका गांधी वाद्रा के वायनाड लोकसभा क्षेत्र के लिए नामांकन दाखिल करने के दौरान कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे बाहर इंतजार करते हुए नजर आ रहे हैं। मुख्यमंत्री शर्मा ने रांची में संवाददाताओं से कहा कि प्रियंका गांधी वाद्रा के नामांकन दाखिल करने के दौरान मल्लिकार्जुन खड़गे के साथ जो व्यवहार किया गया है, लोगों ने उसे देखा है और उसके बाद दलितों के मुद्दे पर कांग्रेस की पोल खुल गई है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी नाटक करते हैं और दिखावा करते हैं कि वह दलितों का सम्मान करते हैं, लेकिन जिस तरह से खड़गे जी -शेष पृष्ठ दो पर

असम में आसमान छू रही आवश्यक खाद्य सामग्री की कीमतें

चावल 35 रुपए से बढ़कर 80 रुपए प्रति किलोग्राम हो गया है

गुवाहाटी। असम में चावल, दालें, खाना पकाने का तेल और सब्जियों जैसी जरूरी चीजों की कीमतों में भारी उछाल आया है। आम नागरिक इस बढ़ोतरी का खामियाजा भुगत रहे हैं, खाना पकाने के तेल की कीमतों में 30 से 40 रुपए प्रति लीटर की बढ़ोतरी हुई है, और रोजमर्रा की दूसरी जरूरी चीजों की कीमतों में भी इसी तरह का रुझान देखने को मिल रहा है। स्थानीय रिपोर्टों के अनुसार, चावल की कीमतें 35 रुपए से बढ़कर 80 रुपए प्रति किलोग्राम, खाद्य तेल 130 रुपए से बढ़कर 170 रुपए प्रति लीटर और दालें 80 रुपए से बढ़कर 100 रुपए प्रति किलोग्राम हो गई हैं। दैनिक भोजन के लिए जरूरी आलू और प्याज की कीमतें अब क्रमशः 30 से 40 रुपए प्रति किलोग्राम और 60 से 65 रुपए प्रति किलोग्राम हो गई हैं, जिससे घरेलू बजट पर और दबाव बढ़ गया है। आटे की कीमतों में भी काफी वृद्धि हुई है, जो 40 से 45 रुपए प्रति किलोग्राम के बीच है। कीमतों में उछाल के कारण कई परिवार अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, जिससे कुछ लोग बाजारों से खाली हाथ लौटने को मजबूर हैं। जबकि कार्रवाई की मांग जोर पकड़ रही है, असम सरकार, विशेष रूप से मंत्री रिहान दैमारी के नेतृत्व वाले आपूर्ति विभाग को इन बढ़ती कीमतों को नियंत्रित करने में विफल रहने के लिए व्यापक -शेष पृष्ठ दो पर

न्यूज गैलरी

चक्रवात दाना रात सचिवालय में ही रहेंगी ममता

कोलकाता। चक्रवाती तूफान *दाना* गुरुवार रात और शुक्रवार सुबह पश्चिम बंगाल और ओड़िशा में टकराने की संभावना है। इसके मद्देनजर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी लगातार इस पर नजर रख रही हैं। अधिकारियों के साथ बैठकें कर रही हैं। इस बीच, जानकारी मिल रही -शेष पृष्ठ दो पर

बड़े बदलाव लाने में सक्षम है ब्रिक्स : विदेश मंत्री

नई दिल्ली (हि.स.)। विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने कहा है कि ब्रिक्स विश्व व्यवस्था में बड़ा बदलाव लाने में सक्षम है। इसके लिए संगठन को स्वतंत्र प्रकृति के प्लेटफार्मों को मजबूत करना होगा और स्थापित संस्थानों एवं तंत्रों, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार लाना होगा। इसके अलावा अधिक उत्पादन केंद्र बनाकर वैश्विक अर्थव्यवस्था का लोकतंत्रीकरण करना होगा। डॉ. जयशंकर गुरुवार को रूस के शहर कजान में ब्रिक्स आउटरीच सत्र में प्रधानमंत्री के प्रतिनिधि -शेष पृष्ठ दो पर

हेमंत सरकार में पेपर लीक और भ्रष्टाचार का बोलबाला : हिमंत विश्व शर्मा

जमशेदपुर (हि.स.)। जमशेदपुर अंतर्गत बुद्ध मैदान में आयोजित भाजपा उम्मीदवारों के नामांकन सभा में गुरुवार को असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा शामिल हुए। इसमें शर्मा ने कहा कि जब भी मैं जमशेदपुर आता हूं, युवाओं से बात करता हूं। झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार में युवाओं का कोई भविष्य नहीं हैं। राज्य में सीजीएल समेत तमाम परीक्षाएं होती हैं, उसका पेपर पैसे लेकर बेच दिया जाता है। उन्होंने कहा कि हेमंत सरकार में पेपर लीक और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। जनता सब जानती है कि हेमंत सोरेन, बन्ना गुप्ता मिलकर झारखंड में परीक्षाओं को होने नहीं देते हैं। असम के मुख्यमंत्री हिमंत ने कहा कि झारखंड में भाजपा की सरकार बनते ही -शेष पृष्ठ दो पर

बारामूला के कोर्ट परिसर में ग्रेनेड फटा, पुलिसकर्मी घायल

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के बारामूला में ग्रेनेड ब्लास्ट हुआ है। धमाका मलखाना कोर्ट परिसर में हुआ है। घटना में एक पुलिसकर्मी घायल हो गया है। पुलिस के मुताबिक, ग्रेनेड गलती से फटा। हालात काबू में है। लोगों से अफवाहों पर ध्यान न देने की अपील की गई है। इस घटना से कुछ देर पहले त्राल में आतंकवादियों ने उत्तर प्रदेश के एक मजदूर को गोली मार दी, जिसमें वह घायल हो गया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि बिजनौर के रहने वाले शुभम कुमार को बटागुंड गांव में आतंकवादियों ने गोली मार दी। कुमार को गोली हाथ में लगी थी। उन्होंने बताया कि कुमार को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। पिछले एक हफ्ते में -शेष पृष्ठ दो पर

दीपोत्सव : 28 लाख दीयों से जगमग होंगे अयोध्या के 55 घाट

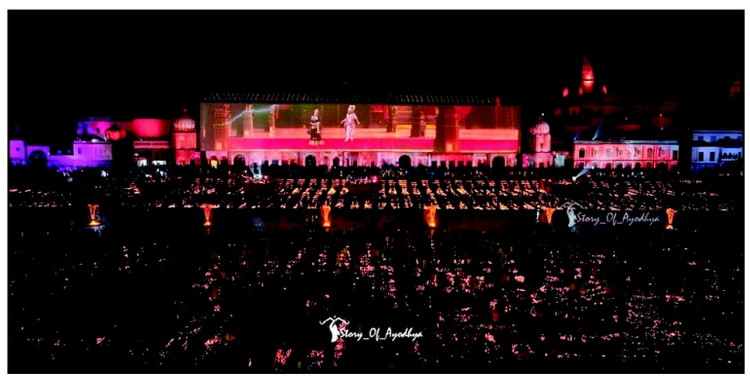

अयोध्या (हि.स.)। अयोध्या में इस वर्ष आठवां दीपोत्सव भव्य और दिव्य रूप से मनाया जाएगा। इस अवसर पर सरयू नदी के 55 घाटों पर 28 लाख दीयों को प्रज्वलित कर एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाने की तैयारी हो रही है। दीपोत्सव की तैयारियों के अंतर्गत डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय ने दीयों और स्वयंसेवकों की संख्या का निर्धारण कर लिया है, जिससे इस आयोजन को सफल बनाने के लिए बड़े पैमाने पर योजनाबद्ध कार्य हो सके। आयोजन के तहत सरयू नदी के 55 घाटों पर 28 लाख से अधिक दीये प्रज्वलित किए जाएंगे। राम की पैड़ी, चौधरी चरण सिंह घाट और भजन संध्या स्थल सहित अन्य सभी घाटोंपर दीयों को घाट समन्वयकों की निगरानी में बिछाया जाएगा। इसके अलावा, 14 सम्बद्ध महाविद्यालयों, 37 इंटरमीडिएट कॉलेजों और 40 स्वयंसेवी संस्थाओं से लगभग 30,000 स्वयंसेवक इस आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेंगे। घाटों पर दीयों की संख्या और स्वयंसेवकों का निर्धारण पहले ही कर लिया गया है। अवध विश्वविद्यालय ने घाटों पर प्रज्वलित किए जाने वाले दीयों और तैनात किए जाने वाले स्वयंसेवकों की संख्या का भी विस्तृत आंकड़ा जारी किया है। उदाहरण के लिए राम की पैड़ी के घाट एक पर 65,000 दीयों को जलाने के लिए 765 स्वयंसेवक तैनात होंगे जबकि घाट दो पर 38,000 दीयों के लिए 447 स्वयंसेवक जिम्मेदारी संभालेंगे। इसी प्रकार घाट तीन पर 48,000 दीयों के लिए 565 स्वयंसेवक और घाट चार पर 61,000 दीयों के लिए 718 स्वयंसेवक तैनात होंगे। सभी 55 घाटों पर इसी प्रकार दीयों की संख्या के अनुसार स्वयंसेवकों को तैनात किया जाएगा। आयोजन में विभिन्न कॉलेजों और संस्थाओं से जुड़े स्वयंसेवक -शेष पृष्ठ दो पर

मुसीबत में फंसे ट्रूडो, पार्टी सांसदों ने मांगा इस्तीफा

ओटावा (हि.स.)। भारत पर खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या का झूठा आरोप मढ़कर विवादों में घिरे कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो को अब अपनी ही पार्टी *लिबरल पार्टी ऑफ कनाडा* के सांसदों के गुस्से का सामना करना पड़ रहा है। बुधवार को पार्टी सांसदों की बंद कमरे में हुई बैठक में जस्टिन ट्रूडो के लिबरल पार्टी ऑफ कनाडा नेता के रूप में इस्तीफे की मांग उठी। इस बैठक में ट्रूडो भी मौजूद रहे। कनाडा के अंग्रेजी समाचार पत्र नेशनल पोस्ट की खबर के अनुसार, बैठक शुरू होते ही सभी के बीच एक पत्र बांटा गया। इसमें जस्टिन ट्रूडो से शीघ्र पद छोड़ने और नए नेतृत्व की प्रक्रिया शुरू करने का आह्वान किया गया। इसकी दो सांसदों ने पुष्टि भी की। हालांकि बैठक में ट्रूडो की उपलब्धियों की प्रशंसा भी कई। मगर कहा गया कि यह मांग मजबूरी में की गई है। वह पद छोड़ने के आह्वान पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दें। इस पत्र पर हस्ताक्षर नहीं करने वाले एक सांसद ने कहा कि मुझे नहीं लगता कि उनमें ऐसा करने की हिम्मत है। वे मजबूत इरादे वाले हैं। अखबार ने सूत्रों के हवाले से कहा है कि ट्रूडो बैठक के दौरान कम ही बोले। बैठक के -शेष पृष्ठ दो पर

CLASSIFIED

For all kinds of classified advertisements please contact

97070-14771
86382-00107

MURTI AVAILABLE

Available all kinds of Marble & White Metal Murties, Ganesh Laxmi, Radha Krishna, Bishnu-Laxmi, Hanuman, Maa Durga, Saraswati, Shivling, Nandi etc. **ARTCLE WORLD,** S-29, 2nd Floor, Shoppers Point, Fancy Bazar, Guwahati-01, **Ph. : 94350-48866, 94018-06952**

सड़क सुरक्षा में सुधार करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता : गडकरी

नई दिल्ली (हि.स.)। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने देश में हो रही सड़क दुर्घटनाओं पर चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि देश में हर साल लगभग 5 लाख दुर्घटनाएं होती हैं, जिसके परिणामस्वरूप कई मौतें होती है। इनमें से आधे से अधिक दुर्घटनाएं 18-36 वर्ष की आयु वर्ग में होती हैं। उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं के कारण होने वाला आर्थिक नुकसान देश के सकल घरेलू उत्पाद का 3 फीसदी होने का अनुमान है। ऐसे में सड़क सुरक्षा में सुधार करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है और इस मुद्दे को हल करने के लिए पहले से ही उपाय किए जा रहे हैं। नितिन गडकरी ने आज नई दिल्ली में ट्रैफिक इंफ्राटेक एक्सपो के 12वें संस्करण को संबोधित करते हुए यह बात कही । नितिन गडकरी ने आगे कहा कि उन्नत इंजीनियरिंग समाधानों, कानूनों के प्रवर्तन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाए बिना सड़क सुरक्षा हासिल नहीं की जा सकती। इसलिए सरकार ने तकनीकी समाधान विकसित करने में सहयोग करने के लिए निजी क्षेत्र से विशेषज्ञों को नियुक्त करने का निर्णय लिया है। नितिन गडकरी ने आज नई दिल्ली में ट्रैफिक इंफ्राटेक एक्सपो के 12वें संस्करण को संबोधित करते हुए यह बात कही। इस मौके पर नितिन गडकरी ने कहा कि टोल संग्रह विधियों को उन्नत करने की योजना पर भी काम चल रहा है। जिसमें सैटेलाइट टोल सिस्टम की खोज शामिल है, जिससे टोल संग्रह में दक्षता में सुधार होगा और पारदर्शिता सुनिश्चित होगी। सड़क सुरक्षा को बढ़ाने के लिए सरकार ने तकनीकी समाधान विकसित करने में सहयोग करने के लिए निजी क्षेत्र से विशेषज्ञों को नियुक्त करने का निर्णय लिया है। एक समर्पित विशेषज्ञ समिति स्टार्टअप और उद्योग के नेताओं के प्रस्तावों का मूल्यांकन करेगी। समिति को तीन महीने के भीतर अपने मूल्यांकन को अंतिम रूप देने का निर्देश दिया गया है। नितिन गडकरी ने आगे कहा कि उच्च गुणवत्ता मानकों को बनाए रखने के लिए सरकार की प्रतिबद्ध है। उन्होंने यहां आश्वस्त किया कि समाधान बड़ी या छोटी कंपनियों से आए, गुणवत्ता और मानकों से समझौता नहीं किया जाएगा।

80 से ज्यादा भारतीय उड़ानों को बम से उड़ाने की धमकी, सुरक्षा एजेंसियों ने शुरू की जांच

नई दिल्ली। विमानों को बम से उड़ाने की धमकी मिलने की सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। गुरुवार को एक बार फिर से 85 विमानों को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। इनमें एअर इंडिया के 20 विमान, इंडिगो एयरलाइन के 20, विस्तारा एयरलाइन के 20 और अकासा एयरलाइन की 25 उड़ानें शामिल हैं। पिछले 11 दिनों में इंडियन एयरलाइंस की 250 उड़ानों को इस तरह की धमकियां मिली हैं। पिछले कई दिनों से लगातार विमानों को बम से उड़ानें की धमकियां मिल रही है। गुरुवार को एक बार फिर से 85 उड़ानों को बम से उड़ाने की धमकी दी गई है। जिसमें एअर इंडिया, अकासा, इंडिगो की उड़ानें शामिल हैं। पुलिस ने मिली इन धमकियों की जांच शुरू कर दी है। दिल्ली पुलिस ने पिछले आठ दिनों में 90 से ज्यादा घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों को बम से उड़ाने की धमकी के संबंध में आठ अलग-अलग एफआईआर दर्ज की हैं। जिसे लेकर पुलिस ने कई लोगों को भी गिरफ्तार किया है। यही नहीं डीजीसीए की ओर से भी लगातार सामने आ रही इस तरह की घटनाओं को लेकर दिशा निर्देश जारी किए गए है। अकासा एयर के प्रवक्ता ने कहा कि आज उनकी कुछ उड़ानों को सुरक्षा अलर्ट मिला है। प्रवक्ता ने कहा कि अकासा एयर की आपताकालीन प्रतिक्रिया टीमें स्थिति की निगरानी कर रही हैं और सुरक्षा व नियामक अधिकारियों के साथ संपर्क में हैं। हम स्थानीय अधिकारियों के साथ समन्वय में सुरक्षा और सुरक्षा प्रक्रियाओं का पालन कर रहे हैं। वहीं, एयर इंडिया के एक अधिकारी ने कहा कि एयर इंडिया की कुछ उड़ानों को आज सोशल मीडिया पर सुरक्षा खतरों का सामना करना पड़ा। तय प्रोटोकॉल के अनुसार संबंधित अधिकारियों को तुरंत सूचित किया गया और सभी सुरक्षा प्रक्रियाओं का सख्ती से पालन किया गया। सुरक्षा और हमारे यात्रियों, चालक दल और विमानों की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसके अलावा गोवा के दोनों एयरपोर्ट को विमानों को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। बम की आशंका के चलते दोनों हवाई अड्डों को हाई अलर्ट पर रखा गया है। खतरों का आकलन करने के लिए दोनों हवाई अड्डों के लिए बम खतरा आकलन समिति (बीटीएसी) का गठन किया गया है।

अज्ञात शव

गुवाहाटी। महानगर के जीएमसीएच में बुधवार को एक अज्ञात व्यक्ति का शव बरामद किया गया। 35 वर्षीय उस व्यक्ति की मौत की खबर भांगागढ़ पुलिस को दे दी गई। अब तक किसी ने मृतक की पहचान नहीं की है। मृत व्यक्ति को जीएमसीएच के मुर्दाघर में पहचान के लिए रखा गया है।

हरिमुरा में भारी मात्रा में कफ सिरप जब्त

ग्वालपाड़ा (हिंस)। ग्वालपाड़ा जिले से पुलिस ने काफी मात्रा में प्रतिबंधित कफ सिरप जब्त किया है। पुलिस ने आज बताया कि पुलिस ने मरनई थाना क्षेत्र के हरिमुरा में छापा मारा और भारी मात्रा में कफ सिरप जब्त करने में कामयाब रही। जिला पुलिस उपाधीक्षक लिपिका बरुवा के नेतृत्व में कृष्णाई और मरनई थानों की मदद से की गई छापेमारी में पुलिस ने प्रतिबंधित कफ सिरप की 296 बोतलें जब्त कीं और तीन तस्करों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार तस्करों में कृष्णाई-नयापाड़ा के असलम हुसैन (22), रबीउल इस्लाम (27) और पश्चिम बंगाल के देबाशीष दत्ता (27) शामिल हैं।

शराब की तस्करी मामले में शामिल दो तस्कर गिरफ्तार

जोरहाट (हिंस)। जोरहाट जिले के मरियानी इलाके से पुलिस ने अवैध शराब की तस्करी मामले में शामिल दो तस्करों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गुरुवार को बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर मरियानी के गिब्बन आभारणय के पास चलाए गए अभियान के दौरान (एएस-03सुसी-3227) नंबर की बोलेरो वाहन जब्त किया गया। वाहन में अवैध तरीके से भारी मात्रा में शराब की तस्करी की जा रही थी। इस मामले में दो तस्करों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान टूटू दुअरा और संजीव ग्वाला के रूप में की गई है। वाहन में अवैध शराब टियक के लोहदगढ़ से नगालैंड के मोकोकचुंग जिले तक ले जाया जा रहा था। पुलिस इस संबंध में एक प्राथमिकी दर्ज कर गिरफ्तार दोनों आरोपियों से पूछताछ कर रही है। उधर ग्वालपाड़ा जिले के धूपधारा में पुलिस ने भारी मात्रा में हेरोइन के साथ चार तस्करों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने आज बताया कि यह छापामारी राष्ट्रीय राजमार्ग-17 पर एक वाहन (एएस-01एफपी-5457) पर की गई। इस दौरान 25 ग्राम हेरोइन जब्त करने और चार आपूर्तिकर्ताओं को गिरफ्तार करने में पुलिस सफल रही। जिले के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ऋतुराज दलै तथा पुलिस उपाधीक्षक आर्यन नाथ के नेतृत्व में धूपधारा थाना के सहयोग से यह अभियान चलाया गया।

No.DPRD/BTC/(Gen)-279/2024/12 *Dated Kokrajhar the 18th Oct., 2024*

EXTENSION OF TENDER NOTIFICATION

Due to some technical issues the NIT issued vide No. DPRD/BTC/(Gen)-279/2024/G4, dtd. the 23rd Sept., 2024 has been extended up to **25.10.2024** against the following works. The quotations shall be received in the office of the undersigned up to 2.00 pm on 25/10/2024 and will be opened on the same date and place at 2.30 pm in the presence of willing contractors or their authorized agents

Sl. No.	Name of Dev. Block	Name of Scheme	A/A Amount (in Rs. lakh)	Tender Amount (in Rs. lakh)	Earnest Money (ST, SC, OBC-1 % & Gen-2%)	Cost of Tender	Time for completion in days
1	Dolgaon Silamari	Const. of community Toilet with running water provision at Kopati weekly market	14.22912	14.28912	(ST, SC, OBC-1 % & Gen-2%)	@ 450/-	6 months
2	Kalaigaon	Const. of open Cultural Stage in Bananguri village ground	19.04762	19.04762	(ST, SC, OBC-1 % & Gen-'/%)	@ 580/	6 months
3	Udalguri	Const. of Crematorium ground at Paschim Nepalpara Rajahua	19.04809	19.04809	(ST, SC, OBC-1 % & Gen-2%)	@ 580/-	6 months

Details NIT may be seen in all working days in the office of the undersigned. Tender paper will be issued to the contractors or their authorized agent up to 02.00 PM on all working days upto 25-10-2024 in the office of the undersigned on payment of in the form of Banker cheque/ Demand draft of any nationalized Bank (Preferable SBI) duly pledged to the **Director, P&RD, BTC, Kokrajhar**. The Cost of tender (Non-Refundable) must be in the form of Demand Draft/ Banker Cheque of a Nationalized Bank drawn in favour of the Principal Secretary, BTC, Kokrajhar and payable at SBI, Kokrajhar to be deposited **0.03%.**

Sd/- Director,
Panchayat & Rural Development,
BTC, Kokrajhar

IPR(BTC)/C/2024-25/774

पृष्ठ एक का शेष

यह तो एकतरफा...

इभी अनावरण किया था जिसने *मूल लेडी जस्टिस* की जगह ली थी। नई प्रतिमा साड़ी पहने हुए है, आंखों पर पट्टी नहीं है। न्याय की देवी के एक हाथ में तराजू और दूसरे हाथ में भारतीय संविधान है। सुप्रीम कोर्ट बार असोसिएशन ने अपने प्रस्ताव में पूर्व जजों के पुस्तकालय में एक संग्रहालय का प्रस्ताव रखे जाने पर भी ऐतराज जताया है। बार ने कैफे और पुस्तकालय बनवाए जाने का अनुरोध किया था। प्रस्ताव में कहा गया है कि जबकि हमने बार के सदस्यों के लिए एक पुस्तकालय, कैफे कम लाउंज की मांग की थी क्योंकि वर्तमान कैफेटेरिया बार के सदस्यों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है। हम इस बात को लेकर चिंतित हैं कि पूर्व जजों के पुस्तकालय में प्रस्तावित संग्रहालय के खिलाफ हमारे द्वारा उठाई गई आपत्ति के बावजूद संग्रहालय के लिए काम शुरू हो गया है।

असम का कुम्हार...

संभाले हुए है। समुदाय को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि ब्रह्मपुत्र नदी के पास मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए उपयुक्त मिट्टी की उपलब्धता लगातार कम होती जा रही है। एक अन्य ग्रामीण, पबित्र कलिता ने अपने उत्पादों के लिए घटते बाजार के बारे में चिंता व्यक्त की, उन्होंने कहा कि यदि स्थिति बनी रहती है, तो उन्हें वैकल्पिक आजीविका खोजने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। यह भावना कई लोगों द्वारा साझा की जाती है जो अपने पारंपरिक पेशे के संभावित नुकसान के बारे में चिंतित हैं। मिट्टी के बर्तन बनाने की प्रक्रिया, जिसमें महिलाएं कच्चे बर्तनों को आकार देती हैं और पुरुष उन्हें आग पर पकाते हैं, श्रम-प्रधान है। अपने समर्पण के बावजूद, समुदाय के कई लोगों को खुद को बनाए रखने के लिए वैकल्पिक रोजगार की तलाश करनी पड़ी है। हिरोमाई कलिता ने सरकार से अपने शिल्प को संरक्षित करने के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करने का आग्रह किया, तथा अपने काम को जारी रखने और अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए पर्याप्त सुविधाओं की आवश्यकता पर बल दिया।

दिपावली महोत्सव...

कारोबार होने की उम्मीद कर रहे हैं। दिपावली त्योहार मनाने के प्रति इस वर्ष लोगों में एक नई उमंग देखी जा रही है। राजधानी दिल्ली सहित देशभर के बाजारों को विशेष रूप से सजाए जाने का काम भी शुरू हो गया है। इस वर्ष दिपावली पर देशभर में 4.25 लाख करोड़ रुपए के व्यापार होने की उम्मीद है, जो अपने आप में अबतक का दिपावली बिक्री का एक रिकॉर्ड होगा। वहीं, एक लाख करोड़ रुपए से अधिक के व्यापार का झटका दिपावली त्योहार की बिक्री एवं खरीद के जरिए देश के लोग चीन को देने जा रहे हैं। देशभर में व्यापारियों के शीर्ष संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री तथा चांदनी चौक से भाजपा के सांसद प्रवीन खंडेलवाल ने बताया कि देशभर के व्यापारियों ने इस त्योहार को बड़े पैमाने पर *अपनी दिवाली-भारतीय दिवाली* के रूप में मनाने का निर्णय लेते हुए ज्यादा से ज्यादा भारतीय सामान की बिक्री करने का निर्णय लिया है, ताकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का *वोकल फॉर लोकल* स्लोगन और अधिक मजबूत हो। खंडेलवाल ने बताया कि आज अहोई अष्टमी, 28 अक्तूबर को धनतेरस, 30 अक्तूबर को नर्क चतुर्दशी, 31 अक्तूबर को दिपावली, 2 नवंबर की गोवर्धन पूजा तथा 3 नवंबर को भाई दूज तक ये महोत्सव चलेगा, लेकिन उसके तुरंत बाद 5 नवंबर से 7 नवंबर तक छठ पूजा तथा 12 नवंबर को तुलसी विवाह तक त्यौहारों का यह सीजन चलने वाला है। कैट महामंत्री ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में चीनी उत्पादों के बहिष्कार की भावना मजबूत हुई है, इस साल यह और अधिक प्रभावी रूप में दिखाई दे रही है। उन्होंने व्यापारियों और ग्राहकों से अपील की है कि वे इस दिपावली केवल भारतीय उत्पादों की ही खरीद-बिक्री करें और भारतीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में अपना योगदान दें।

जब तक जिंदा हूं ...

रही है। इस सरकार ने राज्य में महिलाओं को असुरक्षित कर दिया है। युवाओं को पांच लाख नौकरी देने के नामपर पांच साल तक ठगा, इसलिए झारखंड को भ्रष्टाचार और लूट की सरकार से मुक्त करने के लिए एनडीए की सरकार बनानी जरूरी है। पासवान ने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार में राम मंदिर बना। जब केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी उन्होंने राम मंदिर के बारे में सोचा तक नहीं। पांच सौ सालों से हमारे रामलला धूप, धूल, गर्मी, बरसात सहते रहे लेकिन देश में भाजपा की सरकार बनते ही श्रीराम भक्तों को भव्य राम मंदिर देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

ग्रामीण विकास मंत्रालय ने ...

गई है। ग्रामीण विकास मंत्रालय ने गुरुवार को यह जानकारी दी। ग्रामीण विकास मंत्रालय के मुताबिक, इसके अतिरिक्त ग्रामीण विकास मत्रालय ने मेघालय मे 1,056 करोड़ 82 लाख रुपए के अनुमानित निवेश के साथ 782.155 किलोमीटर की 88 सड़कें और 55 पुल स्वीकृत किए हैं। इस पहल को जारी रखते हुए 1,056 करोड़ 82 लाख रुपए के अनुमानित निवेश के साथ 443 .26 किलोमीटर की 55 सड़कें स्वीकृत की गई हैं। इस योजना के तहत राज्य में 412 करोड़ 34 लाख रुपए पहले ही स्वीकृत किए जा चुके हैं। ग्रामीण विकास मंत्रालय के मुताबिक इस पहल से स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और बाजार जैसी आवश्यक सेवाओं तक पहुंच में सुधार होगा। ग्रामीण क्षेत्रों में कनेक्टिविटी बढ़ेगी, दूरदराज के गांवों और शहरी केंद्रों के बीच की खाई को पाटा जा सकेगा। क्षेत्र में आर्थिक विकास, व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा मिलेगा। रोजगार के अवसर पैदा होंगे और स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिलेगा। समृद्ध पूर्वोत्तर और विकसित भारत (विकसित भारत) के सरकार के दृष्टिकोण के साथ तालमेल बढ़ेगा।

असम में बांग्लादेश से ...

इन्होंने जनसंख्या असंतुलन किया है। यह काम झारखंड में भी शुरू हो चुका है। हिमंत ने कहा कि जेएमएम ने यह सोच रखा है कि बांग्लादेश से लोग आएंगे और हमें सरकार बनाने में मदद करेंगे। इसीलिए ये लोग घुसपैठियों के खिलाफ कुछ नहीं बोलते हैं। आज झारखंड की हालत ठीक नहीं है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी तो कानून के रास्ते से झारखंड में एनआरसी लागू करेंगे। एक-एक घुसपैठिये को भगाएंगे। ये सिद्धो कान्हू की धरती है, ये बिरसा मुंडा की धरती है और इस धरती को झारखंड के लोगों ने महान किया। गौरतलब है कि असम में घुसपैठियों की वजह से मूल संस्कृति खतरे में पड़ी है। असम में बांग्लादेशी घुसपैठियों पर हाईकोर्ट भी चिंता व्यक्त कर चुका है और इन घुसपैठियों द्वारा बनाए गए अवैध निर्माण भी हटाए गए हैं।

दलितों का अनादर ...

के साथ व्यवहार किया गया उससे यह स्पष्ट है कि कांग्रेस दलितों को अछूत और तीसरे दर्जे का नागरिक मानती है। असम के मुख्यमंत्री शर्मा झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सह-प्रभारी हैं। उन्होंने कहा कि खड़गे जी के साथ जो हुआ वह स्वत: स्पष्ट है। शर्मा ने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की आलोचना करते हुए कहा कि उन्हें जनता को जवाब देना होगा कि उन्हें जेल क्यों जाना पड़ा था। उन्होंने कहा कि यह बात तो साफ है कि वह झारखंड आंदोलन या स्वतंत्रता संग्राम के कारण जेल नहीं गए थे। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कथित भूमि घोटाले से जुड़े धन शोधन के मामले में इस साल 31 जनवरी को हेमंत सोरेन को गिरफ्तार किया था। झामुमो नेता ने बार-बार दावा किया है कि उन्हें भाजपा के इशारे पर जेल भेजा गया क्योंकि पार्टी ने ही उनके खिलाफ साजिश रची थी। सोरेन को पांच महीने बाद जमानत पर रिहा कर दिया गया था। झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए मतदान दो चरणों में 13 नवंबर और 20 नवंबर को होगा जबकि 23 नवंबर को नतीजे घोषित किए जाएंगे। चुनाव के पहले चरण के लिए 18 अक्तूबर से नामांकन प्रक्रिया शुरू हुई थी और यह 25 अक्तूबर को समाप्त होगी, जबकि दूसरे चरण के लिए नामांकन प्रक्रिया 22 अक्तूबर से शुरू हुई और 29 अक्तूबर तक जारी रहेगी। झारखंड विधानसभा चुनाव में कुल 2.60 करोड़ मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करने के पात्र हैं, जिनमें 1.13 लाख दिव्यांग, तृतीय लिंगी और 85 वर्ष से अधिक आयु के मतदाता हैं तथा 11.84 लाख मतदाता ऐसे हैं जो पहली बार मतदान करेंगे।

असम में आसमान...

आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। आम लोग अपनी निराशा व्यक्त कर रहे हैं और मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा से हस्तक्षेप करने और आवश्यक वस्तुओं की महंगाई पर लगाम लगाने की मांग कर रहे हैं। कई लोगों का मानना है कि सरकार का मौजूदा दृष्टिकोण अपर्याप्त है, कुछ निवासियों ने सख्त मूल्य विनियमन और अधिक सुसंगत बाजार निरीक्षणों का आग्रह किया है।

बड़े बदलाव लाने ...

के तौर पर शामिल हुए। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि भले दुनिया में बदलाव लाने वाली ताकतें मजबूत हुई हैं लेकिन कुछ लंबे समय से चले आ रहे मुद्दे और अधिक जटिल हो गए हैं। हम इस विरोधाभास को कैसे सुलझाएं इस पर विचार करने की जरूरत है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि परिवर्तन का लाभ उन लोगों तक पहुंचे जो वर्तमान में पीछे रह गए हैं। हमें इस बात पर विचार करना होगा कि हम एक अधिक न्यायसंगत वैश्विक व्यवस्था कैसे बना सकते हैं? विदेश मंत्री डॉ. जयशंकर ने इसके लिए ब्रिक्स में पांच प्रमुख बिंदु रखे। उन्होंने कहा कि विश्व व्यवस्था में बदलाव के लिए स्वतंत्र प्रकृति के प्लेटफार्मों को मजबूत करना और उनका विस्तार करना होगा। स्थापित संस्थानों और तंत्रों, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार लाना होगा। अधिक उत्पादन केंद्र बनाकर वैश्विक अर्थव्यवस्था का लोकतंत्रीकरण करना होगा और अनुभव एवं नई पहल को साझा करना चाहिए। वैश्विक बुनियादी ढांचे में औपनिवेशिक युग से विरासत में मिली विकृतियों को ठीक करना होगा। मध्य पूर्व/पश्चिम एशिया की स्थिति के बारे में भी उन्होंने भारत का पक्ष रखा और इस बात पर जोर दिया कि संघर्षों और तनावों को प्रभावी ढंग से संबोधित करना आज की विशेष आवश्यकता है। ब्रिक्स बैठक और हमारा आउटरीच सत्र एक संदेश है कि दुनिया लंबे समय से चली आ रही चुनौतियों पर नए सिरे से सोचने के लिए तैयार है।

हेमंत सरकार में ...

पहली कैबिनेट में सीजीएल घोटाले की सीबीआई से जांच कराने का काम करेगी। जेएमएम कांग्रेस की सरकार में जिसने भी पेपर पत्र लीक करने का महापाप किया है, उन सभी को भाजपा की सरकार सबक सिखाएगी। हम ऐसा सबक सिखाएंगे कि जेएमएम कांग्रेस की सरकार सीजीएल का नाम मुंह में लाने से डरेंगे। उन्होंने कहा कि आज जब मैं जमशेदपुर आया तो मुझसे एक पत्रकार ने पूछा कि आप जमशेदपुर में जीतेंगे तो मैंने कहा कि पिछले चुनाव में भाजपा, आजसू और सरयू राय सब अलग चुनाव लड़े थे, लेकिन इस बार सारी नदियां मिलकर समुद्र बन गईं हैं। हमारे साथ आजसू, लोजपा और जदयू तीनों का समर्थन है, इस बार हमारी जीत पक्की है। उन्होंने कहा कि झारखंड में हेमंत सरकार ने जल, जंगल जमीन को लूटने का काम किया है। राज्य के बालू तक को हेमंत सरकार ने लूटा है। राज्य में भाजपा की सरकार बनते ही बालू माफिया को खत्म कर सभी लोगों के लिए बालू कर दिया जाएगा। हेमंत सोरेन की सरकार सिर्फ भ्रष्टाचार में लिप्त है। चुनाव में हार के डर से महिलाओं को लालच देने के लिए आज मंईया सम्मान योनजा की बात कर रहे हैं। हेमंत सरकार में महिलाएं असुरक्षित हैं, पिछले पांच सालों में सबसे ज्यादा महिलाओं की हत्या हुई है। राज्य में महिलाओं का सम्मान लूटा गया है। आज झारखंड महिलाओं के खिलाफ हो रहे अपराध में देश में नंबर एक पर खड़ा है। हिमंत विश्व शर्मा ने भाजपा के पंचप्रण गिनाए। उन्होंने कहा कि भापजा सरकार बनते ही पहली कैबिनेट बैठक में गोगो दीदी योजना से महिलाओं को 2100 रुपए दिए जाएंगे। राज्य में खाली पदों को भरने का काम किया जाएगा। भाजपा सरकार एक साल में डेढ़ लाख नौकरी देगी। हेमंत सोरेन ने राज्य की जनता को सिर्फ लूटने का काम किया है। जनता को धोखा दिया है। उन्होंने कहा कि सीएम हेमंत सोरेन ने अपने पिता शिबू सोरेन की कसम खायी, उसके बाद भी राज्य की जनता से किए वादे को पूरा नहीं किया। पूरे देश में हेमंत सोरेन एक ही नेता हैं जिसने अपने बाप की कमस खाकर झूठ बोला। उन्होंने आगे कहा कि हेमंत सोरेन की सरकार में बांग्लादेशी घुसपैठियों को संरक्षण मिल रहा है। राज्य में घुसपैठिए, माफिया और दलालों की सरकार काम कर रही है। हेमंत सोरेन की सरकार झारखंड की भलाई नहीं चाहती है। राज्य में भाजपा की सरकार बनेगी तभी झारखंड का विकास होगा। इस दौरान भाजपा उम्मीदवार मिरा मुंडा पोटका विधानसभा, जमशेदपुर पूर्व से पूर्णिमा दास साहू, जुगसलाई से रामचंद्र सहिस और जमशेदपुर पश्चिम से जदयू प्रत्याशी सरयू राय ने नामांकन किया।

बारामूला के कोर्ट ...

कश्मीर में प्रवासी मजदूरों पर हमले का यह तीसरा मामला है। रविवार को गांदरबल जिले में एक निर्माण स्थल पर हुए आतंकी हमले में छह प्रवासी मजदूरों और एक स्थानीय चिकित्सक की मौत हो गई थी, जबकि 18 अक्तूबर को शोपियां जिले में आतंकवादियों ने बिहार के एक मजदूर की गोली मारकर हत्या कर दी थी। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला गांदरबल हमले में जान गंवाने वाले डॉ. शाहनवाज डार के घर पहुंचे और उनके परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने यह भी घोषणा की कि राज्य सरकार चिकित्सक के बेटे की सिविल सेवा की शिक्षा और प्रशिक्षण से संबंधित सभी खर्च वहन करेगी। उनका बेटा अधिकारी बनना चाहता है। अब्दुल्ला ने डॉ. डार के परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करने के लिए बडगाम के नाईदगाम गांव का दौरा किया। उन्होंने कहा कि डॉ. साहब के निधन से जो क्षति पहुंची है उसे पूरा नहीं किया जा सकता, लेकिन हम आपकी सहायता के लिए हर संभव प्रयास करेंगे।

दीपोत्सव : 28 लाख ...

पूरे उत्साह के साथ भागीदारी करेंगे और घाटों पर दीयों की उचित व्यवस्था सुनिश्चित करेंगे। दीपोत्सव के नोडल अधिकारी प्रो. संत शरण मिश्र ने बताया कि 30 अक्तूबर को आयोजित होने वाले इस दीपोत्सव की तैयारियां अपने अंतिम चरण में हैं। घाटों पर दीयों की खेप 24 अक्तूबर से पहुंचनी शुरू हो गई है और 25 अक्तूबर से दीयों को घाटों पर बिछाने का कार्य भी शुरू कर दिया जाएगा। स्वयंसेवकों का आईकार्ड वितरण भी शुरू हो गया है, जिसमें से 15,000 से अधिक आईकार्ड संस्थानों के पदाधिकारियों को वितरित किए जा चुके हैं। शुक्रवार तक सभी संस्थानों को आईकार्ड उपलब्ध करा दिए जाएंगे। मीडिया प्रभारी डॉ. विजयेन्दु चतुर्वेदी ने बताया कि 25 अक्तूबर को पूर्वाह्न 11:30 बजे स्वामी विवेकानंद सभागार में अंतिम प्रशिक्षण बैठक आयोजित की जाएगी। इस बैठक में जिला प्रशासन के साथ विश्वविद्यालय के समस्त संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, समन्वयक, प्राचार्य, तथा घाट प्रभारी उपस्थित रहेंगे। इस बैठक का उद्देश्य दीपोत्सव की अंतिम तैयारियों को सुनिश्चित करना है, ताकि 30 अक्तूबर को दीपोत्सव के दिन आयोजन को सुचारू रूप से संपन्न किया जा सके। सरयू नदी के 55 घाटों पर 28 लाख से अधिक दीयों को जलाने का लक्ष्य रखा गया है, जो अयोध्या को एक बार फिर से विश्व पटल पर स्थापित करेगा। यह दीपोत्सव न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह अयोध्या की सांस्कृतिक धरोहर को भी उजागर करता है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशन में इस आयोजन को दिव्य और भव्य बनाने की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं।

मुसीबत में फंसे ...

बाद कमरे से बाहर निकलते ही उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि पार्टी मजबूत और एकजुट है। बैठक से बाहर आए कई सांसदों ने कहा कि रचनात्मक चर्चा की गई। वह इस बारे में अधिक विवरण साझा नहीं करेंगे। नेशनल पोस्ट की खबर के अनुसार, न्यू ब्रंसविक सांसद वेन लॉन्ग ने खुलेतौर पर प्रधानमंत्री से इस्तीफा देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि बैठक में अच्छी चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि मैंने नौ वर्षों में ट्रूडो की पार्टी संसदों के बीच ईमानदार, स्पष्ट और सीधी मुलाकात नहीं देखी है। लॉन्ग ने कहा कि बैठक का विवरण इससे ज्यादा साझा करना उनके लिए मुश्किल है। वह गोपनीयता का सम्मान करते हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि प्रधानमंत्री ट्रूडो बैठक में उठी मांग पर विचार करेंगे। लॉन्ग ने कहा कि कनाडा की भलाई के लिए प्रधानमंत्री ट्रूडो को जाना ही होगा। यह बैठक पार्लियामेंट हिल पर हुई। परंपरा है कि यहां पर होने वाली बैठकों का विवरण सार्वजनिक रूप से साझा नहीं किया जाता। इसका मकसद यह होता है कि सभी खुलकर अपने विचार व्यक्त करें। इस बैठक में हिस्सा लेने वाले टोरंटो के सांसद नथानिएल एर्स्किन स्मिथ ने कहा कि ट्रूडो से इस्तीफा मांगने वाले का रुख दोतरफा था। ओंटारियो के सांसद चार्ल्स सूसा ने कहा कि प्रधानमंत्री मानते हैं कि उनके सामने बड़ी चुनौती है। ट्रूडो के सहयोगी यवन बेकर ने *जो कहा* उसे उसे साझा नहीं किया जा सकता। कैलगरी के सांसद जॉर्ज चहल ने कहा कि उनके नेता ट्रूडो हैं। वह आगे भी उनके नेता रहेंगे। वित्तमंत्री क्रिस्टिया फ्रीलैंड ने कहा कि बैठक में शानदार बातचीत हुई। उन्होंने तुरंत ब्याज दरों में आधा प्रतिशत की कटौती करने पर विचार करने को कहा है। अखबार की खबर के अनुसार, हजारों पार्टी समर्थकों को कोड रेड पिटीशन भेजकर उनसे तत्काल गुप्त मतदान करने का आग्रह किया गया है। इसमें कहा गया है कि ट्रूडो को पद पर बने रहना चाहिए या इस्तीफा देना चाहिए। उदारवादी रणनीतिकार एंड्रयू पेरेज का कहना है कि सासंदों की मांग को नेतृत्व को गंभीरता से लेना चाहिए।

चक्रवात दाना रात ...

है मुख्यमंत्री ममता बनर्जी आज रात नवान्न (सचिवालय) में अपने दफ्तर में ही रहेंगी और स्थिति पर नजर रखेंगी। उन्होंने बताया कि नवान्न में 24 घंटे हेल्पलाइन चालू रहेगी। नवान्न में हेल्पलाइन नंबर (033) 22143526 है। साथ ही जिलों में भी हेल्पलाइन शुरू की गई है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि मानव जीवन सबसे मूल्यवान है। लोगों की जान बचानी होगी। इसलिए स्कूलों को बंद किया गया है। मैं आज रात नवान्न में रहूंगी। आपदा प्रबंधन विभाग के सभी लोग काम करेंगे। मुख्यमंत्री ने बताया कि वह अपने दफ्तर से सभी कार्यों की निगरानी करेंगी। जो अधिकारी रात में नवान्न में रहेंगे, उनके लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की गई हैं। आपदा के आशंकाओं के चलते राज्य के 9 जिलों में सभी स्कूल बंद रखने का निर्णय प्रशासन ने लिया है। उत्तर 24 परगना, दक्षिण 24 परगना, पूर्व मेदिनीपुर, कोलकाता, हावड़ा, हुगली, बांकुरा, पश्चिम मेदिनीपुर और झाड़ग्राम में चक्रवात का प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए अग्रिम सुरक्षा के तौर पर 23 से 26 अक्तूबर तक राज्य के इन नौ जिलों के सभी स्कूलों में छुट्टी की घोषणा की गई है, जैसा कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने पहले ही बताया था। वर्तमान में चक्रवात सागर द्वीप से 270 किलोमीटर दूर है। गुरुवार आधी रात से शुक्रवार सुबह के बीच चक्रवात टकरा सकता है। उससे पहले मुख्यमंत्री ममता बनर्जी स्थिति पर जागरूक नजर रख रही हैं। दाना के स्थलीय क्षेत्र में आने से पहले गुरुवार शाम को उन्होंने स्थिति की जानकारी साझा की। मुख्यमंत्री ने बताया कि आपदा के संभावित क्षेत्रों से 3,56,941 लोगों को पहचाना गया है। हालांकि, उनमें से सभी ने अभी तक सुरक्षित स्थान पर आश्रय नहीं लिया है। मुख्यमंत्री ने बताया कि अब तक 1,59,837 लोग सुरक्षित स्थान पर आश्रय ले चुके हैं। बाद में और अधिक लोग सुरक्षित स्थान पर आने की उम्मीद जताई गई है। आपदा प्रबंधन के लिए 851 कैंप चलाए जा रहे हैं। विभिन्न राहत शिविरों में 83,583 लोग आश्रय ले चुके हैं।

विधानसभा उपचुनाव में सत्ता के चरम संघर्ष से विपक्ष का चरित्र उजागर : भाजपा

गुवाहाटी (हिंस)। प्रदेश भारतीय जनता पार्टी ने आरोप लगाया है कि असम की जनता के सामने विपक्षी राजनीतिक दलों द्वारा पिछले दिनों दिए गए बयानों और वर्तमान उप-जिला पर उनके रुख ने असम की जनता के सामने विपक्षी दलों के असली स्वरूप को उजागर कर दिया है। वास्तव में, इसने लोगों के सामने यह साबित कर दिया है कि कांग्रेस सहित विपक्षी राजनीतिक दल राज्य की जनता के प्रति बिल्कुल भी जवाबदेह नहीं हैं और उनकी एकमात्र चिंता सत्ता-केंद्रित चालें हैं। प्रदेश भाजपा के मुख्य प्रवक्ता मनोज बरुवा ने आज बशिष्ठ स्थित पार्टी मुख्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विपक्षी दलों को देश की अर्थव्यवस्था के बारे में चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। ये राजनीतिक दल असम के लोगों की आकांक्षाओं और राज्य के समग्र विकास के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हैं। उनके पास असम के भविष्य के लिए कोई योजना नहीं है। यह मंच केवल सत्ता के लिए बना है। एक बार फिर, भारतीय जनता पार्टी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस और एआईयूडीएफ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। हाल ही में सामागुड़ी विधानसभा क्षेत्र में हुए उपचुनाव में एआईयूडीएफ और कांग्रेस के गठबंधन ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है। भाजपा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस, अन्य विपक्षी राजनीतिक दलों और एआईयूडीएफ के बीच गठबंधन असम के लोगों के लिए बुरी खबर लेकर आया है। भाजपा ने कहा कि असम जातीय परिषद और राइजर दल सहित अन्य विपक्षी राजनीतिक दलों के लिए यह आवश्यक और प्रासंगिक है कि वे एआईयूडीएफ के साथ अपने गठबंधन के बारे में असम के लोगों को स्पष्ट बयान दें। वास्तव में, कांग्रेस सहित विपक्षी राजनीतिक दलों द्वारा लंबे समय से झूठ बोलकर असम के लोगों को गुमराह करने की साजिश पार्टियों द्वारा अपनाए गए रुख से साबित हो गया है।

नौ उम्मीदवारों ने दाखिल किया नामांकन

गुवाहाटी (हिंस)। असम विधानसभा उपचुनाव के लिए पांच विधानसभा क्षेत्रों के लिए आज कुल नौ उम्मीदवारों ने नामांकन दाखिल किया। असम के मुख्य चुनाव कार्यालय की ओर से मिली जानकारी के अनुसार 11 नंबर धोलाई के लिए चार उम्मीदवारों ने नामांकन दाखिल किया है। वहीं 31 नंबर सिदली के लिए एक उम्मीदवार ने नामांकन दाखिल किया है। 32 नंबर बंगाईगांव के लिए दो उम्मीदवारों ने नामांकन दाखिल किया है तथा 88 नंबर सामागुड़ी विधानसभा क्षेत्र के लिए दो उम्मीदवारों ने अपना नामांकन दाखिल किया है। 77 नंबर बिहाली विधानसभा क्षेत्र के लिए आज किसी भी उम्मीदवार ने नामांकन दाखिल नहीं किया है। इन नामांकनों के साथ ही कुल नामांकन दाखिल करने वालों की संख्या 14 हो गई है। उपचुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि 25 अक्तूबर है। 13 नवंबर को मतदान होगा।

बरपेटा : नौ व्यापारिक प्रतिष्ठान जलकर राख लाखों का नुकसान

बरपेटा (हिंस)। बरपेटा जिले के बाघबर साप्ताहिक बाजार में लगी आग के दौरान देखते ही देखते नौ व्यापारिक प्रतिष्ठान पूरी तरह जलकर राख हो गये। पुलिस ने गुरुवार को बताया कि बाघबर साप्ताहिक बाजार में आग लगने की खबर मिलते ही मौके पहुंची अग्निशमन की टीम ने स्थानीय लोगों और पुलिस की मदद से जब तक आग पर काबू पाया तब तक नौ व्यापारिक प्रतिष्ठानों में मौजूद सामान जलकर कर राख हो गया। आग लगने की वजह से 600 मन से अधिक पटसन जलकर राख हो गया। आग के दौरान साहेब हुसैन, सद्दाम हुसैन, मतलेब अली, जैनाल आवेदीन, हजरत अली, बारेक अली, फालू मियां, अलाउद्दीन और कादिर अली का व्यापारिक प्रतिष्ठान पूरी तरह जलकर राख हो गया। आग की वजह से लाखों रुपए की संपत्ति का नुकसान हुआ है। हालांकि, आग कैसे लगी इसकी जानकारी नहीं लग पाई है। पुलिस ने आशंका व्यक्त किया है कि शॉर्ट सर्किट की वजह से आग लगी होगी। पुलिस इस संबंध में एक प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच कर रही है। हादसे में कोई भी हताहत नहीं हुआ है।

छात्रा से अश्लील व्यवहार करने के आरोप में दो गिरफ्तार

डिब्रूगढ़ (हिंस)। डिब्रूगढ़ जिले के दुलीयाजान इलाके में दो छात्राओं के साथ अश्लील व्यवहार करने के आरोप में ई-रिक्शा के चालक समेत दो लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गुरुवार को बताया कि दो छात्राओं के साथ अश्लील व्यवहार करने के आरोप में ई रिक्शा चालक और उसके सहयोगी को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान दुलियाजान के डिरियाल जपरपट्टी निवासी जय यादव और डिरियल गजला बस्ती निवासी सुरेश लिंबू के रूप में की गई है। गिरफ्तार दोनों आरोपी ट्यूशन से लौट रही दो छात्राओं के साथ अश्लील व्यवहार किया था। घटना के संबंध में दुलीयाजान थाने में दर्ज प्राथमिकी आधार पर दोनों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस दर्ज शिकायत के आधार पर गिरफ्तार दोनों आरोपियों के विरूद्ध आगे की कार्रवाई करने में जुटी हुई है।

चोरी के मामले में शामिल एक महिला समेत दो गिरफ्तार

गुवाहाटी (हिंस)। गुवाहाटी की जालुकबारी पुलिस ने चोरी के मामले में शामिल एक महिला समेत दो लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गुरुवार को बताया कि जालुकबारी थाना की एक डब्ल्यूजीपीडी टीम ने चोरी के एक मामले की जांच के दौरान चोरी की विभिन्न सामग्री समेत दो लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान कुमारपाड़ा की रीना बेगम (38) और बिलासीपाड़ा के निजाम उद्दीन के रुप में की गई है। दोनों की गिरफ्तारी एक खुफिया जानकारी आधार पर हुई है। गिरफ्तार दोनों आरोपियों के पास से तलाशी के दौरान चोरी के सोने के आभूषण, 50 हजार रुपए नकद, बर्तन और कपड़े बरामद किए गए है। घटना के संबंध में एक प्राथमिकी दर्ज कर आगे की जांच जारी है।

प्रमोद बोड़ो ने कोकराझाड़ में बढ़ते मलेरिया से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई का निर्देश दिया

कोकराझार। सीईएम प्रमोद बोरो ने तत्काल सुधार का निर्देश दिया है। कोकराझाड़ में मलेरिया के मामलों में चिंताजनक वृद्धि को संबोधित करने के उपाय। की समीक्षा के दौरान बीटीसी विधान सभा सभागार में स्थिति, बोरो ने की आवश्यकता पर बल दिया मलेरिया की रोकथाम पर जनता को शिक्षित करने के लिए जागरूकता अभियान। उन्होंने समुदाय को लक्षणों, संचरण और के बारे में सूचित करने के महत्व पर बल दिया बीमारी के प्रसार को रोकने के लिए निवारक अभ्यास। समन्वित प्रतिक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए, एके प्रधान सचिव की अध्यक्षता में संयुक्त कार्यवाही समिति की स्थापना की गयी है। बीटीसी, आकाश दीप, स्वास्थ्य सचिव के साथ सदस्य सचिव के रूप में कार्यरत हैं। यह समिति में कोकराझाड़ के उपायुक्त, कोकराझाड़ के प्रतिनिधि शामिल होंगे। मेडिकल कॉलेज और स्वास्थ्य विभाग निगरानी रखें और आवश्यक रोकथाम लागू करें पैमाने। प्रभावित क्षेत्रों में फील्ड स्टाफ की कमी को देखते हुए सीईएम बोरो ने तत्काल निर्देश दिया अप्रभावित क्षेत्रों से मलेरिया क्षेत्र के कर्मचारियों की तैनाती। उन्होंने तत्परता बरतने का भी आह्वान किया कोकराझाड़ में कीट विज्ञान सर्वेक्षण शुरू करने के लिए राज्य स्वास्थ्य विभाग के साथ सहयोग जुलि। हाल की रिपोर्टें मलेरिया के मामलों में चिंताजनक वृद्धि का संकेत देती हैं, जिसमें 922 में संक्रमण की पुष्टि हुई है। कोकराझाड़ में 2023 में सिर्फ 256 मामले सामने आए। बैठक में बीटीसी ईएम स्वास्थ्य विभाग के उपायुक्त अरूप कुमार डे ने भाग लिया। कोकराझाड़ मसंदा मैग्डालिम पर्टिन, कोकराझाड़ मेडिकल कॉलेज, बीटीसी के प्रिंसिपल स्वास्थ्य सचिव और वरिष्ठ विभागीय अधिकारी। बाद में, बीटीसी सचिवालय में सीईएम प्रमोद बोरो ने विभिन्न प्रमुख स्वास्थ्य सेवाओं की भी समीक्षा की। एक स्वस्थ बोड़ोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र (बीटीआर) को बढ़ावा देने के उद्देश्य से योजनाएं। प्रस्तुतियों इसमें आई ओनसाई बिथांगकी पहल, नेबरहुड ऑफ केयर (एनओसी) कार्यक्रम और शामिल हैं। बोड़ोलैंड कैंसर केयर ट्रस्ट, साथ ही उनके बजट और समयसीमा पर चर्चा। योजनाएं और समुदाय विजन दस्तावेज समिति की गतिविधियों का भी मूल्यांकन किया गया। *सुलह की प्रक्रिया* पर केंद्रित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला की तैयारी बीटीआर की स्थिति और आगे के कदम-अनुसंधान और नागरिक समाज प्रक्रिया को जोड़ना।

बिहाली के लिए कांग्रेस ने की उम्मीदवार की घोषणा

गुवाहाटी (हिंस)। बिहाली विधानसभा सीट के लिए कांग्रेस ने उम्मीदवार की घोषणा कर दी है। कांग्रेस ने जयंत बोरा को बिहाली से उम्मीदवार बनाया है। आज जयंत बोरा भाजपा छोड़कर शोणितपुर जिला कांग्रेस कार्यालय में सांसद गौरव गोगोई की उपस्थिति में औपचारिक रूप से कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस पार्टी द्वारा राज्य की पांच विधानसभा सीटों पर हो रहे उपचुनावों में चार सीटों के लिए दो दिन पहले उम्मीदवारों की घोषणा की गई थी। कांग्रेस के नेतृत्व में गठित संयुक्त विपक्षी गठबंधन के तहत सीपीआईएम को पांचवी सीट बिहाली देने पर समझौता हुआ था। लेकिन, बिहाली सीट को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भूपेन बोरा तथा सांसद गौरव गोगोई खुले तौर पर आमने-सामने आ गए थे। आखिरकार भूपेन बोरा ने गठबंधन के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। सहयोगी दलों को उन्होंने लिखित रूप से कह दिया कि बिहाली सीट पर कांग्रेस पार्टी सीपीआईएम उम्मीदवार का समर्थन नहीं कर रही है। कांग्रेस द्वारा जयंत बोरा की उम्मीदवारी को लेकर विपक्षी संयुक्त गठबंधन में पूरी तरह धाराशायी हो चुका है। सीपीआईएम ने भी अजप के समर्थन से यहां अपने उम्मीदवार की घोषणा की है। एक बार फिर बिहाली सीट के बहाने प्रदेश कांग्रेस में व्याप्त अंदरूनी गुटबाजी उभरकर सतह पर आ चुकी है।

चोरी की सामग्री बरामद, दो चोर गिरफ्तार

गुवाहाटी (हिंस)। गुवाहाटी के प्रागज्योतिषपुर थाना क्षेत्र में पुलिस की टीम ने अभियान चला कर भारी मात्रा में चोरी की सामग्री समेत दो चोरों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गुरुवार को बताया कि प्रागज्योतिषपुर थाना क्षेत्र के पानीखेती पुलिस चौकी की टीम ने आमगांव इलाके में एक कबाड़ी की दुकान में अभियान चला कर भारी मात्रा में बिजली की केबल के अलावा अन्य चोरी की सामग्री बरामद किया है। इस मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान मंसूर अली (45ए बोको) और कपिल उद्दीन (41ए कसुनमारा) के रूप में की गई है। पुलिस इस संबंध में एक प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

छठ पूजा को लेकर छठ पूजा सेवा समिति वशिष्ठ की बैठक आयोजित

गुवाहाटी। गुवाहाटी महानगर के वशिष्ठ स्थित वशिष्ठ देवालय परिचालना समिति के कार्यालय में छठ पूजा सेवा समिति वशिष्ठ की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें आगामी छठ महापर्व की तैयारियों के लिए विचार विमर्श किया गया। बैठक की अध्यक्षता अशोक सिंह ने की बैठक में सर्वप्रथम पिछले वर्ष का लेखजोखा प्रस्तुत किया गया जिसे सर्व सम्मति से पास कर दिया गया इसके उपरांत आगामी छठ महापर्व की तैयारियों को लेकर विस्तार से चर्चा की गई, विदित है कि इस बार छठ महापर्व नवंबर माह के 5 तारीख मंगलवार को नहाय खाय के साथ प्रारंभ हो रहा है 6 नवंबर खरना तथा 7 नवंबर बृहस्पतिवार को संध्या अर्घ्य एवं 8 नवंबर शुक्रवार को प्रात: अर्घ्य के साथ ही संपन्न होगा,

समिति के पदाधिकारियों के अनुसार बैठक में छठ व्रतधारियों की सुविधा के लिए गुवाहाटी महानगर के सबसे बड़े छठ घाट वशिष्ठ गंगा नदी के दोनों तरफ लगभग एक किलोमीटर तक साफ सफाई के साथ ही संपूर्ण प्रकाश की व्यवस्था की जा रही है, इसके साथ ही व्रतधारियों की सुविधा के लिए अस्थाई स्नानगृह, आकस्मिक चिकित्सा की भी व्यवस्था की जा रही है, इसी के साथ ही व्रतधारियों की सुविधा के लिए सैकड़ों की संख्या में दक्ष स्वयंसेवकों को भी लगाने की व्यवस्था की जा रही है, समिति द्वारा व्रतधारियों की सुविधा के लिए गुवाहाटी के प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा भजन जागरण का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया है जो 7 नवंबर 8 बजे से शुरू होकर 8 नवंबर प्रात: 4 बजे तक चलेगा वशिष्ठ स्थित छठ घाट पर आने वाले सभी लोगों से छठ पूजा सेवा समिति वशिष्ठ के पदाधिकारियों ने विशेष निवेदन भी किया है कि जहां तक संभव हो व्रतधारी अपने वाहन का उपयोग आसपास के व्रती लोगों के साथ मिलकर सामूहिक रूप से करे ताकि पार्किंग स्थल पर किसी तरह की असुविधा का सामना नहीं करना पड़े।

शिमलीतोला में ड्रग्स के साथ तीन तस्कर गिरफ्तार

ग्वालपाड़ा (असम) (हिंस)। ग्वालपाड़ा जिले के माटिया थाना क्षेत्र के शिमलीतोला से काफी संख्या में प्रतिबंधित नशीले कफ सिरप के साथ तीन तस्करों को पुलिस ने गिरफ्तार किया। गिरफ्तार तस्करों की पहचान सद्दाम अली (35), यूसुफ अली (32) और मयनाल हक (36) के रूप में हुई है। पुलिस ने आज बताया कि माटिया के थाना प्रभारी निप्पूमणि चौधरी और शिमलीतोला थाना प्रभारी हर्षजीत दास के नेतृत्व में संयुक्त रूप से अभियान चलाया गया। इस अभियान में एक स्विफ्ट डिजायर कार (एएस- 01एवाई-9089) में मादक पदार्थ के साथ आ रहे तीनों तस्करों को पुलिस ने जनता की मदद से गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार तस्करों से माटिया थाने में पूछताछ की जा रही है।

जैन विधि से दीपावली पूजन कार्यशाला

गुवाहाटी। आचार्य महाश्रमण के सुशिष्य मुनि प्रशांत कुमार, मुनि कुमुद कुमार के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद गुवाहाटी द्वारा जैन संस्कार विधि से दीपावली पूजन कार्यशाला का आयोजन हुआ। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार ने कहा कि हमें भाग्य से महान जिनशासन मिला। उससे जीवन की समस्या का समाधान खोजने का प्रयास करें। दीपावली पूजन करते हैं उसका भी तरीका है। सही तरीके से मनाएं। जैन संस्कार विधि से करें। पटाखा न फोड़ें। पटाखे से छ: जीवनिकाय की हिंसा होती है। प्राणी भयभीत भी होते हैं। हम जीवों को अभयदान दें। हिंसा में भागी न बनें। हिंसा करके खुशी मनाना अच्छी बात नहीं है। उससे भारी पापकर्म का बंधन होता है। खुशी का अवसर किसी को तकलीफ देकर न मनाएं। सबसे अच्छा तरीका

तेला जप आराधना करें। प्रभु महावीर जिनका कार्तिक अमावस्या को निर्वाण हुआ एवं गणधर गौतम जिनको उसी रात्रि में कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हुई उनका जप करें। आध्यात्मिक तरीके से दीपावली मनाएं। प्रभु महावीर की साधना, तपस्या एवं सिद्धातों को याद करते हुए अपने आपको उसके साथ जोड़ दें। दीपावली पूजन की सार्थकता तभी होगी जब जीवन में समता, संयम, सादगी एवं अहिंसा का विकास होगा। संस्कारक राकेश जैन ने कहा कि अपनी संस्कृति अपने जैनत्व के तरीके से दीपावली मनाएं। मोक्ष जाने के सहायक तत्व नौ मंगल भावना के साथ अपने आपको जोड़ दें, जिससे हमारा जीवन आदर्श एवं उन्नत बने। यह विधि हमारे जीवन को कल्याणकारी बनाने वाली है। तेयुप सहमंत्री गौतम बैद ने बताया कि तेरापंथ युवक परिषद के महावीर अष्टकम् एवं विजयगीत से कार्यशाला का शुभारम्भ हुआ। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष सतीश भादानी ने सभी का स्वागत करते हुए जैन संस्कार विधि का महत्व बताया। जैन संस्कारों बाबूलाल सुराणा, छत्तरसिंह चौरड़िया, बजरंग डोसी, राकेश जैन, जयंत सुराणा, सतीश भादानी ने जैन विधि से दीपावली पूजन विधि पूर्ण की। आभार तेयुप सहमंत्री राहुल नाहटा ने व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथ युवक परिषद मंत्री पंकज सेठिया ने किया।

डिब्रूगढ़ में 25 अक्तूबर से आयोजित होगी राष्ट्रीय बैडमिंटन चैंपियनशिप

डिब्रूगढ़ (हिंस)। डिब्रूगढ़ जिला के खेल इतिहास में पहली बार जिला शहर राष्ट्रीय बैडमिंटन चैम्पियनशिप की मेजबानी करेगा। भारतीय बैडमिंटन संघ (बीएफआई) के सौजन्य से 25 से 30 अक्तूबर तक डिब्रूगढ़ शहर के बहुउद्देशीय इंडोर स्टेडियम में अंडर-13 लड़कों और लड़कियों के लिए राष्ट्रीय स्तर की बैडमिंटन चैंपियनशिप आयोजित किया जाएगा। आयोजकों ने आज डिब्रूगढ़ बहुउद्देशीय इंडोर स्टेडियम में एक संवाददाता सम्मेलन के दौरान इसकी घोषणा की। बैटमिंटन प्रतियोगिता आयोजक समिति के अध्यक्ष तथा असम पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष ऋतुपर्ण बरुवा ने बताया कि टूर्नामेंट में देश के 26 राज्यों के दोनों पुरुष एवं महिला वर्ग के कुल 354 खिलाड़ी भाग लेंगे। टूर्नामेंट 25 अक्तूबर को सुबह 9 बजे से आरंभ होने वाली प्रतियोगिता का औपचारिक उद्घाटन दोपहर के समय केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल करेंगे। इस अवसर पर प्रकाशित एक स्मारिका का भी अनावरण किया जाएगा। यह टूर्नामेंट लड़के और लड़कियों के एकल और युगल दोनों वर्गों में आयोजित किया जाएगा, जिसमें 3 लाख रुपए की पुरस्कार राशि होगी। कल दोपहर आयोजित होने वाले उद्घाटन समारोह में कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाड़ियों को भी सम्मानित किया जाएगा।

फिजिक्स वाला (पीडब्लू) लांच करेगा 77 नए टेक-इनेबल्ड विद्यापीठ ऑफलाइन सेंटर्स

गुवाहाटी। फिजिक्स वाला (पीडब्लू), भारत की प्रमुख एडटेक कंपनी, उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा देने के लिए शैक्षणिक वर्ष 25-26 में 77 नए ऑफलाइन टेक-इनेबल्ड लर्निंग सेंटर्स खोलने का ऐलान किया है। ये नए सेंटर्स तमिलनाडु, गुजरात, जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और कई अन्य राज्यों में खोले जाएंगे। इस विस्तार से पीडब्लू के ऑफलाइन सेंटर्स की कुल संख्या 126 से बढ़कर 203 हो जाएगी, जो 141 शहरों में होंगे। इस कदम का मकसद खासकर टियर 2 और टियर 3 शहरों के बच्चों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंचाना है, ताकि देश के दूर-दराज के इलाकों तक भी इसका लाभ मिल सके। शैक्षणिक वर्ष 24-25 में पीडब्लू के विद्यापीठ और पाठशाला सेंटर्स में 2 लाख से ज़्यादा छात्रों ने एडमिशन लिया, जो पीडब्लू

के मिशन पर लोगों के बढ़ते भरोसे को दर्शाता है। अगले शैक्षणिक वर्ष में पीडब्लू का लक्ष्य 2.5 लाख छात्रों को पढ़ाना है और कंपनी इस बात पर पूरी तरह से ध्यान देती है कि हर स्टूडेंट को उसकी पढ़ाई के लिए जरूरी गाइडेंस और संसाधन मिलें। आज लगभग हर आईआईटी और हर एम्स में पीडब्लू का कोई न कोई छात्र पढ़ रहा है। पीडब्लू के ऑफलाइन सेंटर्स दो मॉडल्स में बंटे हुए हैं-विद्यापीठ और पाठशाला। विद्यापीठ सेंटर्स टेक-इनेबल्ड हैं, जहां छात्र क्लासरूम में आकर अनुभवी टीचर्स से पढ़ाई करते हैं। वहीं पाठशाला मॉडल में *दो-टीचर सिस्टम* है, जहां एक टीचर वर्चुअली पढ़ाते हैं और दूसरा टीचर क्लासरूम में रहकर स्टूडेंट्स के सवालों के जवाब देता है। इस मॉडल से छात्र चाहे कहीं भी हों, वे देश के टॉप टीचर्स से पढ़ाई कर सकते हैं। इन दोनों मॉडल्स को मिलाकर पीडब्लू ने डिजिटल और फिजिकल लर्निंग को एक साथ लाकर देशभर के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी है। अंकित गुप्ता, सीईओ ऑफलाइन, फिजिक्स वाला, ने कहा कि पीडब्लू में, हम हमेशा छात्रों की जरूरतों और उनकी भलाई को प्राथमिकता देते हैं। नए सेंटर्स खोलकर हम ये सुनिश्चित करना चाहते हैं कि छात्रों को अच्छी शिक्षा के लिए लंबी दूरी तय न करनी पड़े, जिससे उनका आर्थिक बोझ भी कम हो। साथ ही, हम ये भी चाहते हैं कि उन्हें अपनी पढ़ाई के लिए दूसरे शहरों में शिफ्ट होने का मानसिक और भावनात्मक तनाव न झेलना पड़े। हाल ही में फिजिक्स वाला ने अपनी तीसरी नेशनल स्कॉलरशिप एंट्रेंस टेस्ट (एनएसएटी) 2024 का आयोजन ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों में हुआ। इस टेस्ट के लिए 250 करोड़ रुपए की स्कॉलरशिप रखी गई थी, जो इसे अब तक का सबसे बड़ा स्कॉलरशिप टेस्ट बनाता है। इस पहल का मकसद नीट-यूजी और आईआईटी-जेईई जैसे बड़े एग्जाम्स की तैयारी कर रहे छात्रों को उनकी आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना शिक्षा और एक्सपर्ट गाइडेंस देना है।

संपादकीय

धान की पीड़ा

पंजाब में धान की भरपूर पैदावार के बाद किसानों का हैरान-परेशान होना व्यवस्था की विसंगतियों व तंत्र की नाकामी को ही दर्शाता है। राज्य की अनाज मंडियों में धान बहुतायत में पड़ा होना न केवल खरीद एजेंसियों की अक्षमता को दर्शाता है बल्कि केंद्र और राज्य सरकारों में व्यावहारिक तालमेल न होना भी बताता है। जिसके चलते विपणन से जुड़े हितधारक विरोध जता रहे हैं। विडंबना देखिए कि किसान खून-पसीने से उगायी फसल को भी समय पर नहीं बेच पाने से परेशान हैं। किसान धीमी खरीद प्रणाली से चिंतित हैं। वहीं चावल मिल मालिकों की दलील है कि उनके पास अतिरिक्त भंडारण की क्षमता नहीं है। दूसरी ओर धान की खरीद से जुड़े आढ़ती अपने कमीशन को बढ़ाए जाने की मांग कर रहे हैं। निश्चित रूप से ये हालात किसानों को परेशान करते हैं और खरीद प्रणाली में सुधार की जरूरत को बताते हैं। विडंबना है कि यह सारा हंगामा एक ऐसी फसल को लेकर हो रहा है, जिसको उगाने में प्रयुक्त पानी ने राज्य में एक गंभीर जल संकट को जन्म दे दिया है। वजह है धान की फसल की पैदावार बढ़ाने के लिये भूजल का अंधाधुंध दोहन। फलतः राज्य का एक बड़ा इलाका मरुस्थलीकरण की ओर उन्मुख है। ऐसे में स्वाभाविक सवाल उठता है कि पंजाब आखिर कब तक धान की खेती के जरिये अपने इन अनमोल प्राकृतिक संसाधनों का निर्यात करता रहेगा? इसमें दो राय नहीं है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी पर सुनिश्चित खरीद पंजाब के धान उत्पादकों को केंद्रीय पूल में अधिक अनाज के योगदान के लिये प्रेरित करती रही है। निस्संदेह, हरित क्रांति के बाद देश की खाद्य सुरक्षा शृंखला को मजबूत बनाने में पंजाब का बड़ा योगदान रहा है। जिसके चलते देश खाद्यान्न संकट व कुपोषण के अभिशाप से किसी हद तक मुक्त हो सका है। जबकि एक हकीकत यह भी है कि यह फसल पंजाब का मुख्य भोजन नहीं रही है। निश्चित तौर पर केंद्र व राज्य सरकार को तालमेल बनाकर इस संकट के समाधान की दिशा में गंभीर प्रयास करना चाहिए। वहीं दूसरी ओर प्रदेश में लबालब भरे अन्न भंडार राज्य की अपेक्षाओं और केंद्र की आवश्यकताओं के बीच तालमेल के अभाव को दर्शाते हैं। विडंबना देखिये, इसी धान के उत्पादन का एक प्रतिप्रभाव यह भी है कि पंजाब के हिस्से में प्रदूषण बढ़ाने वाला पराली दहन का आक्षेप आता है। जिसे उत्तर क्षेत्र में अक्तूबर-नवंबर में बढ़ने वाले वायु प्रदूषण का प्रमुख घटक बताया जाता रहा है। जबकि हकीकत यह है कि एक तो किसानों को पराली निस्तारण का कारगर विकल्प केंद्र व राज्य सरकारें नहीं दे पायी हैं। वहीं दूसरी ओर किसानों के पास रबी की फसलों की बुआई के लिये अधिक समय नहीं बचा होता। जिसके चलते उनको पराली जलाने के अलावा दूसरा कारगर विकल्प नजर नहीं आता। बहरहाल, इस चौतरफा संकट के बीच यह स्पष्ट हो गया है कि पंजाब में धान की खेती की समाप्ति के लिए चरणबद्ध तरीके से बहुप्रचारित फसल विविधीकरण योजना को अविलंब लागू किया जाना चाहिए। इस योजना के क्रियान्वयन में देरी कई तरह के संकटों को बढ़ावा ही देगी। यह एक हकीकत है कि लंबे समय तक किसानों का धान की ही खेती करना, राज्य के लिये घातक ही साबित होगा। ऐसा लगता है कि केंद्र सरकार ने तीन विवादास्पद कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों के साल भर चले आंदोलन से कोई सबक नहीं सीखा। हालिया घटनाक्रम से किसानों की वह आशंका बलवती हो रही है कि केंद्र सरकार लंबे समय तक धान की खरीद को जारी नहीं रखना चाहती। दरअसल, कुछ चुनिंदा फसलों के लिये ऊंची एमएसपी की घोषणा अन्य फसलों के उत्पादन के लिये किसानों को प्रेरित करने हेतु पर्याप्त नहीं है। जितनी जल्दी हो सके, केंद्र सरकार को मक्का और दाल जैसी फसलों की एमएसपी पर खरीद के लिये एक मजबूत व्यवस्था बनानी होगी। ऐसे में धान की खेती के लिये किसानों को हतोत्साहित करने से जमीनी स्तर पर बड़ा बदलाव आ सकता है।

राज्य की अनाज मंडियों में धान बहुतायत में पड़ा होना न केवल खरीद एजेंसियों की अक्षमता को दर्शाता है बल्कि केंद्र और राज्य सरकारों में व्यावहारिक तालमेल न होना भी बताता है। जिसके चलते विपणन से जुड़े हितधारक विरोध जता रहे हैं। विडंबना देखिए कि किसान खून-पसीने से उगायी फसल को भी समय पर नहीं बेच पाने से परेशान हैं। किसान धीमी खरीद प्रणाली से चिंतित हैं। वहीं चावल मिल मालिकों की दलील है कि उनके पास अतिरिक्त भंडारण की क्षमता नहीं है। दूसरी ओर धान की खरीद से जुड़े आढ़ती अपने कमीशन को बढ़ाए जाने की मांग कर रहे हैं। निश्चित रूप से ये हालात किसानों को परेशान करते हैं और खरीद प्रणाली में सुधार की जरूरत को बताते हैं। विडंबना है कि यह सारा हंगामा एक ऐसी फसल को लेकर हो रहा है, जिसको उगाने में प्रयुक्त पानी ने राज्य में एक गंभीर जल संकट को जन्म दे दिया है। वजह है धान की फसल की पैदावार बढ़ाने के लिये भूजल का अंधाधुंध दोहन। फलत: राज्य का एक बड़ा इलाका मरुस्थलीकरण की ओर उन्मुख है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के मौजूदा स्वरूप को बदलने और इसमें भारत की बड़ी भागीदारी सुनिश्चित करने की मांग रखी थी

संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रासंगिकता

अनुज आचार्य

संयुक्त राष्ट्र के चार उद्देश्य हैं– अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा का संरक्षण करना, विभिन्न राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों का विकास करना, अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में सहयोग एवं मानव अधिकारों के प्रति सम्मान का संवर्धन और देशों की कार्रवाइयों के बीच तालमेल के केन्द्र के रूप में काम करना। लेकिन इधर दो वर्षों से जारी रूस और यूक्रेन युद्ध एवं इजरायल एवं अरब राष्ट्रों के बीच सीमित युद्धों ने संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

सयुक्त राष्ट्र दिवस प्रत्येक वर्ष 24 अक्टूबर को मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन हुआ था। इस संगठन को संयुक्त राष्ट्र संघ या संक्षेप में यूएन भी कहा जाता है। संयुक्त राष्ट्र के चार उद्देश्य हैं- अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा का संरक्षण करना, विभिन्न राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों का विकास करना, अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में सहयोग एवं मानव अधिकारों के प्रति सम्मान का संवर्धन और देशों की कार्रवाइयों के बीच तालमेल के केन्द्र के रूप में काम करना। लेकिन इधर दो वर्षों से जारी रूस और यूक्रेन युद्ध एवं इजरायल एवं अरब राष्ट्रों के बीच सीमित युद्धों ने संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। जहां तक संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न कार्यक्रमों के सफल संचालन में भारत के योगदान एवं भागीदारी का सवाल है तो आज भी भारत विकास एवं गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, निशस्त्रीकरण, मानवाधिकार और विश्व शांति स्थापना के प्रयासों में संयुक्त राष्ट्र संघ का कंधे से कंधा मिलाकर साथ दे रहा है। 140 करोड़ आबादी के साथ भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश और एक उभरती हुई आर्थिक महाशक्ति भी है। भारत की विदेश नीति ऐतिहासिक रूप से विश्व शांति को बढ़ावा देने वाले देश के रूप में रही है। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी वैश्विक संस्था की नीति निर्धारक सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता से भारत को वंचित तथा बाहर रखना अन्याय ही माना जाना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के समय से ही रक्षा मिशनों में भारत महत्वपूर्ण योगदान देता आया है। अब तक विभिन्न शांति अभियानों में भारत के 180000 सैनिक हिस्सा ले चुके हैं। भारत ने 82 देशों के लगभग 800 शांति स्थापना अधिकारियों को प्रशिक्षित भी किया है। मौजूदा समय में संयुक्त राष्ट्र संघ शांति सैनिक दल में योगदान करने वाले सभी देशों में भारत दूसरा सबसे बड़ा देश है। वर्तमान समय में भी भारत 11 यूएन मिशन और दो

यूएन कार्यालयों को 6891 भारतीय सैन्य कर्मी और 782 पुलिसकर्मी उपलब्ध करवा रहा है। इससे विश्व में शांति और सौहार्द कायम करने की भारत की गहरी प्रतिबद्धता साबित होती है और यह प्रदर्शित होता है कि भारत संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर कितना विश्वास करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के समक्ष उसके चार्टर के अनुसार कई ऐसे मुद्दे भी हैं जो लंबे समय से अपना हल निकलने की आस लगाए बैठे हैं। पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसे मानवता से जुड़े मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र संघ अभी तक कोई कारगर हल तलाश नहीं पाया है। स्वीडन की पर्यावरण एक्टिविस्ट 16 वर्षीया ग्रेटा थनबर्ग ने संयुक्त राष्ट्र संघ में बोलते हुए कहा था कि, आपने हमारा बचपन, हमारे सपनों को छीन लिया है। लोग मर रहे हैं और पूरा ईकोसिस्टम बर्बाद हो रहा है। उनका कहना था कि विश्व के नेता कुछ नहीं कर रहे हैं। किसी जमाने में परमाणु निशस्त्रीकरण संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रमुख एजेंडे का हिस्सा हुआ करता था, लेकिन बीते दो दशकों में यह मुद्दा जैसे पृष्ठभूमि में चला गया है। यद्यपि यूएन चार्टर का उद्देश्य विश्व समुदाय की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक प्रगति हेतु कार्य करना है ताकि संसार में समानता, स्वतंत्रता, सहयोग, न्याय, भ्रातृत्व, मित्रता व सुरक्षा का परिवेश निर्मित किया जा सके और युद्ध की नौबत ही न आए। लेकिन बीते 75 वर्षों में न केवल युद्ध जारी हैं, अपितु सीरिया जैसे देश तो बर्बादी के कगार पर पहुंच चुके हैं। विश्व को आज भी ताकत एवं आर्थिक आधार पर ही हांका जा रहा है। पाकिस्तान आज भी आतंकवादियों की जन्मस्थली बना हुआ है और वैश्विक शांति एवं सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। उत्तर कोरिया और ईरान बेधडक होकर परमाणु हथियारों की होड़ को बढ़ावा दे रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ड्रग्स का अवैध कारोबार बड़ी तेजी से फल-फूल रहा है जिसमें प्रतिबंधित ड्रग्स का उत्पादन, खेती और बिक्री भी शामिल है। आतंकवाद की बढ़ती विभीषिका और खतरे के दृष्टिगत भारत ने 1996 में संयुक्त राष्ट्र संघ में अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक संधि का प्रस्ताव रखा था। लेकिन 26 वर्ष बीत जाने के बाद भी यह मुद्दा आपसी सहमति न बन पाने के कारण अभी भी लटका हुआ है और आतंकवाद की परिभाषा तय करने में नाकाम रहा है। जब वैश्विक संस्थाएं अपने एजेंडे एवं चार्टर के अनुरूप काम करती न दिखें तो उनके अस्तित्व पर सवालिया निशान उठना लाजिमी ही हो जाता है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी संयुक्त राष्ट्र संघ के मौजूदा स्वरूप को बदलने और इसमें भारत की बड़ी भागीदारी सुनिश्चित करने की मांग रखी थी। उनका सवाल था कि आखिर भारत, संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए कब तक इंतजार करता रहेगा? नरेंद्र मोदी का कहना है कि सुधार एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है और संयुक्त राष्ट्र संघ के मूल चरित्र में सुधार वक्त की मांग है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र संघ संस्था के स्वरूप, संगठन और उसके कार्यों में सुधार का जो मामला उठाया है, यदि उस पर शीघ्र ही गौर न फरमाया गया तो आने वाले समय में संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी वैश्विक संस्था निश्चित तौर पर अपने अस्तित्व को लेकर संघर्ष करती नजर आएगी। यह संस्था अपनी पूर्णता एवं समग्रता में विश्व शांति और कल्याण के लिए अपनी सार्थकता सिद्ध कर पाए, इसके लिए विश्व के सभी देशों को मिलजुल कर प्रयास और सहयोग करने की जरूरत है।

दृष्टि कोण

बदलते वक्त के साथ समीकरणों में बदलाव

हरियाणा और जम्मू-कश्मीर विधानसभा के बाद अब महाराष्ट्र और झारखंड के लिए भी चुनाव की रणभेरी बज चुकी है। महाराष्ट्र में 20 नवंबर को मतदान और 23 नवंबर को नतीजे आएंगे। महाराष्ट्र विधानसभा के लिए पहली बार छह असरदार राजनीतिक दल एक तरह से बराबरी के साथ चुनावी समर में उतरेंगे। इसलिए, यहां पर राजनीति का ऊंट किस करवट बैठेगा, यह तो भविष्य के गर्भ में है, लेकिन इतना तय है महाराष्ट्र में महामुकाबला बेहद दिलचस्प होने वाला है। समंदर की लहरें जिस तेजी से बदलती हैं, पिछले विधानसभा चुनाव के बाद से देश की आर्थिक राजधानी में राजनीति की लहरें उससे ज्यादा तेजी से बदली हैं। किसे पता था कि 2019 में भाजपा-शिवसेना गठबंधन में चुनाव लड़ने और बहुमत से 16 सीटें ज्यादा हासिल करने के बावजूद मिलकर सरकार नहीं बना पाएंगे। राजनीति के 'सत्ता-सुख' के सिंहासन पर कोई और ही आरूढ़ हो जाएगा। महाराष्ट्र में 2019 के विधानसभा चुनाव में शिवसेना और एनसीपी एक अलग ताकत थी। तब जनता ने शिवसेना को 56 और एनसीपी को 54 सीटें दी थीं। भाजपा 105 सीटें लेकर सबसे बड़ा दल बनकर उभरी थी, लेकिन सरकार बनने से पहले ही उद्धव ठाकरे ने अप्रत्याशित रूप से पाला बदल लिया। उद्धव ने विपरीत विचारधारा वाली कांग्रेस और एनसीपी के साथ मिलकर सरकार बनाई और खुद सीएम बने। इतने दशकों की राजनीति के बाद पहली बार ठाकरे परिवार से कोई सीएम की कुर्सी तक पहुंचा था। लेकिन राजनीति में पासे हमेशा अपने पक्ष में नहीं पड़ते। सत्ता संभालने के बाद इतनी उठापटक मची कि उद्धव और शरद पवार दोनों के ही सारे समीकरण बदल गए। महाराष्ट्र की सत्ता उद्धव ठाकरे के हाथ में आने के बाद उन्हें भाजपा से बड़ी चुनौती अपनी ही पार्टी शिवसेना से मिली। वर्ष 2022 में शिवसेना के वरिष्ठ नेता एकनाथ शिंदे ने खुलेआम बगावत कर दी। दरअसल, एकनाथ शिंदे पार्टी के उन नेताओं में शामिल रहे, जो 2019 में ही कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बनाने के खिलाफ थे। तभी से वे बड़े राजनीतिक मौके की फिराक में थे। मई, 2022 में ऐसा अवसर उनके हाथ में आया। गुवाहाटी फाइव स्टार होटल में शिंदे ने 42 शिवसेना और 7 निर्दलीय विधायकों के साथ फोटो जारी कर शक्ति-

प्रदर्शन किया। इसी बीच राज्यपाल ने उद्धव को बहुमत सिद्ध करने के लिए कह दिया। उधर शिंदे को बागी खेमे ने शिव सेना विधायक दल का नेता घोषित किया। 29 जून, 2022 को उद्धव ठाकरे के सीएम पद से इस्तीफा देने के 24 घंटे के अंदर शिंदे ने सीएम और बीजेपी नेता देवेंद्र फडणवीस ने डिप्टी सीएम के रूप में शपथ ले ली। महाराष्ट्र की पिक्चर अभी भी बाकी थी। अब बारी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में बगावत और टूट की थी। 10 जून, 2023 को एनसीपी के 25वें स्थापना दिवस पर शरद पवार ने पार्टी के दो कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल और सुप्रिया सुले के नामों की घोषणा की। अजित पवार को लेकर शरद से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि वो नेता विपक्ष का पद संभाल रहे हैं। अजित को लगा कि चाचा शरद पवार ने उन्हें साइड लाइन कर दिया है। इसके बाद 2 जुलाई, 2023 को अजित ने 41 विधायकों के साथ महायुति से नाता जोड़ा और शिंदे सरकार में डिप्टी सीएम बन गए। वर्ष 2019 में जब विधानसभा के चुनाव हुए तो महाराष्ट्र में मुख्य रूप से 4 पार्टियां बीजेपी, कांग्रेस, एनसीपी और शिवसेना मैदान में थीं। पिछले 5 साल में एनसीपी और शिवसेना के दो-दो धड़े बन चुके हैं। यानी 2024 चुनाव में 6 बड़ी पार्टियों और दो अलायंस के बीच महामुकाबला होगा- बीजेपी, शिवसेना (शिंदे), एनसीपी (अजित), कांग्रेस, शिवसेना (उद्धव), एनसीपी (शरद)। पार्टियों के समीकरणों के साथ राज्य में वोटर्स के आंकड़े भी बदले हैं। महाराष्ट्र में मतदाताओं की संख्या 9.53 करोड़ पर पहुंची है। हालांकि, इस बार के लोकसभा चुनाव में बड़ा उलटफेर हुआ और बीजेपी को करारा झटका लगा। राज्य की 48 सीटों में से एनडीए 17 सीटों पर सिमट गई, इसमें बीजेपी के खाते में मात्र 9 सीटें आईं। वहीं कांग्रेस ने 13, शिवसेना (उद्धव) ने 9 और एनसीपी (शरद) ने 8 सीटों पर जीत दर्ज की। सबसे खस्ता हालत अजित पवार की हुई, जिनकी पार्टी को सिर्फ एक सीट से संतोष करना पड़ा। महाराष्ट्र में लोकसभा चुनाव के रिजल्ट को 288 विधानसभा सीटों के आधार पर देखें तो आंकड़े और दिलचस्प नजर आएंगे। ये बताते हैं कि अजित पवार की एनसीपी केवल 6 विधानसभा सीटों पर जीती। भाजपा को 23 सीटों का नुकसान हुआ और महाविकास अघाड़ी में कांग्रेस ने सबसे ज्यादा 63 सीटें जीती। नतीजे ये संकेत देते हैं कि त्रिशंकु या गठबंधन सरकार फिर महाराष्ट्र की मजबूरी बनने वाली है। हालांकि, हरियाणा का हाल देखकर कांग्रेस अब फूंक-फूंककर कदम रखेगी। पर महाविकास अघाड़ी गठबंधन में सबसे ज्यादा 63 विधानसभा सीटों पर कांग्रेस आगे थी। यानी लोकसभा चुनाव तक मोमेंटम कांग्रेस के पास था। अब पार्टी के सामने सबसे बड़ी चुनौती विधानसभा चुनाव में इस मोमेंटम को बरकरार रखना है। विशेषज्ञ मानते हैं कि विधानसभा चुनाव में कुछ तो बदलाव होंगे। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव लोकल और रीजनल मुद्दों पर हो रहा है। लोकसभा चुनाव में दोनों अलायंस का वोट शेयर लगभग बराबर था। जो मोमेंटम महाविकास अघाड़ी ने आम चुनाव के दौरान हासिल किया था, वो अब पहले जैसा एग्रेसिव नहीं है। वहीं महायुति की सरकार ने लाडली बहन योजना शुरू की।

कुछ अलग

अहोई माता का उपकार

कार्तिक कृष्ण पक्ष में तिथि-त्योहारों की भरमार रहती है। सम्पूर्ण भारत में जिस प्रकार पति की दीर्घायु की कामना के लिए करवा चौथ व्रत मनाया जाता है, उसी प्रकार उसके ठीक चार दिन बाद संतान की सुख-समृद्धि व लंबी आयु की कामना के लिए अहोई अष्टमी व्रत रखा जाता है। अहोई का अर्थ है 'अनहोनी से बचाने वाली' और चूंकि यह व्रत प्रतिवर्ष कार्तिक कृष्ण अष्टमी को ही किया जाता है, इसीलिए इसे अहोई अष्टमी कहा जाता है। यह व्रत अष्टमी के दिन ही किया जाता है, इसीलिए इसे अहोई आठे भी कहा जाता है। इस वर्ष अहोई अष्टमी पर्व 24 अक्तूबर को मनाया जा रहा है। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार अहोई अष्टमी पर इस बार कई ऐसे मंगलकारी योग बन रहे हैं, जिनमें जगत के पालनहार भगवान विष्णु की पूजा करने से साधक को सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है। इस शुभ अवसर पर साध्य योग और अमृत सिद्धि योग का निर्माण हो रहा है। इसके अलावा, सर्वार्थ सिद्धि योग और गुरु पुष्य योग के भी संयोग बन रहे हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार अहोई अष्टमी व्रत महिलाओं द्वारा अपने बच्चों की किसी भी प्रकार के अमंगल या अनिष्ट से रक्षा के लिए पूरी निष्ठा और श्रद्धा भाव से किया जाता है। इस दिन माता पार्वती की पूजा का विधान है, जिन्हें संतान की रक्षा करने वाली देवी माना गया है। यह व्रत स्त्रियां प्रायः संतान की सुख-समृद्धि एवं दीर्घायु के लिए और निःसंतान महिलाएं संतान की कामना के लिए करती हैं। अहोई अष्टमी व्रत को संतान प्राप्ति के लिए सर्वोत्तम माना गया है। इस व्रत के संबंध में मान्यता है कि इसके प्रभाव से संतान फल की प्राप्ति होती है और जो महिलाएं पूरे विधि-विधान से यह व्रत रखती हैं, उनके बच्चे दीर्घायु होते हैं। प्राचीन समय से चली आ रही मान्यताओं के अनुसार इस व्रत के प्रताप से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। अहोई अष्टमी के अवसर पर स्त्रियां दिनभर करवा चौथ की ही भांति कठोर निर्जल व्रत रखती हैं और तारे निकलने के बाद सायंकाल में तारों को अघ्र्य देकर व्रत खोलती हैं। संध्या के समय सूर्यास्त होने के बाद जब तारे निकलने लगते हैं तो अहोई माता की पूजा आरंभ होती है। सायंकाल के समय दीवार पर आठ कोष्ठक की पुतली लिखी जाती है। उसी के पास सेई और सेई के बच्चों के चित्र भी बनाए जाते हैं। पृथ्वी पर चौक पूरकर कलश स्थापित किया जाता है। कलश पूजन के बाद दीवार पर लिखी अष्टमी का पूजन किया जाता है। फिर दूध-भात का भोग लगाकर कथा कही जाती है। आधुनिक युग में अब बहुत सी महिलाएं दीवारों पर चित्र बनाने के बजाय बाजार से अहोई अष्टमी के रेडीमेड चित्र खरीदकर उन्हें पूजास्थल पर स्थापित कर उनका पूजन करती हैं। कार्तिक कृष्ण अष्टमी को महिलाएं अपनी संतान की दीर्घ आयु तथा उनके जीवन में समस्त संकटों या विघ्न-बाधाओं से उनकी रक्षा के लिए यह व्रत रखती हैं। कुछ स्थानों पर इस दिन धोबी मारन लीला का भी मंचन होता है, जिसमें श्रीकृष्ण द्वारा कंस द्वारा भेजे गए धोबी का वध करते प्रदर्शन किया जाता है। अहोई माता के रूप में अपनी-अपनी पारिवारिक परंपरानुसार लोग माता पार्वती की पूजा करते हैं। पूजा के दौरान महिलाएं प्रायः 'अहोई जिए, अहोआ जिए, मुशा जिए, पूता जिए' शब्दों का उच्चारण करती हैं।

देश दुनीया से

हिंद-प्रशांत इलाके में भारतीय कूटनीतिक बढ़त

हिन्द-प्रशांत में 40 देश और अर्थव्यवस्थाएं शामिल हैं : ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, भूटान, ब्रुनेई, कंबोडिया, दोनों कोरिया, भारत, इंडोनेशिया, जापान, लाओस, मलयेशिया, मालदीव, मंगोलिया, म्यांमार, नेपाल, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, चीन, फिलीपींस, सिंगापुर, श्रीलंका, ताइवान, थाईलैंड, पूर्वी तिमोर और वियतनाम। इन 26 देशों के साथ प्रशांत द्वीप के 14 देशों को जोड़ लीजिये, जिसमें अमेरिका का हवाई वाला इलाक़ा भी शामिल है। प्रशांत द्वीप समूह पश्चिम में इंडोनेशिया से लेकर पूर्व में ईस्टर द्वीप तक वृहदाकार इलाके में 20,000 से अधिक द्वीप शामिल हैं, जिनमें इंडोनेशिया और पापुआ न्यू गिनी द्वारा साझा किया जाने वाला सबसे बड़ा द्वीप, 'न्यू गिनी' भी है।

इंडो पैसिफिक नाम से ही स्पष्ट है, हिंद और प्रशांत महासागर की ज़द में आने वाले देश। हिन्द-प्रशांत में 40 देश और अर्थव्यवस्थाएं शामिल हैं : ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, भूटान, ब्रुनेई, कंबोडिया, दोनों कोरिया, भारत, इंडोनेशिया, जापान, लाओस, मलयेशिया, मालदीव, मंगोलिया, म्यांमार, नेपाल, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, चीन, फिलीपींस, सिंगापुर, श्रीलंका, ताइवान, थाईलैंड, पूर्वी तिमोर और वियतनाम। इन 26 देशों के साथ प्रशांत द्वीप के 14 देशों को जोड़ लीजिये, जिसमें अमेरिका का हवाई वाला इलाक़ा भी शामिल है। प्रशांत द्वीप समूह पश्चिम में इंडोनेशिया से लेकर पूर्व में ईस्टर द्वीप तक वृहदाकार इलाके में 20,000 से अधिक द्वीप शामिल हैं, जिनमें इंडोनेशिया और पापुआ न्यू गिनी द्वारा साझा किया जाने वाला सबसे बड़ा द्वीप, 'न्यू गिनी' भी है। जिन महाशक्तियों ने लम्बे समय तक इस इलाके को काबू में रखा, उनके लिए अपना प्रभाव बनाये रखने की चुनौती है। अमेरिका इसी सिंड्रोम से गुज़र रहा है। जो बाइडेन जब सत्ता में आये, उसके कुछ महीनों बाद हिन्द-प्रशांत नीतियों को रिव्यू करने का आदेश व्हाइट हाउस ने सीआईए को सौंपा था। मार्च, 2021 में सीआईए के निदेशक के रूप में नियुक्त बिल बर्न्स, इंडो-पैसिफिक के रणनीतिकार थे। जुलाई, 2021 में सीआईए ने एक विस्तृत रिपोर्ट दी। इंडो-पैसिफिक में चीन के प्रभाव को कैसे कम करें, उसकी योजना बनी। लेकिन चार वर्षों में निराशा ही हाथ लगी। जापान में लगभग 55 हज़ार अमेरिकी सैन्यकर्मी, दक्षिण कोरिया में 28, हज़ार, ऑस्ट्रेलिया, फिलीपींस, थाईलैंड और गुआम में कई हजार अमेरिकी सैनिक तैनात हैं। अपर्याप्त बजट, प्रतिस्पर्धी प्राथमिकताओं और चीन से निपटने के तरीके पर वाशिंगटन में आम सहमति की कमी के कारण इन्हें मेंटेन करना भारी पड़ रहा है। यों, कहने के लिए पेंटागन ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर और अंतरिक्ष-आधारित प्रणालियों जैसी अत्याधुनिक तकनीकों में निवेश को बढ़ा दिया है। लेकिन, आप भारत जैसे दोस्त के साथ सिख आतंकवाद के इश्यू पर जस्टिन ट्रूडो जैसी शख्सियत की तरफ़दारी करें, तो नई दिल्ली को पाला बदलने में कितनी देर लगेगी? दरअसल, यही हुआ है। शी, ताइवान के प्रति अपने व्यवहार में बदलाव ला रहे हैं। दक्षिण चीन सागर में कृत्रिम द्वीपों का निर्माण और सैन्यीकरण चीन कर रहा है। चीन ने कंबोडिया में एक विस्तारित नौसैनिक बंदरगाह पर भी काम शुरू किया है, जो किसी अन्य एशियाई देश में उसका पहला सैन्य अड्डा बन सकता है। सोलोमन द्वीप के साथ एक सुरक्षा समझौता, इसी तरह की कूटनीतिक कोशिशों का हिस्सा है। पेइचिंग, अन्य प्रशांत देशों को आक्रामक रूप से लुभाने की कोशिश कर रहा है। क्या इस 'कूटनीतिक बिलियर्ड' को पुतिन खेल रहे हैं? इसके विपरीत, अमेरिका मध्य पूर्व संघर्षों में अपरोक्ष रूप से उलझ चुका है। अफ़ग़ानिस्तान से सैनिकों की वापसी के बाद, अमेरिकी टैक्स पेयर्स राहत की सांस लेने ही वाले थे, कि जो बाइडेन प्रशासन ने यूक्रेन का मोर्चा खोल दिया। यूक्रेन को 54 अरब डालर की प्रतिबद्धता अमेरिकी टैक्स पेयर्स को चुभने लगी है। अमेरिकी अधिकारी इस बात से जूझ रहे हैं, कि एक ही समय में चीन और रूस से कैसे निपटें? जो आमतौर पर ज़ेरे बहस नहीं होती, वो हैं पुतिन की खामोश चालें। हिन्द-प्रशांत समेत दक्षिण-पश्चिम एशिया में जो रणनीतिक बदलाव आ रहा है, उसमें 'मास्को-पेइचिंग नेक्सस' की बड़ी भूमिका है। पुतिन और शी यदि प्रच्छन्न हैं, तो मोदी बिलकुल प्रत्यक्ष रूप से कूटनीति के अखाड़े में हैं। पुतिन और शी ने दक्षिण-पूर्व से लेकर पश्चिम एशिया में व्यापक रणनीतिक बदलाव किया है, तो पीएम मोदी ने भी अपने आपको बदला है। कल तक मोदी इस इलाके में दक्षिणपंथ के नायक माने जाते थे। ऐसे दक्षिणपंथ के कट्टर नायक ने क्यों वामपंथी शासकों को गले लगाया है? यह भी तो विमर्श योग्य प्रश्न है। केपी शर्मा ओली और मोदी का खटराग अब आप नहीं सुनेंगे। 3 सितंबर, 2024 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली से न्यूयार्क में मुलाकात की। दोनों नेता भरत-मिलाप की मुद्रा में थे। उनके बीच उभयपक्षीय बैठक ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, और व्यापार पर केंद्रित थी। बयान दिया कि भारत-नेपाल मित्रता बहुत मजबूत है, और हम अपने संबंधों को और भी गति देने के लिए तत्पर हैं। पीएम ओली के लिए अब लिपुलेख मुद्दा नहीं रहा। आप फिर श्रीलंका के वामपंथी नेताओं की बात करें। वामपंथी जनता विमुक्ति पेरामुना (जेवीपी) के नेता अनुरा कुमारा दिसानायक चुनाव से पहले अपने पूरे जत्थे के साथ भारत आये थे। उन्हें सत्ता में आने के वास्ते, क्या कुछ मदद मोदी शासन ने दी थी, उसकी चर्चा फिर कभी। इस बार श्रीलंका, मालदीव हो, या नेपाल, या फिर बांग्लादेश, भारत और चीन के बीच ठीक से झांकिये, तो शत्रु भाव नहीं, क्षेत्रीय सहयोग का समभाव पैदा हुआ है। भारत से आड़े-तिरछे चलने वाले मुइज़्ज़ू, भीगी बिल्ली क्यों बन गए? इस्लामाबाद नई दिल्ली को गले लगाने के वास्ते क्यों आतुर है? इन तमाम सवालों के उत्तर ढूंढ़ने की आवश्यकता है। मोदी न केवल आपदा को अवसर में बदलने वाले नेता हैं, बल्कि जिससे ठन जाती है, उसके 'अवसर' को 'आपदा' में बदल देते हैं। आप 2020 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव को याद करें।

आप का नजरीया

हिंदी-चीनी भाई-भाई!

क्या 1954 का वह नारा फिर बुलंद होगा? क्या हिंदी-चीनी वाकई भाई-भाई साबित होंगे? दरअसल जब यह नारा गूंजा था, तो चीन ने भारत की पीठ में छुरा भी घोंपा था। हमें 1962 का युद्ध झेलना पड़ा, पराजित हुए और हजारों वर्ग किलोमीटर भूमि पर चीन ने कब्जा भी कर लिया। वह कब्जा आज भी यथावत है। वह कालखंड बहुत पीछे गुजर चुका है। आज न तो 1962 वाला दरिद्र-सा भारत है और न ही भारत की तुलना में चीन इतना ताकतवर है कि जहां चाहे, कब्जा कर ले। पूर्वी लद्दाख का ताजा उदाहरण हमारे सामने है। करीब 4-5 साल के टकराव और तनाव के बाद, अंततः, भारत और चीन में आपसी समझौता हुआ है। चीन आक्रांता था। हमें अपने देश की सीमाओं और जमीन की रक्षा करनी थी, लिहाजा चीन को झुकना पड़ा है और भारत के पक्ष को मानने को बाध्य होना पड़ा है। सेना और राजनयिक स्तर की 31 उच्च स्तरीय बैठकों के बाद यह सर्वसम्मति बनी है कि अप्रैल, 2020 की स्थितियों को बहाल करना होगा। दोनों सेनाएं उस बिंदु तक पीछे हटेंगी। अभी तक हालात ऐसे थे कि भारत-चीन के करीब 50,000 सैनिक (प्रति पक्ष) तैनात थे। वे हथियारबंद थे। तोपखाने के सामने तोपखाना तैनात था। टैंक के मुकाबले टैंक था। यह बराबर की तैनाती बेहद तनावपूर्ण थी। जून, 2020 में गलवान घाटी में चीन ने एकतरफा हमला किया, जिसमें भारत के 20 जांबाज सैनिक 'शहीद' हुए, लेकिन भारत ने जल्द ही पलटवार किया और चीन के 40-45 सैनिक ढेर कर दिए। अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों और सूचना-तंत्र ने इस पलटवार के खुलासे किए। रूस ने भी दुनिया के सामने स्पष्ट किया कि चीन के सैनिक मारे गए हैं। यह दीगर है कि चीन ने आज तक इसे स्वीकार नहीं किया। लद्दाख के टकराव और तनावग्रस्त माहौल में गलवान ही निर्णायक बिंदु साबित हुआ। अंततः चीन ने महसूस किया कि वह इस बार के युद्ध में भारत से जीत नहीं सकेगा। भारत अब सैन्य स्तर पर ताकतवर देश बन चुका है। चीन के सैनिकों ने डोकलाम पठार के टकराव में भी भारत की ताकत का अनुभव कर लिया था। लद्दाख क्षेत्र में कुछ और टकराव भी हुए, जिनमें हमारे सैनिकों ने चीनियों को जमकर पीटा और उसके कब्जाई मंसूबों को नाकाम कर दिया। कमाल की बात यह है कि एक ओर युद्ध-सी स्थितियां थीं, लेकिन दूसरी तरफ चीन भारत का सबसे बड़ा कारोबारी साझेदार बना रहा। हालांकि वह कारोबार निरंतर घाटे का रहा है। आयात-निर्यात में व्यापक असमानताएं हैं। बहरहाल तमिलनाडु के महाबलीपुरम में 2019 में प्रधानमंत्री मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच आखिरी द्विपक्षीय बातचीत हुई थी। चूंकि अब महत्वपूर्ण समझौता हुआ है और उसकी प्रक्रिया चरणबद्ध रूप से शुरू होगी, लिहाजा रूस में 'ब्रिक्स शिखर सम्मेलन' के दौरान भारत और चीन के शीर्ष नेताओं के दरमियान एक बार फिर द्विपक्षीय संवाद हुआ है, तो फिलहाल मानना चाहिए कि पांच साल तक जीम रही बर्फ अब पिघलने लगी है। यह वैश्विक स्तर पर युद्ध और घोर तनाव का दौर है।

कांग्रेस भ्रष्टाचार की जननी पार्टी है : भजनलाल शर्मा

झुंझुनू (हिंस)। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुरुवार झुंझुनू विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी राजेन्द्र भाम्भू के पक्ष में हुई नामांकन सभा में भाजपा सरकार की उपलब्धियां गिनाते हुए कांग्रेस पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि झुंझुनू किसान और जवान की धरती है। भामाशाहों की धरती है। यहां से जाकर लोगों ने देश-दुनिया में नाम कमाया। उन्होंने कहा कि झुंझुनू की धरती अपनी मेहनत पर चलती है। यहां के लोगों ने दुनिया में यह साबित कर के दिखाया है। यहां का जवान हमारी सरहद पर भारत मां की रक्षा कर रहा है। हमारा किसान धरती का सीना चीर कर हमारे देश की 140 करोड़ जानता का पेट पाल रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में झुंझुनू ने अलग पहचान बनाई है। आप किसे अपना प्रतिनिधि बनाएं, यह देखना चाहिए। उन्होंने कांग्रेस पर हमला करते हुए कहा वे लोग हमेशा जातिवाद, तुष्टीकरण और भ्रष्टाचार की बात करते हैं। देश को कांग्रेस ने बर्बाद किया है। वह भ्रष्टाचार की जननी है। चुनाव आते ही तुष्टीकरण और जातिवाद, धर्मवाद की बात करती है। देश के प्रधानमंत्री ने किसान निधि सम्मान दिया। क्या उन्होंने कभी जाति और धर्म पूछा? क्या किसान सम्मान निधि जाति और धर्म के आधार पर मिलती है? उन्होंने कहा खाद्य सुरक्षा जाति के आधार पर मिलती है? किसानों को बिजली के कनेक्शन जाति के आधार पर मिलते हैं? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश की 140 करोड़ जनता के लिए काम करते हैं। हम राजस्थान की 8 करोड़ जनता के लिए काम करते हैं। प्रदेश की 200 विधानसभा में कोई यह नहीं कह सकता कि जहां जरूरत थी, वहां हमने बजट नहीं दिया। कांग्रेस वहीं बजट देती है जहां उनका प्रतिनिधि होता है। जहां दूसरे दल का विधायक हो, वहां बजट नहीं देती। हमने भेदभाव नहीं किया। संकल्प पत्र में जो वादा किया वो बजट हमने 200 विधानसभा में दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि 50 साल के बाद अगर किसी ने यमुना जल का एमओयू करवाया तो वह भाजपा है। हम कांग्रेस की तरह झूठे वादे नहीं करते। आलू से सोना पैदा नहीं कर सकते, अगर शेखावाटी की धरती को पानी मिलेगा तो यह धरती सोना उगलेगी। कांग्रेस ने हरियाणा में अपने घोषणा पत्र में लिखा कि अगर हमारी सरकार बनी तो हम राजस्थान और हरियाणा के बीच यमुना जल को लेकर हुआ एमओयू रद्द कर देंगे। उनकी यह नीति थी कि शेखावाटी को यमुना का पानी नहीं मिले। अब ये लोग किसी मुंह से वोट मांगने आ रहे है। इनमें ताकत नहीं है कि यह शेखावाटी के पानी को रोक दें, वे कुछ नहीं कर पाएंगे, मै विश्वास दिलाता हूं। आने वाले समय में शेखावाटी को यमुना का पानी मिलेगा। उन्होने कहा हम गरीब को गणेश मानकर पूजते हैं। हमारे 10 महीने का काम देखिए, परखिए। झुंझुनूं के युवा सुबह 4 बजे उठकर सड़क पर दौड़ते हैं। उनकी इच्छा के अनुरूप ही हम काम रहे हैं। हमने युवाओं से वादा किया है कि सरकारी तौर पर 4 लाख भर्तियां करेंगे। 33 हजार को हमने नियुक्ति पत्र दे दिया है। अब देखते जाइए, कलैंडर भी निकाल दिया और कैबिनेट ने 90 हजार वैकेंसी को स्वीकृत करने का काम किया है। उन्होंने कहा मैंने पेपर लीक करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की बात कही थी। इनको छोडेंगे नहीं, संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। कई सलाखों के अंदर हैं। कोई बचने वाला नहीं है। जिन्होंने युवाओं के साथ घात किया, उनको छोड़ने वाले नहीं हैं। उन्होने कहा कि आने वाले समय में किसानों को दिन में बिजली देंगे। 2027 तक राजस्थान को बिजली के मामले में आत्मनिर्भर बना लेंगे। दिन में बिजली आएगी तो रात में खेत में जाने की जरूरत नहीं पडेगी। 2 लाख 24 हजार करोड़ रुपए के बिजली के एमआयू किए हैं। कैबिनेट ने पास कर दिया, जमीन अलॉट हो गई, काम शुरू हो रहा है। झुंझुनू के विकास के लिए आने वाले 13 नवंबर को कमल के फूल पर मोहर लगाकर राजेन्द्र भांबू को जिता कर विधानसभा भेजें। केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा झुंझुनू विधानसभा के उपचुनाव के सर्वे में भारतीय जनता पार्टी जीत रही है। प्रदेश में डबल इंजन की सरकार है। केंद्र में नरेंद्र मोदी का नेतृत्व और राजस्थान में भजनलाल सरकार का नेतृत्व है। डबल इंजन की सरकार में विधायक झुंझुनूं का होगा तो काम ज्यादा होगा। कांग्रेस का विधायक क्या करेगा? झुंझुनू विधानसभा में कांग्रेस के खिलाफ माहौल है। इस वातावरण का लाभ लेना है। राजेन्द्र भांबू ही ज्यादा काम करवा सकते हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद मदन राठौड़ ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने इतने भ्रष्टाचार किए कि हर दिन गाथाएं पढ़ने-सुनने को मिलती थीं। 2जी स्पेक्ट्रम, पनडुब्बी घोटाल, कोयला, चारा घोटाला। न जाने कैसे-कैसे घोटाले किए। जब से नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने है, हिंदुस्तान में कोई घोटाला नहीं हुआ। हमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद देना चाहिए। पिछली कांग्रेस सरकार आपस में लड़ती रही। मुख्यमंत्री कुर्सी बचाने में तो उपमुख्यमंत्री हटाने में लगे रहे। पांच साल तक ये लड़ते रहे। लेकिन झुंझुनू में देखा कि टिकट की अपेक्षा रखने वाले ने कैसे त्याग कर दिया। ये चीजें आपको भारतीय जनता पार्टी में देखने को मिलेंगी। घोटाले करने वाले और जनता के गाढ़े पसीने की कमाई का पूरा उपयोग आपके विकास में लगाने वाले को अगर आप एक नजर से देखोगे तो घोटाले करने वालों का हौसला बढ़ेगा। घोटालों पर अंकुश लगाने वाला निराश हो जाएगा।

आईआईटी जोधपुर का दीक्षांत समारोह 26 को, उपराष्ट्रपति आएंगे

जोधपुर (हिंस)। आईआईटी जोधपुर का दसवां दीक्षांत समारोह 26 अक्तूबर को आयोजित किया जाएगा। आईआईटी परिसर में होने वाले दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ होंगे जबकि समारोह की अध्यक्षता शासक मंडल आईआईटी जोधपुर एएस किरण कुमार करेंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में केन्द्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत और इंडिया फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. राम माधव मौजूद रहेंगे। आईआईटी जोधपुर के निदेशक प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल ने बताया कि इस दसवें दीक्षांत समारोह में एक हजार स्टूडेंट्स को डिग्रियां, मेडल दिए जाएंगे। कार्यक्रम दोपहर साढ़े तीन बजे शुरू होगा जिसमें संस्थान का प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किया जाएगा। समारोह में बी टेक, स्नातकोतर और पीएचडी स्नातकों को पदक एवं पुरस्कार वितरण किया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान एआईओटी फैब एवं इलेक्ट्रॉनिक निर्माण इकाई और फैकल्टी एवं स्टाफ आवासीय परिसर का उद्घाटन ऑनलाइन व्यवस्था से मंच से किया जाएगा। निदेशक प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल ने बताया कि वर्तमान में जोधपुर आईआईटी देश की आईआईटी में 28वें पायदान पर है जिसको पांचवें स्थान पर पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा। इसके लिए वो आईआईटी जोधपुर में इंफ्रास्ट्रैक्चर को बढ़ाने के साथ ढाई हजार स्टूडेंट की संख्या को बढ़ाकर पांच हजार तक पहुंचाएंगे। उन्होने कहा कि आईआईटी का काम देश और प्रदेश के विकास के लिए नए आविष्कार और योजनाओं को बनाना है।

प्रियंका गांधी, वेणुगोपाल और रॉबर्ट वाड्रा के साथ अचानक जयपुर पहुंचे राहुल गांधी

जयपुर (हिंस)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव केसी वेणुगोपाल और वायनाड से कांग्रेस पार्टी की उम्मीदवार प्रियंका गांधी अपने पति रॉबर्ट वाड्रा और बेटे रिहान वाड्रा के साथ बुधवार रात को विशेष विमान से जयपुर पहुंचे। इस दौरान जयपुर एयरपोर्ट पर कॉफी पीने के बाद राहुल गांधी प्रियंका गांधी, केसी वेणुगोपाल और रॉबर्ट वाड्रा के साथ दिल्ली रवाना हो गए। जबकि रिहान अपने निजी कार्य के चलते जयपुर ही रुक गए। दरअसल, बुधवार को वायनाड में लोकसभा उपचुनाव के लिए अपना नामांकन दाखिल करने के बाद प्रियंका गांधी केरल के कालीकट एयरपोर्ट से विशेष विमान के जरिए पति रॉबर्ट वाड्रा, बेटे रिहान वाड्रा, भाई और लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव केसी वेणुगोपाल के साथ रात साढ़े आठ बजे विशेष विमान से जयपुर एयरपोर्ट पर पहुंची थी। जहां सभी के लिए एयरपोर्ट स्टाफ की ओर से काफी भेजी गई। इसके बाद रिहान वाड्रा जयपुर ही उतर गए। वहीं सभी यात्री विशेष विमान से दिल्ली रवाना हो गए। अचानक राहुल गांधी के जयपुर आने की खबर के बाद सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट मोड पर आ गई। इस दौरान सुरक्षा कर्मियों के साथ पुलिस एस्कॉर्ट भी एयरपोर्ट पर तैनात की गई लेकिन राहुल गांधी प्लेन से भी नहीं उतरे और दिल्ली के लिए रवाना हो गए।

एक्ट्रेस कंगना रनौत पहुंची चित्तौड़, परिवार के साथ किया दुर्ग भ्रमण

चित्तौड़गढ़ (हिंस)। हिमाचल प्रदेश की मंडी से सांसद एवं फिल्म एक्ट्रेस कंगना रनौट गुरुवार शाम चित्तौड़गढ़ पहुंची। यहां उन्होंने चित्तौड़ दुर्ग का भ्रमण कर ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी ली। एक्ट्रेस कंगना रनौट उदयपुर से चित्तौड़गढ़ पहुंची थी। सड़क मार्ग से वह परिवार के साथ चित्तौड़गढ़ आई। कड़ी सुरक्षा के बीच रनौट ने दुर्ग भ्रमण किया। इससे पहले रनौट ने उदयपुर से चित्तौड़गढ़ आने के दौरान मार्ग में मंगलवाड़ चौराहे पर स्थित शर्मा भोजनालय पर राजस्थानी भोजन दाल-बाटी का जायका भी लिया। जानकारी में सामने आया कि सांसद एवं फिल्म एक्ट्रेस कंगना रनौट परिवार के साथ इन दिनों मेवाड़ भ्रमण पर आई हुई है। उदयपुर भ्रमण के बाद गुरुवार को वह परिवार के साथ चित्तौड़गढ़ के लिए रवाना हुई। मार्ग में उन्होंने मांगलवाड़ चौराहा पर राजस्थानी भोजन दाल बाटी खाई। इस दौरान भी कई लोग मौके पर जुट गए। फिल्म एक्ट्रेस ने साथ चल रहे सुरक्षाकर्मियों से कंगना रनौट ने राजस्थानी भोजन दाल-बाटी के बारे में पूछा था। उदयपुर से चित्तौड़गढ़ के मध्य मंगलवार चौराहे पर स्थित होटल पर इन्होंने दाल-बाटी का जायका लिया। एक्ट्रेस कंगना रनौट शाम को चित्तौड़गढ़ पहुंची। यहां सबसे पहले उन्होंने कुम्भामहल देखा। स्थानीय गाइड से उन्होंने चित्तौड़गढ़ के गौरवशाली इतिहास के बारे में जानकारी ली। कुंभामहल महल में करीब 15 से 20 मिनट तक भ्रमण के बाद वह विजय स्तंभ पहुंची। इस दौरान अन्य पर्यटकों के साथ भी फोटो खिंचवाए। बाद में उन्होंने विजय स्तंभ का भ्रमण किया। शाम को अंधेरा होने के कारण वे पूरे दुर्ग का भ्रमण नहीं कर पाई। लेकिन जाने से पहले मीरा मंदिर तथा कुंभ श्याम मंदिर के दर्शन किए और यहां के इतिहास के बारे में जानकारी ली। करीब 15 मिनट मीरा मंदिर एवं कुंभ श्याम मंदिर में रुकी। इस दौरान सभी परिवारजन भी साथ थे। सुरक्षा के लहजे से कड़े बंदोबस्त रहे। इधर, आरटीडीसी चितौड़गढ़ के मैनेजर रविंद्र चतुर्वेदी ने फिल्म एक्ट्रेस से बात की। चतुर्वेदी ने आरटीडीसी की ओर से संचालित लाइट एंड साउंड शो के बारे में बताते हुए शो में आने का आग्रह किया। इसके अलावा आरटीडीसी की होटल पन्ना के बारे में भी जानकारी दी। इस पर एक्ट्रेस कंगना रनौत ने आज जल्दी में होने तथा भविष्य में चित्तौड़गढ़ आकर पूरे दुर्ग भ्रमण के दौरान आरटीडीसी की सेवाएं लेने का आश्वासन दिया। एक्ट्रेस कंगना रनौट विजय स्तंभ के यहां रुकी थी। इनके वाहन के काफिले को विजय स्तम्भ के पास तक ले जाया गया था। यहां पुन: कार में बैठने के दौरान काफी लोग विजय स्तम्भ के यहां खड़े होकर फोटो और वीडियो बना रहे थे।

आरोपी को पकड़ने गई पुलिस टीम से हाथापाई, सब इंस्पेक्टर सहित पांच घायल

फरीदाबाद (हिंस)। जिले के थाना भूपानी क्षेत्र में आर्म्स एक्ट में वांछित आरोपी को पकड़ने गई सीआईए टीम के साथ आरोपी के परिजनों ने हाथापाई की, जिसमें सब इंस्पेक्टर सहित पांच सिपाहियों को चोट आई है। परिजनों के हमलों के दौरान आरोपी मौके से भाग जाने में सफल रहा। पुलिस ने हमला करने वालों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस प्रवक्ता ने गुरुवार को बताया कि आर्म्स एक्ट में वांछित आरोपी जतिन उर्फ जीतू जो पिछले काफी समय से फरार चल रहा है। सीआईए टीम के सब इंस्पेक्टर सत्यवान ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर सीआईए की टीम भूपानी गांव में रेड करने गई थी। आरोपी जतिन उर्फ जीतू गांव में एक कपड़े की दुकान पर बैठा हुआ था, जैसे ही टीम दुकान पर पहुंच कर उससे पूछताछ की, तो उसने अपना नाम बताते हुए कहा, मैं ही जीतू हूं और यह कह कर अपने घर की ओर भागा। घर के पास पुलिस ने आरोपी जतिन पकड़ लिया। इस पर आरोपी जोर-जोर से चिल्लाने लगा। चिल्लाने की आवाज सुनकर उसके घर से एक बुजुर्ग और एक महिला बाहर आए और जतिन को पुलिस से छुड़वाने की कोशिश करने लगे।

पंजाब : तस्करों की मदद के आरोप में महिला पुलिस अधिकारी के खिलाफ मुकदमा

चंडीगढ़ (हिंस)। पंजाब पुलिस ने अफीम तस्करों की मदद करने के आरोप में मोगा जिले में तैनात महिला पुलिस अधिकारी समेत दो अन्य पुलिस कर्मियों के विरुद्ध मामला दर्ज किया है। महिला पुलिस अधिकारी पंजाब में उस समय सुर्खियों में आई जब वह कोरोना को हरा कर ड्यूटी पर आई थी, तब तत्कालीन मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने उनके साथ वीडियो कॉल पर बातचीत की थी। जिस महिला अधिकारी अर्शदीप कौर के विरुद्ध मामला दर्ज किया गया है वह इस समय पंजाब के मोगा जिले के अंतर्गत आते कोट ईस्से खां पुलिस थाने में बतौर थाना प्रभारी तैनात है। पंजाब पुलिस ने बुधवार रात ही एक पूर्व विधायिका को नशा तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इस मामले में फिलहाल इंस्पेक्टर अर्शप्रीत कौर ग्रेवाल, मुंशी गुरप्रीत सिंह, चौकी इंचार्ज बलखंडी, अफीम तस्कर मनप्रीत सिंह और गुरप्रीत सिंह के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पुलिस के सीनियर अधिकारी इस मामले की गहनता से जांच कर रहे हैं। आरोपी पुलिस कर्मियों के पिछले रिकार्ड भी खंगाले जा रहे हैं। जानकारी के अनुसार एक अक्तूबर को पुलिस ने अमरजीत सिंह निवासी दातेवाल रोड कोट ईस्से खां के खिलाफ 2 किलो अफीम बरामदगी का आपराधिक मामला दर्ज किया था, जबकि उसके भाइयों से भी 3 किलो अफीम बरामद हुई थी। तीनों पुलिस कर्मियों ने किसी प्राइवेट व्यक्ति के जरिए 8 लाख रुपए में सौदा करके 5 लाख रुपए लेकर छोड़ दिया था। अर्शप्रीत कौर का लुधियाना से काफी नाता रहा है। अधिकतर समय अर्शप्रीत ने लुधियाना में ही ड्यूटी की है। थाना बस्ती जोधेवाल और डिवीजन नंबर 2 में बतौर थाना प्रभारी काम किया है। कोरोना काल में तत्कालीन पुलिस महानिदेशक दिनकर गुप्ता ने अर्शप्रीत के नाम से पोस्ट भी शेयर किया था कि लोग कोविड से डरे नहीं।

योगी सरकार ने निभाया प्रदेश के 56 लाख बुजुर्गों से किया वादा : वृद्धावस्था

पेंशन योजना के माध्यम से गरीब बुजुर्गों का आर्थिक सशक्तीकरण कर रही योगी सरकार

लखनऊ (हिंस)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के 56 लाख गरीब बुजुर्गों को वृद्धावस्था पेंशन देने का अपना वादा पूरा कर दिया है। वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में ही 56 लाख गरीब बुजुर्गों के खाते में 1000 रुपए प्रतिमाह की दर से पेंशन उनके खाते में जा चुकी है। मुख्यमंत्री योगी ने अपनी जनकल्याणकारी नीतियों से प्रदेश के हर वर्ग के प्रगति का खाका खींचा है। यही वजह है कि उत्तर प्रदेश आज प्रगति की राह पर तेजी से दौड़ रहा है। मुख्यमंत्री योगी की योजनाओं में प्रदेश के बुजुर्गों का भी पूरा ध्यान रखा गया है। प्रदेश के नागरिकों को बुढ़ापे में किसी पर निर्भर न रहना पड़े, इसके लिए योगी सरकार वृद्धावस्था पेंशन योजना माध्यम से उनका आर्थिक सशक्तीकरण कर रही है। योगी सरकार की इस पहल का उद्देश्य बुजुर्गों को आर्थिक सहायता प्रदान करना है ताकि वे अपने जीवन के अंतिम वर्षों में वित्तीय परेशानियों से जूझने को मजबूर न हो और गरिमा व सम्मान के साथ जीवन जी सकें। मुख्यमंत्री योगी के निर्देश पर शासन ने विभागीय अधिकारियों को विकासखंड और ग्राम पंचायत स्तर के माध्यम से वृद्धों को चिन्हित करने का निर्देश दिया था। कहा गया था कि अगर तय लक्ष्य से ज्यादा पात्र वृद्ध अगर मिलते हैं तो उन्हें भी इस योजना का लाभ मिलेगा। यह मुख्यमंत्री योगी की कार्यशैली और समाज कल्याण विभाग की सक्रियता का नतीजा है कि चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में ही तय लक्ष्य को प्राप्त कर लिया गया है। गरीब बुजुर्गों का ख्याल रख रही योगी सरकार प्रदेश में बुजुर्गों के लिए यह योजना एक वरदान साबित हो रही है। वृद्धावस्था पेंशन योजना के तहत 60 वर्ष से अधिक उम्र के आर्थिक रूप से कमजोर वृद्धजनों को हर महीने 1000 रुपयेकी पेंशन का लाभ मिल रहा है, जिससे उनके जीवन-यापन में सहायता मिल रही है। आंकड़ों के अनुसार, 2023-24 में 55, 68, 590 वृद्धजनों को इस योजना का लाभ मिला है और इस पर कुल 6, 46, 434.06 लाख की धनराशि खर्च हो चुकी है। वहीं वर्ष 2024-25 के पहली तिमाही में 55, 99, 997 लाख लाभार्थियों के खाते में 1, 67, 975 लाख सीधे हस्तांतरित किए जा चुके हैं। डिजिटल और पारदर्शी प्रक्रिया से तहत पात्र बुजुर्गों को मिल रहा लाभ योगी सरकार द्वारा वृद्धजनों तक योजना का लाभ पहुंचाने के लिए पूरी प्रक्रिया को डिजिटल और पारदर्शी बनाया गया है। अब कोई भी पात्र व्यक्ति योजना का लाभ पाने के लिए उत्तर प्रदेश के समाज कल्याण विभाग की वेबसाइट पर जाकर आवेदन कर सकता है। इससे सरकारी दफ्तरों के चक्कर काटने की आवश्यकता नहीं होती। आवेदन की पुष्टि ग्रामीण क्षेत्रों में खंड विकास अधिकारी और शहरी क्षेत्रों में उप जिलाधिकारी द्वारा की जाती है।

तीन तलाक देकर व मारपीट कर घर से निकालने के आरोप में पांच पर मुकदमा

मुरादाबाद (हिंस)। थाना भोजपुर क्षेत्र निवासी इरशाद ने थाना पुलिस को दी तहरीर में आरोप लगाते हुए बताया कि उसकी बेटी के सुसराल वाले उसकी बेटी का निकाह के बाद से ही दहेज की मांग को लेकर उत्पीड़न कर रहे हैं। दस दिन पूर्व उसके पति ने तीन तलाक देकर व मारपीट कर घर से निकाल दिया। मामले में थाना पुलिस ने आरोपी पति, सास-ससुर समेत पांच के खिलाफ गुरुवार को मुकदमा दर्ज कर लिया। इरशाद ने थाना भोजपुर पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उसकी पुत्री तमन्ना सिद्दीकी का निकाह 4 वर्ष पूर्व भोजपुर क्षेत्र के गांव बीवी मुस्तापुर में दाऊद के साथ किया था। शादी के समय उसने अपनी क्षमता के के अनुसार दान दहेज भी दिया था। इरशाद ने आरोप लगाया कि निकाह के बाद से ही पुत्री को उसका पति व अन्य ससुराल वाले दहेज के लिए प्रताड़ित करने लगे थे। दस दिन पूर्व उसके पति ने तीन तलाक देकर व मारपीट कर घर से निकाल दिया। थाना भोजपुर के प्रभारी निरीक्षक शरद मलिक ने बताया कि शिकायतकर्ता इरशाद की तहरीर के आधार तम्मन्ना के पति दाऊद, ससुर इकबाल, सास मैसर जहां, ननद जन्नत व देवर चांद के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हिंदू संगठनों ने डीएम को आवेदन सौंप धार्मिक उन्माद फैलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की

अररिया (हिंस)। अररिया मुख्यालय में बुधवार को उपद्रवी तत्वों के द्वारा दिनभर फैलाए गए अराजकता और धार्मिक उन्माद फैलाने की कोशिश करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर गुरुवार विभिन्न हिंदू संगठन के प्रतिनिधियों ने जिला प्रशासन से उपद्रवी की शिनाख्त कर सख्त से सख्त कानूनी कार्रवाई की मांग की। डीएम को सौंपे गए आवेदन में उपद्रवी तत्वों के द्वारा राष्ट्रीय ध्वज के अपमान सहित काली मंदिर चौक एवं चांदनी चौक पर लाठी डंडा, फरसा के साथ किए गए प्रदर्शन पर नाराजगी जाहिर की गई। बस स्टैंड संकटमोचन मंदिर के पास आगजनी और धर्म विशेष को लेकर लगाए गए नारे, दुकानों में तोड़फोड़ और पथराव करने वालों पर सख्त कार्रवाई की मांग की। धार्मिक बैनरों के फाड़ने जैसी कार्रवाई को आवेदन में दंगा भड़काने वाला प्रयास करार दिया। डीएम अनिल कुमार ने आवेदन लेते हुए प्रतिनिधियों को आश्वस्त किया कि जिला प्रशासन सब पर नजर बनाए हुए है और उपद्रवी तत्वों की शिनाख्त कर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। डीएम ने कहा कि कानून तोड़ने और हाथ में लेने वालों के खिलाफ विधि सम्मत कार्रवाई की जाएगी। डीएम को दिए आवेदन में हस्ताक्षरित एवं मिलने वाले प्रतिनिधियों में विश्व हिंदू परिषद के जिला मंत्री शुभम चौधरी, सीमा जागरण मंच के विनोद शुक्ला, संकटमोचन मंदिर के सिद्धार्थ कुमार, बजरंग दल के हर्ष आनंद कुमार, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राजकिशोर शामिल है।

महाकुंभ में स्पीड बोट और मिनी क्रूज से मिनटों में संगम पहुंचेंगे श्रद्धालु

यूपी टूरिज्म की ओर से मिनी क्रूज और स्पीड बोट की सुविधा त्रिवेणी बोट क्लब से

प्रयागराज (हिंस)। संगमनगरी में महाकुंभ को श्रद्धालुओं के लिए सुगम और सरल बनाने की तैयारियां पूरे जोर पर हैं। मेला प्राधिकरण, जिला प्रशासन और नगरीय निकाय के सभी विभाग योगी सरकार के निर्देशों के मुताबिक दिव्य, भव्य, नव्य महाकुंभ को साकार करने में जुटे हुए हैं। यूपी टूरिज्म श्रद्धालुओं और स्नानार्थियों को विशेष सुविधा देने जा रहा है। पहली बार यूपी टूरिज्म की ओर से मिनी क्रूज और स्पीड बोट की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी। श्रद्धालु त्रिवेणी बोट क्लब से संगम स्नान के लिए मिनी क्रूज या स्पीड बोट की सुविधा ले सकेंगे। पर्यटन विभाग की इस सेवा का उद्देश्य श्रद्धालुओं को सुगम तरीके से संगम स्नान करवाना है। सीएम योगी के निर्देशों के मुताबिक महाकुंभ में संगम स्नान को अत्यधिक सुविधाजनक और सुगम बनाने की दिशा में पर्यटन विभाग महत्वपूर्ण प्रयास कर रहा है। पर्यटन अधिकारी अपराजिता सिंह ने बताया कि पर्यटन विभाग महाकुंभ में पहली बार संगम स्नान के लिए मिनी क्रूज और स्पीड बोट की सुविधा उपलब्ध करवा रहा है। ये सुविधा दिसम्बर 2023 से चल रही है, लेकिन महाकुंभ में पर्यटन विभाग पहली बार ये सेवा प्रदान करेगा। उन्होंने बताया कि यूपीएसटीडीसी की वाटर स्पोर्ट्स की सुविधा का उद्घाटन सीएम योगी ने ही किया था। इसके माध्यम से त्रिवेणी बोट क्लब से संगम तक की यात्रा कुछ मिनटों में ही पूरी की जा सकेगी। यमुना बैंक रोड स्थित त्रिवेणी बोट क्लब से ये सुविधा सामान्य दिनों में भी दी जा रही है। इसका मुख्य उद्देश्य बोट क्लब के पास बने हेलीपैड से आने वाले विदेशी व विशिष्ट श्रद्धालुओं को आसानी से संगम तक पहुंचाना है। त्रिवेणी बोट क्लब हेलीपैड से वॉकिंग डिस्टेंस पर स्थित है। त्रिवेणी बोट क्लब के संचालक दीपक टंडन ने बताया कि अभी बोट क्लब में 6 सिक्स सीटर स्पीड बोट, 2 थर्टी फाइव सीटर मिनी क्रूज और 2 रेस्क्यू बोट हैं। स्पीड बोट का किराया 200 रुपए प्रति व्यक्ति या 2000 रुपए प्रति घंटा है, जबकि मिनी क्रूज 150 रुपए प्रति व्यक्ति या 5000 रुपए प्रति घंटे के किराया पर लिया जा सकता है। दोनों ही बोट को पूरी तरह से फेमिली के लिए बुक भी करवाया जा सकता है। मिनी क्रूज में महिलाओं के कपड़े बदलने के लिए केबिन भी बना है। संगम स्नान के अलावा बोट क्लब पर्यटकों को यमुना की सैर और सुजावन देव मंदिर की यात्रा भी करवाता है। महाकुंभ के दौरान स्पीड बोट की संख्या बढ़ाने का भी प्रयास हो रहा है। इस प्रकार की सुविधा पहले यमुना बोट क्लब, पीडीए भी उपलब्ध करवाता रहा है। पर्यटन विभाग की ओर से पहली बार स्पीड बोट और मिनी क्रूज से संगम स्नान का लाभ श्रद्धालु ले सकेंगे।

केंद्रीय वित्त मंत्री सीतारमण ने विश्व बैंक अध्यक्ष से मुलाकात में एमडीबी सुधारों पर की चर्चा

वाशिंगटन/नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा से मुलाकात की। इस दौरान दोनों ने यहां वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं में निजी पूंजी की भागीदारी से संबंधित मुद्दों, ऊर्जा सुरक्षा और बहुपक्षीय विकास बैंकों (एमडीबीएस) में सुधार पर चर्चा की।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को यहां विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की वार्षिक बैठकों से इतर विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा से मुलाकात की और अन्य मुद्दों के अलावा एमडीबीएस में सुधार पर चर्चा की। वित्त मंत्री ने कहा कि वह विश्व बैंक द्वारा भारत की जी-20 अध्यक्षता से एमडीबी सुधारों पर आईईजी की सिफारिशों को आगे बढ़ाने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही हैं। उन्होंने भविष्य में सिफारिशों के कार्यान्वयन पर नियमित निगरानी का भी अनुरोध किया। सीतारमण ने बैठक के दौरान ब्रेटन वुड्स संस्थानों के 80 साल पूरा होने पर चर्चा के लिए विश्व बैंक तथा आईएमएफ द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित सलाहकार तंत्र पर व्यापक परामर्श प्रक्रिया की जरूरतों को रेखांकित किया।

ब्रेटन वुड्स संस्थान, आईएमएफ और विश्व बैंक का एक समूह है। इस संस्था की स्थापना 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशायर के ब्रेटन वुड्स में एक सम्मेलन में की गई थी। विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा ने बैठक के दौरान आईईजी सिफारिशों पर पर्याप्त प्रगति का उल्लेख किया, जिन्हें जी20 में प्रस्तुत किया जाना है। उन्होंने डब्ल्यूबीजी के रोजगार, ज्ञान ढांचे, बैंक योग्य परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर दिया।

इसके साथ ही उन्होंने कौशल, जल और स्वच्छता तथा शहरी विकास सहित भारत की बजट प्राथमिकताओं के साथ सहयोग करने पर जोर दिया। भारत की जी-20 अध्यक्षता के दौरान 2023 में गठित स्वतंत्र विशेषज्ञ समूह (आईईजी) ने एमडीबी में सुधारों के 'ट्रिपल एजेंडे' की सिफारिश की थी। इस एजेंडे के तीन तत्व अत्यधिक गरीबी को खत्म करना, साझा समृद्धि को बढ़ावा देना और 2030 तक वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं के लिए सतत ऋण स्तर को तीन गुना बढ़ाने में योगदान देना तथा तीसरा वित्तपोषण तंत्र बनाना शामिल है। इसके अलावा एमडीबी एजेंडे के तत्वों का समर्थन करने के इच्छुक निवेशकों के साथ उद्देश्यपूर्ण ढंग से जुड़ने के लिए लचीली और नवीन व्यवस्था बनाना है।

न्यूज ब्रीफ

सर्राफा बाजार में 80 हजारी हुआ सोना, चांदी में भी तेजी जारी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में सोना एक और माइलस्टोन कर आज 80 हजार रुपये के स्तर को पार कर गया। सोने की कीमत आज 420 रुपये से 450 रुपये प्रति 10 ग्राम की तेजी दर्ज की गई है। इसी तरह चांदी की कीमत भी आज 2,000 रुपये प्रति किलोग्राम उछल गई है। सोने की कीमत में आई इस तेजी के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना आज 80,230 रुपये से लेकर 80,080 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 73,560 रुपये से लेकर 73,410 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। वहीं, चांदी के भाव में उछाल आने के कारण दिल्ली सर्राफा बाजार में ये चमकीली धातु आज 1,04,100 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 80,230 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 73,560 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 80,080 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 73,410 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 80,130 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 73,460 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 80,080 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 73,410 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 80,080 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 73,410 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

मुद्रास्फीति के स्थायी रूप से सही होने की स्थिति का इंतजार करना होगा: दास

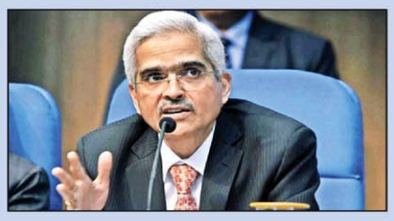

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि भारत मुद्रास्फीति की एक और लहर का जोखिम नहीं उठा सकता है। वर्तमान में सबसे अच्छा तरीका लचीला रहना होगा। केंद्रीय बैंक के लक्ष्य के साथ मुद्रास्फीति के स्थायी रूप से सही होने की स्थिति का इंतजार करना होगा। महीने की शुरुआत में हुई मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की बैठक का ब्योरा देते हुए दास ने कहा कि मौद्रिक नीति केवल मूल्य स्थिरता बनाए रखने से ही स्थायी विकास का समर्थन कर सकती है। मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) ने बेंचमार्क ब्याज दर को 6.5 फीसदी पर बनाए रखने का फैसला किया है, जो लगातार दसवीं बार है जब एमपीसी ने दरों में कोई बदलाव नहीं किया है। हालांकि, समिति ने अपनी स्थिति समायोजन की वापसी से तटस्थ में बदल दी है। एमपीसी की बैठक के ब्योरे के अनुसार दास ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था स्थिरता और ताकत की तस्वीर प्रस्तुत करती है और मुद्रास्फीति और विकास के बीच संतुलन अच्छी तरह से स्थापित है। उन्होंने कहा कि मुद्रास्फीति में निकट अवधि में बढ़ोतरी के बावजूद, साल के अंत में और अगले साल की शुरुआत में हेडलाइन मुद्रास्फीति का दृष्टिकोण 4 प्रतिशत लक्ष्य के साथ आगे बढ़ने की ओर इशारा करता है।

शिक्षा में निवेश के मामले में भारत ने कई पड़ोसी देशों को पछाड़ा

मुंबई। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने हाल ही में भारत की शिक्षा बजट में आवंटन को लेकर सराहना की है। रिपोर्ट के अनुसार, 2015 से 2024 के बीच भारत ने अपनी जीडीपी का 4.1 फीसदी से 4.6 फीसदी शिक्षा के लिए आवंटित किया है, जो शिक्षा 2030 फ्रेमवर्क फॉर एक्शन के निर्धारित अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप है। इस फ्रेमवर्क के तहत देशों को जीडीपी का 4-6 फीसदी शिक्षा के लिए खर्च करने की सिफारिश की गई है। यूनेस्को इंस्टीट्यूट फॉर स्टैटिस्टिक्स की नई रिपोर्ट के अनुसार, भारत का शिक्षा पर सरकारी खर्च इसी अवधि में 13.5 फीसदी से 17.2 फीसदी के बीच रहा है, जो एजुकेशन 2030 के लक्ष्य के अनुरूप है। यह लक्ष्य सरकारों को सार्वजनिक व्यय का 15-20 फीसदी शिक्षा में खर्च करने के लिए प्रोत्साहित करता है।रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत का शिक्षा निवेश अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बना हुआ है और वह अपने पड़ोसी देशों की तुलना में अधिक निवेश कर रहा है। नेपाल और भूटान जैसे देशों के विपरीत, जहां जीडीपी का 4-6 फीसदी शिक्षा पर खर्च होता है, भारत का खर्च जीडीपी और सरकारी व्यय के प्रतिशत के मामले में अफगानिस्तान और पाकिस्तान से कहीं अधिक है। रिपोर्ट में इस बात पर रोशनी डाली गई है कि कुल खर्च के प्रतिशत के रूप में, विश्व औसत में गिरावट आ रही है।

बिजनेस रोड शो : बिहार में करें बिजनेस करने दिया आमंत्रण

बिहार सरकार ने लुधियाना में इन्वेस्टर समिट का किया भव्य आयोजन

पटना। बिहार सरकार ने लुधियाना में एक विशेष बिजनेस रोड शो का आयोजन गुरुवार को किया, जो निवेश आकर्षित करने और औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के उसके महत्वाकांक्षी प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। यह कार्यक्रम बहुप्रतीक्षित बिहार बिजनेस कनेक्ट 2024 - ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य टेक्सटाइल, खाद्य प्रसंस्करण और सामान्य निर्माण जैसे विभिन्न क्षेत्रों में बिहार की विशाल संभावनाओं को प्रदर्शित करना है।

यह समिट बिजनेस टू गवर्नमेंट (बी2जी) दृष्टिकोण के तहत आयोजित की गई, जिसमें उद्योग क्षेत्र के प्रमुख लीडर्स जैसे नाहर ग्रुप के प्रबंध निदेशक श्री कमल ओसवाल, कैंडेक्स फिलामेंट के प्रबंध निदेशक राकेश गोयल इत्यादि ने भाग लिया। बिहार सरकार के उद्योग विभाग ने लुधियाना में इस प्रभावशाली निवेशक समिट की मेजबानी की, जिसमें उद्योग विभाग की सचिव वंदना प्रेयसी और उद्योग निदेशक सहित अन्य संबंधित अधिकारियों की उपस्थिति रही। यह रोड शो निवेश को बढ़ावा देने और बिहार की निवेशक-अनुकूल नीतियों को बताने के लिए आयोजित किया गया था।

निवेशक सम्मेलन' (बिहार की संभावनाओं को खोलना-nlocking Bihar's Potential: Investor Summit) शीर्षक से आयोजित इस रोड शो का उद्देश्य उभरते अवसरों, इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं और आकर्षक नीतियों को प्रस्तुत करना था, जो बिहार को निवेशकों के लिए एक प्रमुख गंतव्य बनाते हैं। उद्योग विभाग की सचिव वंदना प्रेयसी ने निवेशकों के साथ बातचीत करके बिहार में निवेश के व्यापक लाभों पर चर्चा की। इसके साथ ही, उद्योग निदेशक और अन्य अधिकारियों ने मेगा फूड पार्क का दौरा भी किया।

इस दौरान उन्होंने देखा कि मेगा फूड पार्क किस प्रकार से स्थानीय किसानों, उद्यमियों और उद्योगों को एक साथ लाकर कृषि-आधारित उद्योगों को प्रोत्साहित कर रहा है। साथ ही वहां की कार्य इकाइयों और पंजाब सरकार द्वारा दी गई सुविधाओं का अवलोकन भी किया। पंजाब एग्रो इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन द्वारा विकसित यह पार्क खाद्य प्रसंस्करण उद्यमियों के लिए एक प्रमुख केंद्र है, जो प्लॉटेड एरिया, एमएसएमई शेड, और कोर प्रोसेसिंग इंफ्रास्ट्रक्चर जैसी अनेक सुविधाएं प्रदान करता है।

इस मौके पर नाहर ग्रुप के प्रबंध निदेशक कमल ओसवाल ने कहा, नाहर ग्रुप, मुम्बई में 20 मिलियन वर्ग फीट से अधिक विकसित परियोजनाओं के साथ रियल एस्टेट में अग्रणी है, जिसने शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, रिटेल, हॉस्पिटैलिटी, एंटरटेनमेंट और बिजनेस सेंटर्स जैसे क्षेत्रों में सफलतापूर्वक विविधता लाई है। बिहार में दो कपड़ा इकाइयों का संचालन करते हुए, हमें राज्य सरकार से असाधारण समर्थन मिला है। उपलब्ध सुविधाएं और कुशल श्रम शक्ति बिहार को हमारे बहुमुखी संचालन के विस्तार के लिए आदर्श स्थान बनाती है।

कैंडेक्स फिलामेंट के प्रबंध निदेशक राकेश गोयल ने कहा, बिहार का कपड़ा उद्योगतेजी से आगे बढ़ रहा है। राज्य की सक्रिय नीतियों ने व्यापार विस्तार के लिए आदर्श वातावरण तैयार किया है। लुधियाना रोड शो इन आशाजनक अवसरों को बताने के लिए एक बेहतरीन मंच के रूप में काम आया। हम बिहार में सामान्य विनिर्माण क्षमताओं के विस्तार में अपार संभावनाएं देखते हैं, जिससे राज्य के रणनीतिक लाभों और सहायक इन्फ्रास्ट्रक्चर का लाभ उठाया जा सके।

निवेशकों को निमंत्रण

इस समिट में बिहार सरकार ने लुधियाना और पूरे भारत से निवेशकों को बिहार की अपार संभावनाओं को जानने के लिए आमंत्रित किया। उपस्थित लोगों को बिहार के विभिन्न उभरते क्षेत्रों में निवेश के लिए आमंत्रित किया गया।

मजबूत लिस्टिंग से फ्रेशर एग्रो के निवेशक हुए गदगद, 16 प्रतिशत प्रीमयम के साथ हुई शुरुआत

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में आज सिर्फ एक कंपनी ने ही लिस्टिंग के जरिये अपनी जगह बनाई। कृषि उत्पादों का निर्यात करने वाली कंपनी फ्रेशर एग्रो एक्सपोर्ट्स ने आज घरेलू शेयर बाजार में एंट्री की। कंपनी के शेयर आज नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के एसएमई प्लेटफॉर्म पर 16.38 प्रतिशत प्रीमियम के साथ लिस्ट हुए। हालांकि लिस्टिंग के बाद बिकवाली का दबाव बनने की वजह से फ्रेशर एग्रो एक्सपोर्ट्स के शेयरों में गिरावट भी आई, लेकिन थोड़ी ही देर बाद खरीदारी का सपोर्ट मिलने पर इस शेयर ने रिकवर भी कर लिया।

आईपीओ के तहत फ्रेशर एग्रो एक्सपोर्ट्स के शेयर 116 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग 135 रुपये के स्तर पर हुई। हालांकि लिस्टिंग के बाद बिकवाली शुरू हो जाने के कारण ये शेयर लुढ़क कर 128.25 रुपये के स्तर पर आ गया लेकिन इस गिरावट के बाद एक बार फिर निवेशकों ने खरीदारी का जोर बना दिया, जिससे इस शेयर की रफ्तार में तेजी आने लगी। दोपहर 12 बजे फ्रेशर एग्रो एक्सपोर्ट्स का शेयर 18.95 रुपये यानी 16.37 प्रतिशत की तेजी के साथ 134.95 रुपये के स्तर पर कारोबार कर रहा था।

फ्रेशर एग्रो एक्सपोर्ट्स का 75.39 करोड रुपये का आईपीओ 17 से 21 अक्टूबर के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। निवेशकों ने इस आईपीओ को हाथों-हाथ लिया, जिससे ये ओवरऑल 236.80 गुना सब्सक्राइब हो गया। इसमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स के लिए रिजर्व पोर्शन में 129.22 गुना सब्सक्रिप्शन आया, जबकि नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर के लिए रिजर्व पोर्शन 510.61 गुना सब्सक्राइब हुआ। इसी तरह रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन में 180.80 गुना सब्सक्रिप्शन आया था।

इस आईपीओ के जरिए 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 64,99,200 नए शेयरों को जारी किया गया है। कंपनी द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी के अनुसार आईपीओ के जरिए जुटाए गए पैसे का इस्तेमाल वर्किंग कैपिटल की जरूरतों को पूरा करने, कंपनी के कैपिटल एक्सपेंडिचर की जरूरतों में और आम कॉर्पोरेट उद्देश्यों में किया जाएगा।

ग्लोबल मार्केट से कमजोरी के संकेत एशिया में भी बिकवाली का दबाव

नई दिल्ली। ग्लोबल मार्केट से आज लगातार तीसरे दिन कमजोरी के संकेत मिल रहे हैं। अमेरिकी बाजार पिछले सत्र के दौरान बड़ी गिरावट के साथ बंद हुए। डाउ जॉन्स फ्यूचर्स भी आज कमजोरी के साथ कारोबार करता नजर आ रहा है। इसी तरह यूरोपीय बाजार में भी पिछले सत्र के दौरान लगातार बिकवाली का दबाव बना रहा। एशियाई बाजारों में भी आज आमतौर पर गिरावट का रुख बना हुआ है।

अमेरिकी बाजार में पिछले सत्र के दौरान निराशा का माहौल बना रहा, जिसके कारण वॉल स्ट्रीट के सूचकांक गिरावट के साथ बंद हुए। डाउ जॉन्स 400 अंक की कमजोरी के साथ बंद हुआ। इसी तरह एसएंडपी 500 इंडेक्स ने 0.92 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 5,797.42 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। इसके अलावा नैस्डेक 296.47 अंक यानी 1.60 प्रतिशत की बड़ी गिरावट के साथ 18,276.65 अंक के स्तर पर बंद हुआ। वहीं, डाउ जॉन्स फ्यूचर्स फिलहाल 0.17 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 42,440.71 अंक के स्तर पर कारोबार करता नजर आ रहा है।

अमेरिकी बाजार की तरह यूरोपीय बाजार में भी पिछले सत्र के दौरान लगातार दबाव बना रहा। एफटीएसई इंडेक्स 0.58 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 8,258.64 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह सीएसी इंडेक्स ने 0.50 प्रतिशत टूट कर 7,497.48 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। इसके अलावा डीएएक्स इंडेक्स 0.23 प्रतिशत की गिरावट के साथ 19,377.62 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

एशियाई बाजारों में भी आज बिकवाली का दबाव बना हुआ है। एशिया के 9 बाजारों में से 8 के सूचकांक गिरावट के साथ लाल निशान में कारोबार कर रहे हैं, जबकि सिर्फ 1 सूचकांक बढ़त के साथ हरे निशान में बना हुआ है। एशियाई बाजारों में इकलौता स्ट्रेट्स टाइम्स इंडेक्स फिलहाल 0.54 प्रतिशत की मजबूती के साथ 3,620.33 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

रिलायंस और एनवीडिया भारत में एआई इंफ्रास्ट्रक्चर का करेंगे निर्माण

मुंबई/नई दिल्ली। मुकेश अंबानी की अगुवाई वाली रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंप्यूटिंग में अग्रणी अमेरिकी कंपनी एनवीडिया भारत में एआई इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण करेंगे। दोनों कंपनियों ने भारत में एआई कम्प्यूटिंग अवसंरचना और एक नवाचार केंद्र बनाने के लिए एक समझौता किया है।

मुंबई में आयोजित एनवीडिया एआई समिट 2024 में मुकेश अंबानी के साथ चैट सेशन के दौरान एनवीडिया के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) जेन्सन हुआंग ने इसकी घोषणा की। जेन्सेन हुआंग ने कहा कि उनकी कंपनी ने भारत में एआई कम्प्यूटिंग अवसंरचना और एक नवाचार केंद्र बनाने के लिए मुकेश अंबानी की कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के साथ एक समझौता किया है। आरआईएल चेयरमैन ने कहा कि जियो अब दुनिया की सबसे बड़ी डेटा कंपनी बन चुकी है। उन्होंने कहा कि रिलायंस इंडस्ट्रीज का नया प्रमुख डेटा सेंटर नवीनतम एनवीडिया ब्लैकवेल एआई चिप का उपयोग करेगा। रिलायंस और एनवीडिया के बीच साझेदारी का उद्देश्य देश में एक मजबूत एआई बुनियादी ढांचे का निर्माण करना है।

कृत्रिम मेधा (एआई) चिप की प्रमुख वैश्विक अमेरिकी कंपनी एनवीडिया कॉर्प के सीईओ ने कहा कि रिलायंस और एनवीडिया मिलकर भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करेंगे। एआई समिट में अंबानी और हुआंग ने एआई में भारत की बदलावकारी क्षमता और इस क्षेत्र में वैश्विक अगुवा के रूप में इसकी उभरती भूमिका पर चर्चा की। रिलायंस प्रमुख मुकेश अंबानी ने इस अवसर पर आयोजित एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि भारत एनवीडिया के सर्वश्रेष्ठ उत्पाद के साथ शुरुआत करेगा। हुआंग ने कहा कि इस साझेदारी में ऐसे एप्लिकेशन भी बनाए जाएंगे जिन्हें रिलायंस भारत में उपभोक्ताओं को प्रदान कर सकती है। उन्होंने कहा कि इस गठजोड़ के तहत हम एक नवाचार केंद्र भी खोलेंगे।

दिवाली के पहले सर्राफा बाजार की तेजी से छोटे कस्टमर्स में निराशा, भारी पड़ने लगी सोने-चांदी की खरीदारी

नई दिल्ली। धनतेरस और दिवाली के मौके पर परंपरागत रूप से सोने और चांदी की खरीदारी करने वाले रिटेल कस्टमर्स को घरेलू सर्राफा बाजार में आई जोरदार तेजी ने मायूस कर दिया है। सोना और चांदी की कीमत में जिस गति से बढ़ोतरी हो रही है, उससे धीरे-धीरे ये चमकीली धातुएं छोटे ग्राहकों की पहुंच से दूर होती जा रही हैं। माना जा रहा है कि अगले 1 सप्ताह में यानी धनतेरस और दिवाली तक सोना 83 हजार से 84 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर तक पहुंच सकता है। इसी तरह चांदी की कीमत भी 1,10,000 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर तक पहुंच सकती है।

देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में सोना आज 80 हजार रुपये के स्तर को पार करके रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचा हुआ है। इसी तरह चांदी की कीमत भी आज 1,04,000 रुपये के स्तर के पार पहुंची हुई है। सर्राफा बाजार में आई इस तेजी के लिए मुख्य रूप से अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी की कीमत में हुई जोरदार बढ़ोतरी और घरेलू बाजार में फेस्टिवल सीजन और उसके बाद शुरू होने वाले वेडिंग सीजन की मांग को माना जा रहा है।

बुलियन मार्केट एक्सपोर्ट संतोष झावेरी का कहना है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना ऑल टाइम हाई पर पहुंच गया है। कॉमेक्स पर सोना 2,764 डॉलर प्रति ऑन्स के स्तर को पार कर गया है। मिडिल ईस्ट में जारी तनाव और वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों की वजह से सोने के भाव में और तेजी आने की संभावना है। माना जा रहा है कि इस महीने के अंत तक सोने की कीमत 2,800 डॉलर प्रति ऑन्स के स्तर तक पहुंच सकती है। इसी तरह चांदी भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में फिलहाल 12 साल के सर्वोच्च स्तर पर पहुंचा हुआ है। 23 अक्टूबर को कॉमेक्स पर चांदी की कीमत 35.04 डॉलर प्रति ऑन्स के स्तर पर पहुंची हुई थी। अगले एक सप्ताह में चांदी की कीमत में भी 2 से 3 डॉलर प्रति ऑन्स तक तेजी आने की बात कही जा रही है।

झावेरी के अनुसार अंतरराष्ट्रीय बाजार में आने वाली तेजी का सीधा असर घरेलू सर्राफा बाजार में भी सोने और चांदी की कीमत पर पड़ेगा, क्योंकि घरेलू सर्राफा बाजार में कुल मांग का 80 प्रतिशत से अधिक अंतरराष्ट्रीय बाजार से आयात किया जाता है। इसलिए अगर अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना-चांदी की कीमत में बढ़ोतरी होती है तो भारतीय सर्राफा बाजारों में भी इसकी कीमत में और तेजी आएगी। खासकर, धनतेरस और दिवाली के लिए होने वाली खरीद को देखते हुए इसकी कीमत में अधिक तेजी आने की उम्मीद है।

इसी तरह बुलियन मार्केट एक्सपर्ट मयंक मोहन का कहना है कि अगले एक सप्ताह के दौरान गोल्ड कॉइन और बार तथा सिल्वर कॉइन और बार की मांग में तेजी आएगी। धनतेरस और दिवाली के लिए परंपरागत रूप से होने वाली खरीदारी में आमतौर पर कॉइन और बार की ही खरीदारी की जाती है। रिटेल कस्टमर गोल्ड कॉइन या सिल्वर कॉइन की खरीदारी करना ज्यादा पसंद करते हैं, वहीं बड़े निवेशक धनतेरस और दिवाली के मौके पर आमतौर पर गोल्ड या सिल्वर के बार खरीदना ज्यादा पसंद करते हैं। हालांकि इस बार सोने और चांदी की कीमत में जिस तरह की तेजी आई है, उससे रिटेल कस्टमर्स की खरीदारी पर नकारात्मक असर पड़ने की आशंका बनी हुई है।

मयंक मोहन का कहना है कि जुलाई में केंद्र सरकार द्वारा सोने की कस्टम ड्यूटी में कटौती करने के बाद सर्राफा बाजार में इस चमकीली धातु की कीमत में 7 प्रतिशत तक की बड़ी गिरावट आ गई थी। इस गिरावट के कारण रिटेल कस्टमर्स को राहत मिलने की उम्मीद बनी थी, लेकिन मिडिल ईस्ट में लगातार बढ़ रहे तनाव की वजह से कुछ दिन में ये राहत भी गायब हो गई। तनाव के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार सोने-चांदी की कीमत में जोरदार इजाफा हुआ है, जिससे इन चमकीली धातुओं की कीमत रिकॉर्ड लेवल पर पहुंच चुकी है।

मयंक मोहन के अनुसार भारतीय सर्राफा बाजारों में फेस्टिवल सीजन और उसके बाद आने वाले वेडिंग सीजन की डिमांड की वजह से भी तेजी का रुख बना है। वहीं, अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा एक बार और ब्याज दरों में कटौती करने का संकेत दिए जाने की वजह से भी निवेशक सोना और चांदी में पैसा लगाने को लेकर उत्साहित हुए हैं। इसके साथ ही अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव को लेकर बनी अनिश्चितता की वजह से भी सोने और चांदी की कीमत को अंतरराष्ट्रीय बाजार में सपोर्ट मिला है। ऐसी स्थिति में भारतीय सर्राफा बाजारों में भी इन चमकीली धातुओं की कीमत में लगातार तेजी बनी रहने की संभावना है। कीमत में अगर ये तेजी लंबे समय तक बनी रही, तो छोटे कस्टमर्स द्वारा धनतेरस और दिवाली के मौके पर सोने और चांदी में किए जाने वाले पारंपरिक निवेश में स्वाभाविक रूप से बड़ी गिरावट आएगी।

फीफा अध्यक्ष इन्फेंटिनो ने 2026 विश्व कप के लिए की 9 अफ्रीकी टीमों की पुष्टि

अदीस अबाबा। विश्व फुटबॉल की नियामक संस्था फीफा के अध्यक्ष जियानी इन्फेंटिनो ने पुष्टि की है कि 2026 विश्व कप में कम से कम नौ अफ्रीकी टीमें भाग लेंगी, जो संयुक्त राज्य अमेरिका, मैक्सिको और कनाडा में आयोजित किया जाएगा।

इन्फेंटिनो ने यह टिप्पणी इथियोपिया की राजधानी अदीस अबाबा में मंगलवार को अफ्रीकी फुटबॉल परिसंघ (सीएएफ) की 46वीं साधारण सभा के उद्घाटन के समय की, जिसमें पूरे अफ्रीका से सदस्य संघों के नेता और प्रतिनिधि एक साथ आए।

इन्फेंटिनो ने मंगलवार को कहा, विश्व कप 2026 में, नौ या दस अफ्रीकी देश (और क्षेत्र) विश्व कप में भाग लेंगे,यह वृद्धि फीफा के विस्तारित विश्व कप प्रारूप के अनुरूप की जानी है।

इन्फेंटिनो ने अफ्रीकी देशों से महाद्वीप के युवा फुटबॉल खिलाड़ियों में और अधिक निवेश करने तथा उनकी क्षमता को उजागर करने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा, मैं आप सभी को युवा फुटबॉल में निवेश जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करता हूं, क्योंकि वे बच्चे, वे लड़कियां और लड़के, कल के सितारे होंगे।

महिला संख्या छह करने पर विचार

फीफा अध्यक्ष ने कहा कि फीफा महिला विश्व कप में भाग लेने वाली अफ्रीकी टीमों की संख्या बढ़ाकर छह करने पर भी विचार कर रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि मोरक्को 2030 में फीफा विश्व कप की मेजबानी करने के लिए तैयार है, जो देश को विश्व कप की मेजबानी करने वाला दूसरा अफ्रीकी देश बना देगा।

असेंबली के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए, इथियोपिया के राष्ट्रपति टाय एट्सके सेलासी ने सीएएफ से 2029 अफ्रीका कप ऑफ नेशंस (एएफसीओएन 2029) टूर्नामेंट की मेजबानी के लिए इथियोपिया की बोली का समर्थन करने की अपील की।

सेलासी ने विश्व कप ट्रॉफी को अफ्रीकी धरती पर लाने की आवश्यकता पर भी ध्यान दिया, हालांकि अफ्रीकी मूल के कई खिलाड़ी गैर-अफ्रीकी देशों की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, ताकि वे प्रतिष्ठित फुटबॉल ट्रॉफी जीत सकें।

सेलासी ने कहा, फुटबॉल खेल को ऊपर उठाने और युवा प्रतिभाओं को विकसित करने की कुंजी सामूहिक प्रयासों को बढ़ाने में निहित है। इस आधारभूत प्रतिभा के साथ, अफ्रीकी फुटबॉल पनप सकता है और वैश्विक मंच पर अपना उचित स्थान प्राप्त कर सकता है।

एएफसीओएन 2029 की मेजबानी के लिए शुभकामनाएं व्यक्त

एएफसीओएन 2029 की मेजबानी के लिए इथियोपिया की बोली के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए, सीएएफ के अध्यक्ष पैट्रिस मोटसेपे ने इथियोपिया की सरकार और फुटबॉल महासंघ को इथियोपिया के प्रस्ताव प्रस्तुत करने के संबंध में समय पर निर्णय लेने के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया।

उन्होंने कहा, हम एएफसीओएन 2029 की मेजबानी के लिए इथियोपिया द्वारा प्रस्ताव प्रस्तुत करने के इरादे से बहुत उत्साहित हैं। फुटबॉल की सफलता इथियोपिया में होने वाली घटनाओं और महाद्वीप के अन्य हिस्सों में होने वाली घटनाओं पर निर्भर करती है। हम कुछ देशों में सफल हैं, अन्य देशों में, हम सफल नहीं हैं।

सैमुएल इटो, जे-जे ओकोचा और एल-हादजी डियॉफ़ सहित पूर्व अफ्रीकी फुटबॉल सितारे 46वीं सीएएफ साधारण महासभा में शामिल हुए।

न्यूज ब्रीफ

नोवाक जोकोविच ने पेरिस मास्टर्स टूर्नामेंट से नाम वापस लिया

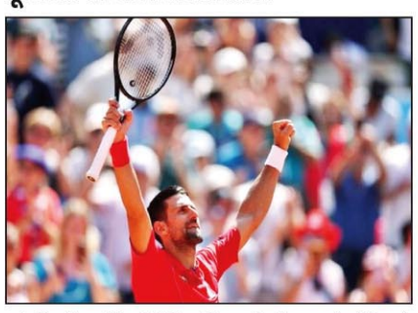

नई दिल्ली। सर्बियाई टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविच ने आगामी पेरिस मास्टर्स टूर्नामेंट से हटने की घोषणा की है। बुधवार को इंस्टाग्राम पर जोकोविच ने लिखा, दुर्भाग्य से मैं इस साल पेरिस मास्टर्स टूर्नामेंट नहीं खेल पाऊंगा। उन सभी से माफ़ी चाहता हूं जो मुझे वहां खेलते हुए देखना चाहते थे। सभी खिलाड़ियों, प्रायोजकों, आयोजकों और प्रशंसकों को शानदार टूर्नामेंट की शुभकामनाएं। वहां सात खिताब जीतने की मेरी कई शानदार यादें हैं और उम्मीद है कि अगले साल मैं फिर से आपके साथ रहूंगा। उल्लेखनीय है कि जोकोविच ने पेरिस-बर्सी में अपने रिकॉर्ड-तोड़ 40 एटीपी मास्टर्स 1000 खिताबों में से सात जीते हैं। टूर्नामेंट में उनका जीत-हार का रिकॉर्ड 50-9 का है और उन्होंने प्रतियोगिता में अपने पिछले 19 मैचों में से 18 जीते हैं। 37 वर्षीय खिलाड़ी का इस सीजन में जीत-हार का रिकॉर्ड 37-9 है और उनके करियर का सबसे शानदार पल इस साल पेरिस में आया, जब उन्होंने ओलंपिक स्वर्ण पदक हासिल करने के लिए स्पेनिश स्टार कार्लोस अल्काराज़ को हराया। जोकोविच वर्तमान में एटीपी लाइव टू ट्यूरिन रैंकिंग में छठे नंबर पर हैं और सीजन के अंत में होने वाले एटीपी फाइनल्स के लिए सीधे क्वालीफिकेशन हासिल कर सकते हैं। इससे पहले अक्टूबर में, दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी जननिक सिनर ने शंघाई मास्टर्स में जोकोविच को हराकर 2024 का अपना सातवां खिताब हासिल किया था। सिनर ने 7-6(4), 6-3 से जीत हासिल की, और 2016 में एंडी मरे के बाद एक ही कैलेंडर वर्ष में छह से अधिक खिताब जीतने वाले पहले खिलाड़ी बन गए।

मेजर लीग बेसबॉल के रियलिटी स्पोर्ट्स सीरीज़ का हिस्सा बने शिखर धवन

नई दिल्ली। मेजर लीग बेसबॉल (एमएलबी) ने पूर्व भारतीय क्रिकेटर शिखर धवन को भारत में खेल के विकास को दर्शाने वाली एक रियलिटी स्पोर्ट्स सीरीज़ का हिस्सा बनने के लिए चुना है। यह सीरीज़ 25 अक्टूबर, 2024 को लॉन्च होगी। चार-एपिसोड की इस सीरीज़ में धवन, 5 बार ऑल-स्टार स्लगर एडम जोन्स और खेल प्रस्तोता जतिन सप्रू शामिल हैं। यह सीरीज़ डिज्नी स्टार के सहयोग से बनाई गई है, जिसका शीर्षक 'हॉटशॉट्स' है। हॉटशॉट्स देश के 10 सर्वश्रेष्ठ शौकिया बल्लेबाजों की हिटिंग क्षमता का परीक्षण करता है, जिसमें विजेता को 15 लाख रुपये का शीर्ष पुरस्कार दिया जाता है। शिखर और एडम इन प्रतियोगियों को कोचिंग देंगे। हॉटशॉट्स पिछले साल के इंडियन बेसबॉल ड्रीम्स का अनुसरण करता है, और 2023 में एमएलबी ड्राफ्ट के पहले दौर में चुने जाने वाले पहले-पीढ़ी के भारतीय अमेरिकी अर्जुन निम्माला की प्रेरक वास्तविक जीवन की कहानी बताता है। सीरीज़ की रिलीज़ 26 अक्टूबर को निर्धारित 120वीं वर्ल्ड सीरीज़ की शुरुआत के साथ होगी। हॉटशॉट्स में भाग लेने पर शिखर धवन ने कहा, मैं बहुत उत्साहित हूँ!

भारतीय महिला हॉकी टीम की पूर्व कप्तान रानी रामपाल ने लिया संन्यास

नई दिल्ली। भारतीय महिला हॉकी टीम की पूर्व कप्तान रानी रामपाल ने गुरुवार को संन्यास की घोषणा की, जिससे उनका 16 साल का शानदार करियर समाप्त हो गया। टोक्यो ओलंपिक में भारत को ऐतिहासिक चौथे स्थान पर पहुंचाने वाली रानी आगामी महिला हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) में पंजाब और हरियाणा के सूरमा हॉकी क्लब की मेंटर और कोच होंगी, जिसका आगाज इस साल के अंत में होगा। उन्होंने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में पत्रकारों से कहा, यह एक शानदार यात्रा रही है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं भारत के लिए इतने लंबे समय तक खेलूंगी। मैंने बचपन से बहुत गरीबी देखी है, लेकिन मेरा ध्यान हमेशा कुछ करने, देश का प्रतिनिधित्व करने पर था। टोक्यो ओलंपिक के बाद हैमस्ट्रिंग की चोट से मजबूत वापसी करने के बावजूद, रानी पूर्व कोच जेनेके शोपमैन के पक्ष में नहीं थीं और राष्ट्रीय टीम के लिए ज्यादा खेल नहीं पाईं। उन्हें हाल ही में सब-जूनियर महिला खिलाड़ियों के लिए राष्ट्रीय कोच के रूप में शामिल किया गया था। रानी रामपाल ने 254 मैचों में भारत का प्रतिनिधित्व किया और कुल 205 गोल किए। भारतीय हॉकी में उनका योगदान बहुत बड़ा है, उन्होंने 2008 में सिर्फ़ 14 साल की उम्र में अपना पहला मैच खेला था।

विश्व अंडर-23 कुश्ती चैंपियनशिप

विश्वजीत मोरे ने ग्रीको रोमन स्पर्धा में जीता कांस्य, अंजली फाइनल में

नई दिल्ली। विश्वजीत मोरे ने बुधवार को अल्बानिया के तिराना में अंडर-23 कुश्ती विश्व चैंपियनशिप 2024 में पुरुषों के 55 किग्रा ग्रीको-रोमन वर्ग में कांस्य जीतकर भारत के लिए पहला पदक हासिल किया।

उन्होंने रोमांचक मुकाबले में एडम उल्बाशेव को 14-10 के स्कोर से हराया। यह उपलब्धि इस चैंपियनशिप में भारत का पहला पदक है। अली अब्दुल्ला अहमदी वाफा ने रशद मम्मादोव को 11-3 से हराकर स्वर्ण पदक जीता, जबकि कोहेल यामागीवा ने मोरे के साथ कांस्य पदक साझा किया। मोरे शुरुआती बढ़त के बावजूद सेमीफाइनल में वाफा से 5-14 से हार गए थे। इससे पहले, अंजली ने महिलाओं की 59 किग्रा श्रेणी में इटली की ऑरोरा रूसो के खिलाफ 4-0 के स्कोर के साथ जीत हासिल करके फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल में अंजली का सामना यूक्रेन की सोलिमिया विन्निक से होगा।

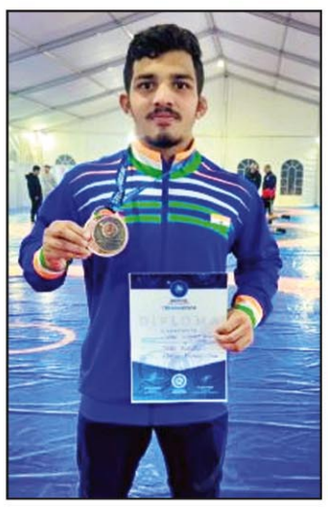

अश्विन आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के इतिहास में सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज बने

नई दिल्ली। भारतीय स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज नाथन लियोन को पीछे छोड़ते हुए आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के इतिहास में अग्रणी विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए हैं। अश्विन ने यह उपलब्धि पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट संघ (एमसीए) स्टेडियम में न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट के दौरान हासिल की। पहली पारी में खेल के दौरान, अश्विन ने अब तक 19 ओवर में 2.50 की इकॉनमी रेट से 48 रन देकर तीन विकेट लिए हैं। 2019 में लीग प्रारूप में टूर्नामेंट शुरू होने के बाद से अब तक 39 मैचों में, अश्विन ने 20.71 की औसत से 189 विकेट लिए हैं, जिसमें 7/71 का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है। उन्होंने प्रतियोगिता में नौ बार चार विकेट और 11 बार पांच विकेट लिए हैं। 2019-21 और 2021-23 चक्रों में, अश्विन 14 मैचों में 71 विकेट लेकर अग्रणी विकेट लेने वाले गेंदबाज और 13 मैचों में 61 विकेट लेकर चौथे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बने लियोन 20 मैचों में 88 विकेट लेकर शीर्ष पर रहे। प्रतियोगिता के मौजूदा 2023-25 चक्र में, अश्विन 12 मैचों में 57 विकेट लेकर फिर से शीर्ष पर हैं।

आईओसी अध्यक्ष बाख ने युगांडा के राष्ट्रपति मुसेवेनी को मानद स्वर्ण पदक प्रदान किया

कंपाला। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के अध्यक्ष थॉमस बाख ने युगांडा के राष्ट्रपति को पदक प्रदान कर खेलों के विकास में उनके योगदान की सराहना की है। बाख ने बुधवार को एंटेबे में स्टेट हाउस की अपनी यात्रा के दौरान राष्ट्रपति योवेरी कागुटा मुसेवेनी को मानद स्वर्ण पदक से सम्मानित किया।

आईओसी अध्यक्ष ने मुसेवेनी के नेतृत्व में युगांडा सरकार को खेलों का हमेशा समर्थन करने के लिए धन्यवाद दिया, जो ओलंपिक सहित अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश द्वारा जीते गए कई पदकों से साबित हुआ है।

मुसेवेनी ने अपनी पत्नी और शिक्षा और खेल मंत्री जेनेट काटाका मुसेवेनी के साथ मिलकर वचन दिया कि सरकार नए युगांडा ओलंपिक समिति मुख्यालय के निर्माण के लिए भूमि उपलब्ध कराएगी। इससे पहले, आईओसी अध्यक्ष बाख ने युगांडा की प्रधानमंत्री रोबिना नब्बांजा से भी मुलाकात की, जिन्होंने स्पष्ट किया कि सरकार हमेशा खेलों का समर्थन करेगी क्योंकि यह राष्ट्र निर्माण के मामले में देश के लिए बहुत बड़ा योगदान देता है।

पुणे टेस्ट : न्यूजीलैंड की पहली पारी 257 रन पर सिमटी, वाशिंगटन सुंदर ने झटके 7 विकेट

पुणे। न्यूजीलैंड ने यहां महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में भारत के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच के पहले दिन अपनी पहली पारी में 259 रन बनाए, न्यूजीलैंड के लिए डेवोन कॉनवे (76) ओर रचिन रवींद्र (65) ने शानदार अर्धशतकीय पारी खेली, जबकि भारत के लिए वाशिंगटन सुंदर ने सात विकेट लिए।

इस मैच में न्यूजीलैंड ने टॉस जीता और पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। कप्तान टॉम लैथम और डेवोन कॉनवे ने न्यूजीलैंड को सधी शुरुआत दिलाई। दोनों ने पहले विकेट के लिए 32 रन जोड़े। रविचंद्रन अश्विन ने इसी स्कोर पर लैथम को आउट कर भारत को पहली सफलता दिलाई। लैथमने 15 रन बनाए। अश्विन ने 76 के कुल स्कोर पर विल यंग को आउट कर भारत को दूसरी सफलता दिलाई। यंग ने 18 रन बनाए। इसके बाद कॉनवे और रचिन रवींद्र ने तीसरे विकेट के लिए 62 रनों की साझेदारी की। इस दौरान कॉनवे ने अपना अर्धशतक पूरा किया। 138 के कुल स्कोर पर कॉनवे को अश्विन ने आउट कर भारत को तीसरी सफलता सफलता दिलाई। कॉनवे ने 141 गेंदों पर 11 चौकों की बदौलत 76 रन बनाए।

वाशिंगटन सुंदर का चला जादू- यहां से वाशिंगटन सुंदर ने अपना जादू चलाया और कीवी बल्लेबाजों को अपनी फिरकी पर जमकर नचाया। उन्होंने 197 के स्कोर पर रचिन रवींद्र को आउट कर भारत को चौथी सफलता दिलाई। रवींद्र ने 65 रनों की शानदार अर्धशतकीय पारी खेली। इसके बाद सुंदर ने एक के बाद एक कीवी बल्लेबाजों को पवेलियन भेजना शुरु किया और अंत में मिचेल सेंटनर (33) को 259 के कुल स्कोर पर बोल्ड कर न्यूजीलैंड की पारी समाप्त की। संदर ने 23.1 ओवर में 59 रन देकर 7 विकेट लिये, जबकि रविचंद्रन ने 3 विकेट लिए। इसके पहले भारत ने इस मैच के लिए अपनी टीम में तीन बदलाव किये, केएल राहुल, कुलदीप यादव और मोहम्मद सिराज को बाहर कर दिया गया और शुभमन गिल वाशिंगटन सुंदर और आकाशदीप को शामिल किया गया। जबकि न्यूजीलैंड ने भी अपनी टीम में एक बदलाव किया। तेज गेंदबाज मैट हेनरी की जगह स्पिनर मिचेल सैंटनर को टीम में शामिल किया।

मुरादाबाद में 4 दिवसीय 26वीं उप्र पुलिस वार्षिक घुड़सवारी प्रतियोगिता शुरू

अपर पुलिस महानिदेशक अमित चन्द्रा ने किया प्रतियोगिता का उद्घाटन

मुरादाबाद। डॉ. भीमराव आम्बेडकर उत्तर प्रदेश पुलिस अकादमी के घुड़सवारी मैदान में गुरुवार को चार दिवसीय 26वीं उत्तर प्रदेश पुलिस वार्षिक घुड़सवारी प्रतियोगिता 2024 का शुभारंभ हुआ। प्रतियोगिता का शुभारम्भ मुख्य अतिथि पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय मुरादाबाद में अपर पुलिस महानिदेशक अमित चन्द्रा द्वारा किया। प्रतियोगिता का समापन 27 अक्टूबर को होगा।

उप्र पुलिस वार्षिक घुड़सवारी प्रतियोगिता में मुरादाबाद, लखनऊ, कानपुर, आगरा, अलीगढ़, मेरठ, बरेली की घुड़सवारी टीमें प्रतिभाग कर रही है। प्रतियोगिता में 85 प्रतिभागी और 45 घोड़े शामिल हैं। अपर पुलिस अधीक्षक महेंद्र कुमार ने बताया कि आज पहले दिन टीम टेन्ट पेगिंग, इण्डियन फाईल लॉन्स तथा सोर्ड, शो जम्पिंग प्रिमनलरी, डेसाज व्यक्तिगत टीम द्वारा हुई। 25 अक्टूबर शुक्रवार को प्रात: 8 बजे से उप्र पुलिस रिले कम्पटीशन, ब्राबो जम्पिग, व्यक्तिगत टेन्ट पेगिंग, होर्स टेस्ट ड्रेसाज 26 अक्टूबर शनिवार को सईस कम्पटीशन, मिडले रिले, फाल्ट एण्ड आउट, हार्स टेस्ट 27 अक्टूबर क रविवार को टेन्ट पेगिंग लॉन्स, सोर्ड राउन्ड-ए, शो जम्पिंग टॉप स्कोर ओपन शे जम्पिंग ओपन सिक्सवार, टेन्ट पेगिंग लॉन्स, सोर्ड राउण्ड-बी होगी तथा रविवार शाम 4 बजे मुख्य अतिथि डॉ भीमराव आम्बेडकर उप्र पुलिस अकादमी के निदेशक व अपर पुलिस महानिदेशक राजीव सभरवाल मुरादाबाद द्वारा पुरस्कार वितरण किया जाएगा।

एटलेटिको मैड्रिड ने 2027 चैंपियंस लीग फाइनल की मेजबानी के लिए लगाई बोली

मैड्रिड। एटलेटिको मैड्रिड ने क्लब के मेट्रोपोलिटानो स्टेडियम में 2027 चैंपियंस लीग फाइनल की मेजबानी के लिए अपनी उम्मीदवारी पेश की है, यूईएफए ने बुधवार को इसकी पुष्टि की।

मेट्रोपोलिटानो के पास वर्तमान में यूरोपीय फुटबॉल के सबसे बड़े खेल की मेजबानी के लिए केवल एक प्रतिद्वंद्वी है, जो कि अज़रबैजान में बाकू ओलंपिक स्टेडियम है, लेकिन अन्य उम्मीदवारों को पेश करने के लिए 19 मार्च, 2025 तक खिड़की खुली है। 64,000 क्षमता वाले इस स्टेडियम ने लिवरपूल और टोटेनहम के बीच 2019 चैंपियंस लीग फाइनल की मेजबानी की थी, जिसे लिवरपूल ने मोहम्मद सलाह और डिवोक ओरिगी के गोलों की मदद से 2-0 से जीता था। एटलेटिको के खिलाफ एक कारक उनके प्रशंसकों का व्यवहार है, यूईएफए ने हाल ही में क्लब पर 30,000 यूरो का जुर्माना लगाया था, क्योंकि उनके समर्थकों के एक वर्ग ने हाल ही में बेनफिका से 4-0 की हार के दौरान नाजी सलामी दी थी।

ऑस्ट्रेलिया ने सुल्तान ऑफ जोहोर कप में भारत को 4-0 से हराया

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया ने बुधवार को सुल्तान ऑफ जोहोर कप के एक महत्वपूर्ण मुकाबले में भारत को 4-0 से मात देकर भारतीय टीम के विजय रथ को रोक दिया। इस मैच ने भारतीय खिलाड़ियों के लिए कई महत्वपूर्ण सबक दिए, खासकर उनके आक्रामक और रणनीतिक खेल में। मैच में ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी पैट्रिक एंड्रयू ने 29वें मिनट में गोल कर अपनी टीम को बढ़त दिलाई। इसके बाद, डेकिन स्टैंगर ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 33वें, 39वें और 53वें मिनट में गोल करके हैट्रिक बनाई, जिससे ऑस्ट्रेलिया की बढ़त 4-0 तक पहुंच गई। उनका आक्रामक खेल भारतीय रक्षा को तोड़ने में सफल रहा।

हालांकि, भारतीय फॉरवर्ड लाइन ने ऑस्ट्रेलियाई रक्षापंक्ति को तोड़ने के लिए संघर्ष किया। पहले क्वार्टर में भारतीय रक्षा ने अपने शानदार खेल का मुजाहिरा किया और ऑस्ट्रेलिया के कई हमलों को विफल किया। लेकिन, जैसे-जैसे मैच आगे बढ़ा, भारत की टीम गोल करने में विफल रही, जिससे उन्हें अंतत: हार का सामना करना पड़ा। इस हार के बावजूद, भारत नौ अंकों के साथ अंक तालिका में शीर्ष पर बना हुआ है। जबकि ऑस्ट्रेलिया ने इस जीत के साथ महत्वपूर्ण अंक अर्जित किए, फिर भी वे न्यूजीलैंड के बाद तीसरे स्थान पर हैं।

आगे की चुनौतियां-भारत को अब अपनी अगली रणनीति पर ध्यान केंद्रित करना होगा, ताकि वे अपनी फॉरवर्ड लाइन के प्रदर्शन को बेहतर बना सकें और आगामी मैचों में सफल हो सकें। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ यह हार उनके लिए एक चुनौती है, लेकिन टीम में सुधार की काफी संभावनाएं हैं। इस प्रकार, सुल्तान ऑफ जोहोर कप का यह मुकाबला न केवल ऑस्ट्रेलिया की शक्ति को दर्शाता है, बल्कि भारत के लिए आत्म-विश्लेषण और सुधार के अवसर भी प्रदान करता है।

खो खो फेडरेशन ऑफ़ इंडिया भारतीय टीम के लिए फिटनेस और प्रशिक्षण शिविर लगाएगी

नई दिल्ली। 13 जनवरी से 19 जनवरी 2025 तक खेले जाने वाले पहले खो खो वर्ल्ड कप की तैयारियों के लिए खो खो फेडरेशन ऑफ़ इंडिया भारतीय टीम का आठ दिसम्बर से एक माह का फिटनेस और प्रशिक्षण शिविर लगाएगी । भारत के प्राचीनतम खेलों में से एक खो खो के इस विश्व कप का उद्घाटन नई दिल्ली में होगा। आयोजन में छह महाद्वीपों के 24 देश भाग लेंगे, जिनमें 16 पुरुष और 16 महिला टीमें शामिल होंगी।

अन्तर्राष्ट्रीय खो-खो फेडरेशन के अध्यक्ष सुधांशु मित्तल ने बताया की इंदिरा गाँधी इंडोर स्टेडियम में आयोजित किये जाने बाले इस कैंप के माध्यम से खिलाड़ियों में टीम भावना भरने के साथ खिलाड़ियों की शारीरिक और मानसिक क्षमता को बढ़ाने पर फोकस किया जायेगा ताकि बह अन्तराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर प्रदर्शन कर सकें ।

उन्होंने बताया की इस प्री सीजन फिटनेस और फील्डिंग ट्रेनिंग कैंप में खिलाडियों के फिटनेस स्तर, स्फूर्ति, नेतृत्व ,रणनीतिक सोच ,तथा खेल के मैदान में बेहतर प्रदर्शन के लिए व्यापक प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा ताकि वह विश्व कप में बेहतर प्रदर्शन कर सकें ।

उन्होंने बताया की महिला और पुरुष प्रतेयक टीम के साठ - साठ खिलाडियों को विश्व कप की प्रतिस्पर्धा के विभिन्न पहलुओं के बारे में इस कैंप में गहन प्रशिक्षण दिया जायेगा।

सुधांशु मित्तल ने बताया की इन 60 खिलाडियों का चयन राष्ट्रीय खो खो चैंपियनशिप में उनके बेहतर प्रदर्शन के आधार पर नेशनल सिलेक्शन कमेटी द्वारा किया गया है।उन्होंने बताया की

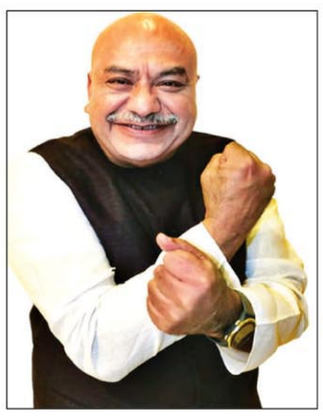

खिलाडियों को दबाब से मुक्त रखने एक खेल मनोवैज्ञानिक की व्यवस्था की गई है ताकि वह अपनी चुनौतियों के बारे में खुल कर बात कर सकें ।उन्होंने बताया की इस प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से खो खो वर्ल्ड कप के लिए महिला और पुरुष दोनों टीमों के 15 -15 खिलाडियों का चयन किया जायेगा । उन्होंने बताया की इस चैंपियनशिप में विदेशों से आठ सौ खिलाडी ,सहायक स्टाफ और कोचों के हिस्सा लेंगे ।सुधांशु मित्तल बताया कि ईज़ माई ट्रिप को ट्रेवल और होस्ट पार्टनर चुना गया है । उन्होंने बताया की स्टार स्पोर्ट्स सभी मैचों की लाइव कवरेज करेगा जबकि सभी मैचों की लाइव स्ट्रीमिंग सोशल मीडिया के माध्यम से की जाएगी मैच के दौरान दर्शकों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए दर्शकों को मुफ्त प्रवेश दिया जायेगा तथा इसके अतिरिकत छोटे बच्चों में खो खो के प्रति आकर्षण और रूचि पैदा करने के लिए दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के सभी शिक्षण संस्थानों के बच्चो को मैच देखने के लिए आमंत्रित किया जायेगा। खो खो फेडरेशन ऑफ़ इंडिया द्वारा विश्व कप से पहले, खो खो खेल को बढ़ावा देने के लिए दस शहरों के दो सौ शीर्ष स्कूलों में खेल को ले जाने की योजना बनाई है ।महासंघ स्कूली छात्रों के लिए सदस्यता अभियान भी चलाएगा, जिसका उद्देश्य विश्व कप से पहले कम से कम पचास लाख खिलाड़ियों को पंजीकृत करना है।

मित्तल ने बताया की हम 2025 में पहले खो.खो विश्व कप के लिए आधिकारिक भागीदार बनने के लिए उत्साहित हैं। यह आयोजन न केवल खो.खो की गतिशील भावना को प्रदर्शित करने में बल्कि ओलंपिक और एशियाई खेलों में इसे लाने की आकांक्षाओं के साथ वैश्विक मंच पर इसके समावेश को बढ़ावा देने में भी एक महत्वपूर्ण कदम है।

पाकिस्तानी टेस्ट टीम से बाहर हुए मीर हमजा

रावलपिंडी। पाकिस्तान ने तेज गेंदबाज मीर हमजा को टेस्ट टीम से रिलीज कर दिया है ताकि वह कराची में अपने रिहैबिलिटेशन पर काम कर सकें। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने रावलपिंडी में पाकिस्तान और इंग्लैंड के बीच तीसरे और निर्णायक टेस्ट के पहले दिन इस बात की घोषणा की। इस खिलाड़ी को अपने दाहिने ग्लूट में कुछ परेशानी थी। तीसरे टेस्ट से पहले उन्होंने पाक के किसी भी सत्र में ट्रेनिंग या गेंदबाजी नहीं की और मंगलवार को उन्हें टीम के फिजियोथेरेपिस्ट के साथ बैंड रिहैबिलिटेशन एक्सरसाइज करते देखा गया।

धनतेरस, नरक चौदस, दिवाली, गोवर्धन और भाई दूज

पांचदिवसीय महापर्व की खास बातें...

दिवाली 2024 : दीपावली महापर्व शुरू होने में एक सप्ताह से भी कम का समय बचा है। दीपावली का पावन पर्व धनतेरस से आरंभ होकर भैया दूज पर जाकर संपन्न होता है। पांच दिनों के इस महापर्व में हर दिन विशेष महत्व रखता है। पांचदिवसीय महापर्व के पहले दिन धनतेरस, दूसरे दिन छोटी दिवाली, तीसरे दिन दीपवाली पर्व, चौथे दिन गोवर्धन पूजा और पांचवे दिन भैया दूज का पर्व मनाया जाता है। पांच दिन के पांच त्योहारों को त्योहारों का राजा भी कहा जाता है। आइए जानते हैं धनतेरस, नरक चौदस, दिवाली, गोवर्धन और भाई दूज के बारे में खास बातें और किस दिन कौन-सा पर्व मनाया जाएगा...

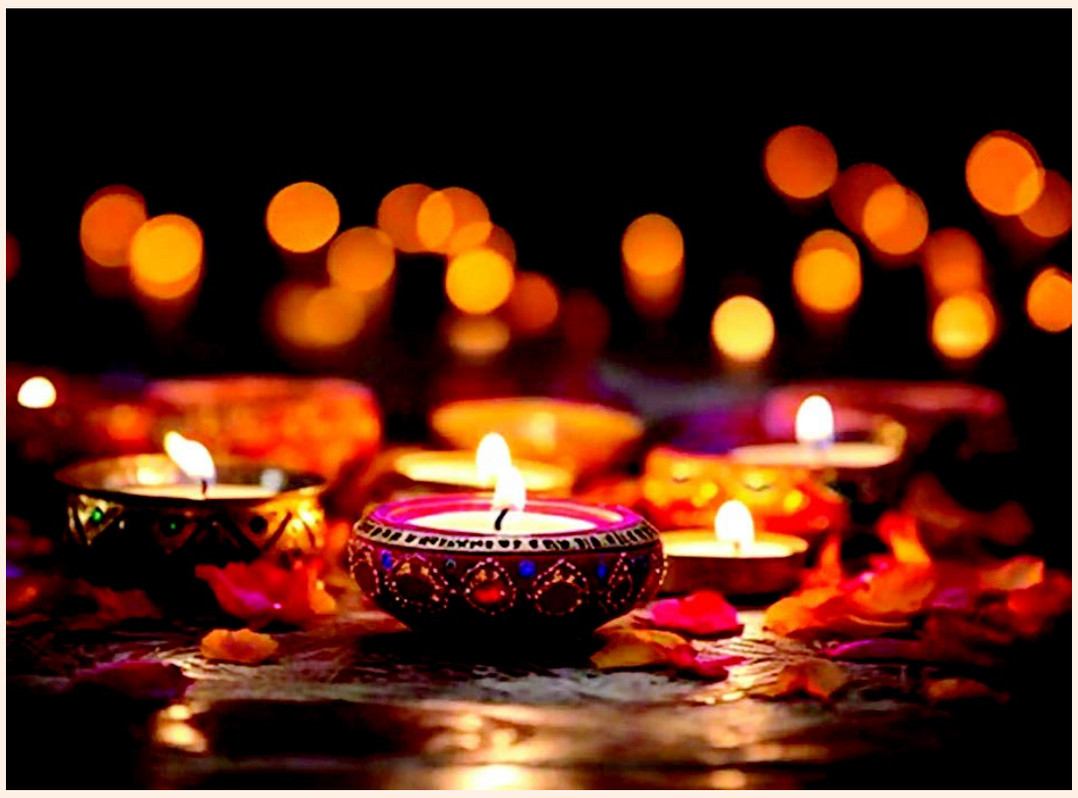

धनतेरस : प्रदोष काल में दीपदान का विशेष महत्व

पांच दिनों के महापर्व दीपावली में पहला पर्व है कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी। इस दिन समुद्र मंथन से प्राप्त चौदह रत्नों में से एक आयुर्वेदाचार्य धन्वंतरी हाथ में अमृत-कलश लिए प्रकट हुए थे। इनके दृष्टिपात से सूखी खेती हरित होकर लहलहा उठती थी। मृत जीवित हो आता था। विधाता के कार्य में यह बहुत बड़ा व्यवधान पड़ गया। सृष्टि में भयंकर अव्यवस्था उत्पन्न होने की आशंका के भय से देवताओं ने इन्हें छल से लोप कर दिया। वैद्यगण इस दिन धन्वंतरी जी का पूजन करते हैं और वर मांगते हैं कि उनकी औषधि व उपचार में ऐसी शक्ति आ जाए जिससे रोगी को स्वास्थ्य लाभ हो। सद्गृहस्थ इस दिन अमृत पात्र को स्मरण कर नए बर्तन घर में लाकर धनतेरस मनाते हैं। आज के दिन ही बहुत समय से चले आ रहे मनो मालिन्य को त्याग कर यमराज ने अपनी बहिन यमुना से मिलने हेतु स्वर्ग से पृथ्वी की ओर प्रस्थान किया था। गृहणियां इस दिन से अपनी देहरी पर दीपक दान करती हैं, जिससे यमराज मार्ग में प्रकाश देखकर प्रसन्न हों और उनके गृह जनों के प्रति विशेष करुणा रखें। इस वर्ष यह पर्व 29 अक्तूबर 2024 ई मंगलवार को मनाया जाएगा। इसी दिन प्रात: सूर्यादय से ही त्रयोदशी तिथि का आगाज हो जाएगा। अत: उदय व्यापिनी त्रयोदशी होने के कारण प्रदोष व्रत के साथ-साथ प्रदोष काल में दीपदान का विशेष महत्व रहेगा।

नरक चौदस : पांच या सात दिए जलाने की परंपरा है इस दिन

इस पर्व लड़ी का दूसरा मोती है चतुर्दशी। भगवान श्रीराम के परम भक्त और पराक्रम के प्रतीक हनुमान की जयंती का दिन है। भगवान श्रीकृष्ण ने भी इस दिन अत्याचारी और दंभी नरकासुर का वध करके उसकी कैद से सोलह हजार कन्याओं और अन्य कैदियों को मुक्त किया था। इस असुर ने अपनी अंतिम इच्छा बड़ी विनय के साथ प्रकट की। भगवान श्रीकृष्ण ने वर दिया कि यह दिन सदैव नरक चौदस के नाम से याद किया जाएगा। इसी दिन भगवान विष्णु ने पराक्रमी और महान दानी राजा बलि के दंभ को अपनी कूटनीति से वामन रूप धारण कर नष्ट किया। इसे रूप चतुर्दशी भी कहते हैं। इस दिन पांच या सात दीये जलाने की परंपरा है। इस बार यह पर्व 30 अक्तूबर 2024 बुधवार को मनाया जाएगा।

दीपावली : ऐतिहासिक घटनाओं से भरपूर है यह दिन

अब आता है इस लड़ी के मध्य दैदीप्यमान मंजूषा का उल्लास और उत्साह से भरा महान पर्व *दीपावली* और महालक्ष्मी पूजन। यह अनेक घटनाक्रमों से युक्त दिन भी है। कार्तिक अमावस्या के दिन श्रीराम लंका विजय कर, सीता-लक्ष्मण-हनुमान व अन्य साथियों के साथ आकाश मार्ग से अयोध्या पधारे थे। जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर अहिंसा की प्रतिमूर्ति भगवान महावीर स्वामी भी इसी दिन निर्वाण को प्राप्त हुए थे। महान समाज सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद ने भी आज ही के दिन निर्वाण प्राप्त किया था। राम के स्वरूप को मानने वाले स्वामी रामतीर्थ परमहंस का तो जन्म व जल समाधि दोनों ही दिवाली के दिन हुए। सिखों के छठे गुरु हरगोबिंद जी और पराक्रमी राजा विक्रमादित्य ने भी आज ही के दिन विजय पर्व मनाया था। इस वर्ष विक्रम संवत् 2081 में दीपोत्सव 30 अक्तूबर सन् 2024 को गुरुवार के दिन धर्मशास्त्र के अनुसार प्रदोषकाल एवं निशीथकाल व्यापिनी अमावस्या में मनाया जाएगा। कई वर्षों बाद स्वाति नक्षत्र से युक्त अमावस्या में दीपमाला होगी, जो समग्र राष्ट्र और समाज के लिए सुख, समृद्धि और सुभिक्षकारक सिद्ध होगी। दीपावली महापर्व में लक्ष्मी पूजन का प्रदोष काल में सर्वाधिक महत्व है। इसमें प्रदोषकाल गृहस्थियों एवं व्यापारियों के लिए और निशीथकाल आगम शास्त्र विधि से पूजन हेतु उपयुक्त है। चतुर्दशी या प्रतिपदा में दीपावली-महालक्ष्मी पूजन आदि कृत्य करने का शास्त्रीय विधान नहीं है।

गोवर्धन : कई तरह के खाद्यान्न बनाए जाते हैं इस दिन

इस लड़ी का चौथा माणिक है कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा। यह पर्व भारत की कृषि-प्रधानता, पशुधन, उद्योग व व्यवसाय का प्रतीक है। इसी दिन श्री कृष्ण ने अंगुली पर गोवर्धन पर्वत को छत्र की तरह धारण करके वनस्पति तथा लोगों की इंद्र के प्रकोप से रक्षा की थी। यह गोवर्धन पर्व अन्नकूट के नाम से विख्यात है। इस दिन नाना प्रकार के खाद्यान्न बनाए जाते हैं। घी, दूध, दही से युक्त इनका भोग भगवान को लगाया जाता है। शिल्पकार व श्रमिक वर्ग आज के दिन विश्वकर्मा का पूजन भी श्रद्धा भक्तिपूर्वक करते हैं। आज चहुंमुखी विकास और वृद्धि की कामना से दीप जलाए जाते हैं। इस वर्ष यह पर्व 2 नवंबर 2024, शनिवार को मनाया जाएगा।

भैयादूज : भाई-बहन के स्नेह सूत्र को दृढ़ करता है यह पर्व

माला का पांचवा चमकता पर्व आता है- स्नेह, सौहार्द व प्रीति का प्रतीक यम द्वितीया अथवा भैया-दूज। इस दिन कार्तिक शुक्ल को यमराज अपने दिव्य स्वरूप में अपनी भगिनि यमुना से भेंट करने पहुंचते हैं। यमुना यमराज को मंगल तिलक कर स्वादिष्ट व्यंजनों का भोजन कराकर आशीर्वाद प्रदान करती हैं। इस दिन बहन-भाई साथ-साथ यमुना स्नान करें तो उनका स्नेह सूत्र अधिक सुदृढ़ होगा। इस बार भैया दूज 3 नवंबर रविवार को मनाया जाएगा।

अत्यधिक भीड़ भी नहीं बनेगी *आस्था की डुबकी* लगाने में रुकावट

दुनिया के सबसे बड़े आयोजन व सनातन आस्था के केंद्र महाकुंभ 2025 को सभी के लिए सुगम बनाने हेतु योगी सरकार लगातार तत्परता से कार्य कर रही है। इस महाआयोजन के दौरान 40 करोड़ से अधिक लोगों के प्रयागराज आने का अनुमान है, जिसको लेकर मेला प्रशासन और जिला प्रशासन दोनों ने क्राउड मैनेजमेंट की तैयारी की है। खासतौर पर पीक डेज (प्रमुख स्नान) के दौरान अत्यधिक भीड़ के कारण कहीं कोई अव्यवस्था न हो, इसके लिए कार्ययोजना तैयार की गई है। आने और जाने के अलग-अलग रास्ते निर्धारित किए गए हैं, जबकि मोबिलिटी जारी रहे इसकी भी व्यवस्था की गई है। रास्ता जाम न हो, इसके लिए भी विशेष प्रबंध किए जा रहे हैं। कुल मिलाकर जो योजना बनी है उसके अनुसार, श्रद्धालुओं को पीक डेज में एक से 5 किमी. और सामान्य दिनों में एक किमी. से ज्यादा पैदल यात्रा नहीं करनी होगी। प्रयागराज के मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत ने बताया कि इस सबसे बड़े धार्मिक आयोजन में सिर्फ प्रदेश और देश से ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया से श्रद्धालुओं का बड़ा जत्था प्रयागराज पहुंचने वाला है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निर्देश दिया है कि किसी भी श्रद्धालु को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए। ऐसे में क्राउड मैनेजमेंट को लेकर एक कार्ययोजना बनाई गई है, जिसके अनुरूप व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने बताया कि महाकुंभ के दौरान सर्वाधिक श्रद्धालु सड़क मार्ग से प्रयागराज पहुंचेंगे। प्रशासन की ओर से सभी शहर के दिशाओं में पार्किंग की व्यवस्था की गई है, जहां वाहन खड़ा कर श्रद्धालु आगे का रास्ता तय करेंगे। मेला क्षेत्र में हमने आने और जाने के अलग-अलग रास्ते निर्धारित किए हैं। आस्था की डुबकी लगाने वाले जिस रास्ते से जाएंगे, उस रास्ते से वापस नहीं लौटेंगे। उन्हें दूसरे रास्ते से होकर जाना होगा, ताकि कहीं भी श्रद्धालु आमने-सामने नहीं आ सकेंगे। मंडलायुक्त ने बताया कि ऐसी व्यवस्था की जा रही है कि श्रद्धालु कहीं एक साथ रुकें नहीं, वो चलते रहें। इससे कहीं भी जाम की स्थिति नहीं बनने दी जाएगी। हमारा उद्देश्य है कि मेला क्षेत्र के साथ-साथ शहर में भी श्रद्धालुओं की मोबिलिटी को बरकरार रखा जाए ताकि स्नान और दर्शन आदि करने के बाद वो सीधे पार्किंग स्थल पहुंचें और अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान करें।

मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश शर्मा द्वारा अजय त्यागी के लिए ईको प्रिंटिंग प्रेस, पोस्ट एवं पीएस : गड़चुक, कटाबाड़ी मस्जिद के पास, कामरूप (मेट्रो), गुवाहाटी-35 से मुद्रित एवं **गुड लक पब्लिकेशंस, हाउस नं. 30, डी. नेउग पथ, डोना प्लैनेट के नजदीक, एबीसी, जीएस रोड गुवाहाटी-5 से प्रकाशित।**
संपादक : राकेश शर्मा, मोबाइल : 94350-14771, 97070-14771 ● **कार्यकारी संपादक : डॉ. आसमां बेगम ● फोन : 0361-2960054 (संपादकीय)** e-mail : viksitbharatsamacharghy@gmail.com, **(सभी विवाद सिर्फ गुवाहाटी न्याय क्षेत्र के अधीन)**